श्रीगणेशाय नमः।

उपदेश-सागर

आध्यात्मिक विचारों का
सरल ग्रन्थ।

सब भाइयों से निवेदन है कि अनुचित शब्द की माफी
देते हुये उचित शब्दों को ग्रहण करके
लाभ उठावेंगे।

ग्रन्थकर्ता:—
चिरञ्जीलाल उर्फ राधेश्याम, कलकत्ता।

मूल्य ॥)

उपदेश सागर

श्रीरामकृष्ण स्तुति-

हे कृष्ण, कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते।
हे बैकुंठपते चराचरपते लक्ष्मी पते पाहि माम्॥
जगदीश जगदाधार प्रभु एकवार दर्शन दीजिये।
बंशी बजा वृजकी गली निज मग्न प्रमुदित कीजिये॥

वर्तमान समयकी चेतावनी।

सबको सबक उपकार का दीना श्रीकृष्ण मुरारी।
जड़ चेतन्य फलादि फूल सब पंछी चौपाये धारी॥ १॥
जाना होगा इस शरीर को अच्छी तरह विचारी।
फिर क्यों भूला तू मन मूरख जल लेजा उपकारी॥ २॥
बेटा नाती को तू है सींचत कुमारग जाय बिगारी।
तेने लक्ष्मी से लाभ न लूटा अभाग्य बस लाचारी॥ ३॥
अफसोस करन का मौका तेने सोची नाहि विचारी।
परमारथ का लाभ न लूटा तेने संपत पाई भारी॥ ४॥
धनी उपकारी मनुष्यकी करता बहुत आवरू भारी।
उपकार न कीना छिन गई संपत चतुराई कौन तुम्हारी॥ ५॥
परलोक में पविलिक में देखो कीरत किसकी भारी।
भगत जन उपकारीकी देखो कीरत देखो तुम्हारी॥ ६॥

उपकार रहित थोरे दिन मानों मोज हमारी।
पीछे कष्ट बड़ा बीतेगा बुद्धी लेव बिचारी ॥ ७ ॥
धनी रोज निरधन होते हैं नहीं क्या उपकारी।
उपकारी निरधन नहीं होते मददगार गिरधारी ॥ ८ ॥
सबही समयमें मददगार है एसा दोस्त मुरारी।
कैसा ही संकट कहीं भी गुजरे फौरन ले सम्हारी ॥ ६ ॥
कोई काम न आवे हमरे सब अपना मतलब सारी।
फिर भी साद रहा है गुम्मी कितनी मूरखता भारी ॥ १० ॥
रोवेगा पछतावेगा यदि चौपाये योनी में डारी।
मोह छोड़ कर ज्ञानी बनजा क्यों बनता है अनारी ॥ ११ ॥
अनेकों पुरुष मोह में फंसकर संपत छोड़गये थे भारी।
विचार करो कहां रही संपत नामकी भी धजा बिगारी ॥ १२ ॥
भाई का उपकार करेगा सोई सिंह धनी है।
ईश्वर जिससे खुशी रहेगा उसी की सदा बनी है ॥ १३ ॥
दैत्यों के मन कठोरता बली बड़े अहंकारी।
देवताओं के मन कोमलता दयालुता है भारी ॥ १४ ॥
सज्जन पुरुष चेत जायेगे विन्ती सुन कर सारी।
देवता बनो या दैत्य बनो मरजी रही तुम्हारी ॥ १५ ॥
धन यौवन यों जायगो जा विध उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज क्यों जग चाटे धूर ॥ १६ ॥
अरब खरब लों द्रव्य है उदय अस्त लों राज।
बिना भक्ति भगवान् की सबही नरक का साज ॥ १७ ॥
राम भरोसा छांड़ के करे भरोसा और।
सुख सम्पत की क्या कहूं नरक न पावे ठौर ॥ १८ ॥
विद्यावंत सरूप गुण सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरि भक्ति बिन यह सब ही है रोग ॥ १६ ॥

जिस जननी के पुत्र ने निज कुल हित नहिं कीन।
वृथा गर्भ नौ मास बसि जननी को दुख दीन ॥ २० ॥
गज तुरंग रथ सैन अति निस दिन जिनके द्वार।
नारायण सो अब कहां देखो आंख पसार ॥ २१ ॥

प्रार्थना।

श्रीगणेशजी महाराज बुद्धी के भंडार दया के समुद्र बिघ्ननाशक मंगल के दाता देवताओं में अग्रगण्य पूजनीय ऐसे प्रभु की अपार कृपा का सहारा मिला है इस दास को।

श्रीसरस्वतीजी महारानीजी की कृपा दयालुता भरी हृदय पर वास करने वाली माता का सहारा मिला है इस दास को।

श्रीराधारमणजी जगत पिता दया के समुद्र अपने दास को शरण देने वाले दैत्य वंश के नाश करने वाले अहंकार भंजन मुरली मनोहर गिरवरधारी ऐसे कृपालु प्रभुकी कृपाका सहारा मिला है इस दासको।

श्री सज्जन पुरुष श्री जगत पिता के दास उनकी महिमा को जानने वाले दीन वंधु दयाके रुप इस संसार रूपी समुद्रसे मोती रूपयशके प्राप्त करनेवाले सात्विकी वृत्तिके पालन करनेवाले संत महात्मा प्रभु के भक्तजनोंकी सेवा करनेवाले उपकार रूपधर्म कार्य के अमृत प्याले के अनवेषण करने वाले काम क्रोध लोभ को त्यागते हुए जगत पिता वंशी वाले के गुणों को गान करते हुये प्रसन्न रहने वाले ऐसे सज्जनों का सहारा मिला है इस दास को।

अब यह दास अपनी अल्प वुद्धि व अल्प विचारों के अनुसार अपने विचार प्रगट करता है मनरूप राजा की अनीति को देखकर अब यह दास विद्वान पुरुष अथवा कवि कलाधारी पुरुषों से क्षमा याचना करता हुआ प्रार्थना करता है कि जो इस दास की 'अज्ञानता भरी मूर्खता की त्रुटियों पर दृष्टि डालकर घृणा करेंगे और निन्दा योग्य

त्रुटियों पर निंदा भी करेंगे सोई यह दास कृतार्थ हो जायगा। क्योंकि अहंकारी पुरुष को निंदा होने से ही उसका रोग दूर होता है क्योंकि जो मनुष्य जगत पिता से विमुख होता है उसी पुरुष को यह रोग ग्रस लेता है सोई इस दास पर बड़ी भारी कृपा उन विद्वानों और कवीश्वर जनों की होगी जो निन्दा करके इस दास को इस रोग से मुक्त कर देंगे।

और सज्जन भाई जो सज्जनता का रूप धारण किये हुये हैं उन सज्जनो से भी यह दास क्षमा याचना करता हुआ यह प्रार्थना करता है कि एक वार इस अल्प बुद्धि के अल्प विचारों पर दृष्टि अवश्य करके इस दास के परिश्रम को सुफल करें क्योंकि यह दास उन महानुभाव सज्जनों से सधन्यवाद प्रार्थना करता है कि जो यह अज्ञानता भरा शरीर अथवा मूढ़ता भरा आचरण अथवा अहंकार भरा मन जो ईश्वर से विमुख रहने वाला है ऐसे निकृष्ट शरीर के ऊपर कृपा करेंगे और इस दास को इन लांछन भरे अवगुणों से रहित करेंगे क्योंकि यह अवगुण मनुष्य के समस्त महत्व को धूल में मिलाय देने वाले हैं इसलिये सज्जन संत पुरुषों से सविनय प्रार्थना यह दास करता है कि वंशी वाले के प्रेमी भक्तजन इस दासकी त्रुटियों पर ध्यान न देते हुये इस दास को इन रोगों से मुक्त कर देंगे क्योंकि जगत पिता के प्रेमीजन दीन दुखी रोगी को रोग से मुक्त कर देना ही अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं अर्थात् सज्जन पुरुष सर्वदा दूसरों के कल्याण कार्य्य को ही अपना प्रधान कृत्य समझते हैं. जैसे पारस का स्वभाव ही सोना वनाय देने का है चाहे लोहे में कितनी ही त्रुटियां क्यों न हों अर्थात् वधिक के यहां कितना ही पाप कृत्य किया हो किन्तु पारस कुछ भी अवगुण नहीं देखता है उसका स्वभाव ही सोना वनाय का है इसी तरह भक्तजन संतपुरुष अल्पज्ञ मनुष्यों की त्रुटियों पर न देकर लोहा समान महा पापी को सोना स्वरूप निष्पाप शुद्ध

बना देते हैं इसलिये सत्संग करना और संत महात्माओं का आदर सत्कार करना मनुष्य का प्रधान कर्तव्य है और इस शरीर में मन रूप राजा इस जीव का दुश्मन है यही इस मनुष्य के महत्व को नष्ट करने वाले विषयों पर चलने की प्रेरणा किया करता है और बुद्धि विचारों की सम्मति भी नहीं लेता है सो यह बुद्धि अपने अल्प विचारों से मदद लेती हुई अपने विचार प्रगट करती है अर्थात् मनुष्य को चेतावनी देती है कि जिस नगरी का राजा अन्याय पर सवार हो रहा है तो राज्य नष्ट होने के सिवाय बचने की क्या आशा है इसलिये मनुष्य को चेत करना चाहिये कि इस मन को जिस तरह बने वश में करै नहीं डूब जावेगा इस मन को वश में करना ही परम कर्तव्यों का पालन कर लेना समझो इस मन के रोकने के दो मार्ग गीता में श्रीकृष्णचन्दजी भगवान ने अर्जुन को बताये हैं कि मेरे चरणारविंद की शरण होकर प्रेम करै और जगत के कार्यों से हटावे इस मन को और दूसरा रास्ता यह भी है कि मनुष्य जो कार्य करना चाहै भला अथवा बुरा अपनी बुद्धि विचारों से सम्मति ले कर करेगा तो कभी धोखा नहीं खायगा दूसरा महान पुरुषों का सत्संग करे क्योंकि सत्संग पदार्थ इतना बड़ा महत्व प्राप्त करा देनेवाला है कि कौवासे कागभुशुण्डजी होगये त्रिकाल की जानने वाले ऋषियोंमें गणना हो गई और इसी मार्ग पर चलनेवाले महान् पुरुषों ने इस मनको वशमें किया है। और सत्संग के प्रभाव का फल श्रीगङ्गाजी के अमृत रूपी जलपान करने से जो प्राप्त होता है। इसी तरह महात्माओं का सत्संग फल देता है कितना ही दोषी अपराधी मनुष्य क्यों न हो लोहा रूप संज्ञा को सोना स्वरूप बनाय देता है सत्संग ऐसा अमूल्य पदार्थ है इसका उदाहरण भी देंगे क्योंकि समय के परिवर्तन होने के कारण मन भी निपट दोषी नहीं है इसका भी उदाहरण देंगे किन्तु सत्संग ऐसी महान औषधि है कि कैसा ही असाध्य रोगी क्यों न हो अच्छा हो जायगा और जो पुरुष सत्संग रूपी

अमृतपान कर गये और कर रहे हैं। उन पुरुषों की बुद्धि और भाग्य सराहने योग्य हैं क्योंकि मदान्धता और अंधकार मनुष्य का सत्संग ही करने से दूर होता हैं अर्थात् सत्संग अंजन स्वरूप है सत्संग के लक्षण यह हैं कि वेद शास्त्र का सुनना विद्वान् महान पुरुषों का आदर सत्कार करने में श्रद्धा भक्ति रखना सत्संग में समय व्यतीत करना अच्छे २ सद्ग्रथों का पढ़ना लेखों का पढ़ना कोई समय निकाल कर और मथन कर रई रूप बुद्धि विचारों से मक्खन रूप विवेक ग्रहण करना। क्योंकि जो पुरुष अपने बुद्धि विचारों से अपने दिमाग को लगाकर परिश्रम करता है उसके परिश्रम पर ध्यान देना मनुष्य का कर्तव्य है इसी सत्संगसे शठ साधुस्वरूप वनजाते हैं। और यह सत्संग मनुष्यको यह प्रकट वोध करा देता है कि मैं कुमार्ग पर चल रहा हूं और किसीके कहने से यह पुरुष अपनी भूल स्वीकार नहीं करता इसका एक दृष्टान्त है कि कोई जौहरी नकली हीरा सच्चे हीरा की कीमत में धोके वाजीसे किसी धनी पुरुषको वेच गया उस धनी पुरुषने अपनी अज्ञानता खरीद लिया अव उसी को सच्चा हीरा समझ कर बड़ी सावधानों के साथ संभाल कर रखता रहा एक दिन कोई जौहरी सच्चे हीरा लेकर आय पहुंचा सच्चे हीरा की कीमत सुन कर सेठ जी को ना पसंद आया और अपने हीरा को निकाल वैठे अव तो मुकाविले पर सेठ जी का हीरा कहने लगा कि मैं झूंठा हूं सेठजी को भीकहना पड़ा कि हमारा हीरा झूंटा है। इसी तरह सत्संग से मनुष्य को वड़ा भारी लाभ होता है लेकिन सत पुरुषों का मिलना ही कठिन है।

दृष्टान्त—एक नावमें वहुतसे मनुष्य वैठे थे उसमें एक महात्मा भी वैठ गये और एक वदमाश भी वैठा था किसी कारणवश वह वदमाश महात्माजीसे लड़ पड़ा और उनको मारने लग गया महात्माजीके खून भी निकलने लगा तो आकाश वाणी हुई कि इस नावको डुवा दी जाय महात्माजीसे पूछा तो महात्माने कहा कि नहीं क्या मैं ऐसा दोषी हूं

जो मेरे पीछे इतनी जान व्यर्थ जांय फिर आकाश वाणी हुई कि इस बदमाश को ही डुबा दिया जाय महात्मा ने कहा नहीं तो फिर आकाश वाणी हुई कि न्याय तो कुछ होना चाहिये तब महात्मा ने कहा कि इसको धर्मात्मा बना दिया जाय यही न्याय है सोई वह धर्मात्मा बन गया अब तो स्वभाव ही बदल गया महात्मा की बड़ी सेवा करने लगा और क्षमा मांगने लगा।

अब देखना चाहिये कि उस बदमास ने महात्मा को कितना दुख दिया जिसके ऊपर ध्यान न करते हुये उसको कैसा बना दिया अच्छा सत्संग का कितना प्रभाव है अब उस बदमासको यह बोध हुआ कि मैं बड़ी गलत रास्तापर चल रहा था दूसरी बात यह है कि बदमासने अपने स्वभाव का काम किया तो महात्मा ने अपनी प्रकृति का काम किया इस उदाहरण से यह भी निकलती है कि सत् पुरुषों से भलाई ही होती है कि जो पुरुष दोनों लोकों से पतित होने वाले कार्य करने वाला था उस मनुष्य को कैसा साधु स्वभाव का बना दिया। क्योंकि सत् पुरुष पारस समान होते हैं जैसे पारस यह भेद नहीं रखता है कि यह लोहा बधिक के यहां हिंसा करने वाला है उसका तो सोना बना देनें का काम है वह तो अपना गुण दिखाता है उसको लोहे के अवगुणों के देखने की कोई जरूरत नहीं है इसी तरह महात्मा पुरुष ही भलाई करना जानते हैं तुम्हारी बुराई उनकी भलाई से अधिक नहीं है इसी तरह सज्जन सत् पुरुष उपकार में उदार वृति रखने वाले सत्मार्ग पर चलने वाले जगत पिता के प्रेमी जन भी यह भेद नहीं रखते हैं किन्तु जिस मनुष्य के बुद्धि विचार नष्ट हो रहे हैं वह पुरुष अपनी मनुष्यता के गुणों के लाभ को क्या जाने वह मनुष्य अपने को ही भूल रहा है संसार को क्या उबारने की चेष्टा कर सकता है क्योंकि मनुष्य को बुद्धि विचार जौहरी रूप भले बुरे का ज्ञान करा देने वाले ऐसे दिये है बड़े रक्षा करने वाले जगत पिता ने सो जिस मनुष्य के नष्ट हो रहे हैं सो वह मनुष्य इस

संसार समुद्र से मोती रूप लाभ क्या उठा सक्ता है और जिस मनुष्य के यह दोनों सचेत हैं। वह पुरुष अज्ञानता रूपी अंधकार में भटक नहीं सकता है क्योंकि जिन पुरुषों के बुद्धि विचार श्रेष्ठ हैं उन पुरुषों के ख्याल और कर्तव्यों का हाल यानी सज्जनता के लक्षण दिखाने से ही प्रकट होगा असज्जनता और सज्जनता का हाल उस झूंठे हीराके मुकाबिले पर सच्चा हीरा आया तो झूंठा हीरा शरमाय गया और उसको मानने पड़ा कि मैं झूंठा हूं।

एक उदाहरण और भी देखिये अच्छे बुरे और सच्चे झूंठे का हाल मुकाबिला होने पर खुल जाता है। एक नवाब साहब अपने मनमें अपने ज़माने को बड़ा अच्छा मान रहे थे एक रोज अपने दरबार में यह प्रस्ताव प्रकट ही कर दिया कि हमारा जमाना बहुत अच्छा है न जाने बाबाजान का और अब्बाजान का कैसा होगा किसी बड़ी उम्र वाले ने देखा था वह कहने लगा कि सरकार अच्छा बुरा मैं जानता नहीं मेरी बात सुन लीजिये तीनों जमाने का हाल सुनाये देता हूं आपके बाबाजान के जमाने में एक आंधी चली और एक नौजवान स्त्री सात हजार रुपये का जेवर पहने हुये मेरी किवाड़ पकड़ कर खड़ी हो गई मैंने जेवर गहने की आहट सुनकर किवाड़ खोली और उससे कहा कि बेटी भीतर आओ सोई मैंने उसे खिलाया पिलाया सुलाया और सुबह होते ही उसको पचास रुपये का माल देकर उसके घर राजी खुशी के साथ पहुंचा दिया अब सरकार आपके अब्बाजान का जमाना आया तो मैं बहुत पछिताया कि तुमने बड़ी गलती की यदि सात हजार रुपये का जेवर उतार लेते तो अब मौज करते लेकिन अब हजूर के जमाने में तो मेरे को जिस दिन याद आ जाती है उस दिन रोता हूं कि हाय हाय तुमने कुछ नहीं किया कि सात हजार रुपये का माल और नौजवान स्त्री छोड़ दी कि अब मौज करते उसको घर में डाल लेते तुमने बड़ी भारी भूल की अब हजूर ही समझ लें कि किसका जमाना अच्छा और

किसका बुरा है मैं नहीं बता सकता हूं, सोई नवाब साहब ठंडे हो गये और सोचने लगे कि हमारा जमाना तो बहुत निकृष्ट रहा, इसी तरह सब मनुष्य अपने दिलमें अपने निन्दित कर्मों को करते हुए भी अपनी मूर्खता वश अच्छा ही मान रहे हैं इसी कारण सत्संग करने की आवश्यकता है। क्योंकि मनुष्य मात्रको बिना सत्संग के बोध नहीं हो सकता, कि मै कौन हूं और क्या कर रहा हूं अथवा क्या करना चाहिये इन्हीं सर्वकारणों से दास अपनी अल्पज्ञतानुसार इस मन की भूल को दिखाना चाहता है कि मनुष्य की यह महान भूल है और मनुष्य को जान नहीं पड़ता है कि मैं भारी भ्रममें पड़ा हूं निपट अज्ञानता को अपनाये हुऐ हूं। जब सज्जनता के लक्षण उनके सामने आयेंगे तब आप ही आंख खुल जायगी और लज्जित होना होगा क्योंकि दैत्य और देवता एक ही हैं केवल प्रकृति के अन्तर से ही देवता और दैत्य हुये हैं। जिन पुरूषों की प्रकृति दैत्यों की है उनको दैत्य ही कहा जायगा खुशामदी पुरुष उनको देवता माना करें किन्तु संसार तो जैसा होगा वैसा ही कहैगा संसार आईना रूप है।

जैसे दुर्योधन और पांडव एक ही वंश थे। पांडवों की प्रकृति सत्यता पर थी जिनका साथ श्रीकृष्ण चन्द्र आनन्द कन्दने दिया और इसी वंश का दुर्योधन जिसको अनीति रत अधर्मी जानकर वध कराया महाराज विश्वामित्रने वशिष्ट मुनि से बहुत चाहा कि मेरे से ब्रह्म ऋषी कहें लेकिन प्रकृति देखकर उन्होंने राज ऋषी ही कहा और विश्वामित्र नें वशिष्ट मुनि जी के सौ पुत्र मार डाले लेकिन कुछ परवा नहीं की जब विश्वामित्र ब्रह्म प्रकृतिके होकर आये तब कहा कि आओ ब्रह्म ऋषीजी तब विश्वामित्र ने कहा कि महाराज आपने अब कहा जबसे नहीं कहा मैंने आपके इतने पुत्र मारडाले तो इसपर वशिष्ट मुनि बोले कि असत्य वचन कैसे कहें। सोई विश्वामित्र लज्जित हो गये। जब ऐसे ऐसे ऋषी

मुनी अपने कर्तव्य पर गलती खा रहे थे सो मनुष्य तो महाघोर अज्ञान में अचेत रहने वाला भटक रहा है तब आश्चर्य क्या है यही मनुष्य को ध्यान रहे कि जिस प्रकृति का मनुष्य होगा उसको संसार में वैसा ही कहा जावेगा कहने वाले का इसमें कुछ भी अपराध नहीं है।

गोपाल— भाई साहब यह अल्प वुद्धि अपने अल्प विचारों से आठ वातों का निर्णय करना चाहती है क्योंकि मनुष्य जानता हुआ भी बड़ी गलती में पड़ कर गोता खा रहा है क्योंकि वुद्धि विचारों से काम लेना त्याग दिया है। मन जो इस शरीर रूपी गाड़ी का इञ्जन है सो उत्तम मार्ग को त्याग डुवाने वाले रास्ता पर इस मनुष्य को घुमा रहा है अगर इस मनुष्य को चेत कराने से चेत हो जायगा तो संभल कर अपने को डूवने से वचा लेगा, क्योंकि मनुष्य शस्त्र धारी होकर कायर वन गया है यह वात समझाय देना जरूरी समझा है। कारण मनुष्य दोनों लोकों के महत्व को खोते हुये हाथ खाली जा रहा है कि लक्ष्मी जी प्राप्त होते हुये भी अमृत प्याला न पानकर ज़हरका प्याला पान कर रहा है। कितनी शर्म की वात है कि इन मनुष्यों को संसार में भलाई तथा यश की आवश्यकता नहीं है कि जो श्री लक्ष्मी जी से भलाई खरीदना भूल रहे हैं और इसके वजाय वुराई खरीद रहे हैं जो डुवाने वाली है। क्या मनुष्य अपने को वचाय नहीं सकते हैं अगर ऐसे पुरुषों से कोई दूसरा पुरुष मदद चाहे इनको कुछ लायक समझ कर तो उसकी भी गलती है क्योंकि जब वह पुरुष आप ही डूवा जा रहा है तो दूसरे को क्या मदद करेगा अब आठ वातों पर ध्यान दीजिये।

१—सबसे वड़ा डाकू संसार में कौन है और किस ढंगसे लूटता है।

२—सवसे वड़ी गलती कौन मनुष्य कर रहा है उसका वर्णन।

३—सवसे वड़ा अज्ञानी मूर्ख संसार में कौन है।

४—सज्जन मनुव्य के क्या लक्षण हैं।

५—सच्चा धनी दयानतदार इस संसार में कौन हुआ जिसके महत्व का वर्णन।

६—वीर इस संसार में किसको कहा जाय।

७—सबसे बड़ा साहस वाला उपकारी कौन हुआ है।

८-सबसे बड़ा महत्वाधिकार, ईश्वर ने किस जीव को प्रदान किया है।

वर्तमान समयकी चेतावनी।

सब गुण आगर रूप उजागर कृष्ण रूप गिरधारी।
दो बातों पर ध्यान अधिक है जिसकी सुनो विस्तारी॥ १॥
जो मानुस उपकार रहित हो दूजा हो अहंकारी।
उन जीवों से रुष्ट रहत है नष्ट करन को त्यारी॥ २॥
और गुनाह के दंड देंनियां दूसर हाकिम भारी।
अहंकारी का पूरा दुश्मन खुद करता इनकारी॥ ३॥
उपकार करन को दौलत सौंपी दयालु कृष्ण मुरारी।
अहंकार के क़ाबू तुम फंस बैठे नहीं बने उपकारी॥ ४॥
धनी पुरुषों को ज्ञान चाहिये दें अज्ञान बिसारी।
मालिक जग का वंशीवाला खुद करता रच्छा भारी॥ ५॥
चेत करो वंशी वाले ने तुमको धनी बनाये भारी।
उपकारी वीर बनो लक्ष्मी से क्यों कायरता धारी॥ ६॥
उपकार तेरे से नहीं बनता है तू भारी अहंकारी।
ऐसा वैभव पाने पर भी जीती बाजी हारी॥ ७॥
ऐसा दयालु सब हालत में पार लगावे मुरारी।
ऐसे को छोड डुबाने वाला यार किया अहंकारी॥ ८॥

धनी रोज निरधन होते हैं नहीं किया उपकारी।
उपकारी निरधन नहीं होते मदद गार बनवारी ॥ ९ ॥
उपकारके बदले अपकार करत हैं मूरख मनुज अनारी।
अमृत त्याग ज़हरको पीता ऐसा भाग्य हीन लाचारी ॥ १० ॥
कैसा भी संकट कहीं भी आवै ले तत्काल उबारी।
दुख में कोई काम न आवै सम्पति मित्र हजारी ॥ ११ ॥
विपदा नाम इसे कहते हैं द्रुपद सुता पै भारी।
बिना कृष्ण संकट नहिं टारे पांच पती बल धारी ॥ १२ ॥
विपता नाम इसे कहते हैं भूकम्पों ने डारी।
सरकार पत्रलिग को देखो सहायता करते हारी ॥ १३ ॥
मालिक नाम तुमको सौंपा लक्ष्मी सहित मुरारी।
तिसपर तुम्हारी होशियारी को देखे निगाह पसारी ॥ १४ ॥
कैसा था दुर्योधन राजा बड़ा सबल अहंकारी।
जिस के संगमें भीष्म सदृश शूर सबल धनुधारी ॥ १५ ॥
अहंकारी का पूरा दुश्मन नष्ट करै वरदानी धारी।
खुद उपकार करै है उपकारी से खुश रहै भारी ॥ १६ ॥
दुर्योधन के नष्ट करन को सारथी बने मुरारी।
अर्जुन भक्त की रक्षा हित सहे सन्मुख बाण प्रहारी ॥ १७ ॥
चेताये देते हैं तुमको आगे मरजी रही तुम्हारी।
त्यार रहत हैं नष्ट करन को वंशी वाला भारी ॥ १८ ॥
सम्पति पाने से तुमरी वृत्ती बदल गई है सारी।
रकम धनी की अपनी मानी नहीं बने उपकारी ॥ १९ ॥
दूजा काम में द्रव्य लुटावें नाखुश बहुत मुरारी।
देख रहे हो तुम बहुतों को कैसी मिट्टी बिगारी ॥ २० ॥
परलोक में पत्लिग में देखो कीरति किसकी भारी।
भक्तजनों उपकारी की लख पुनि कीरत अपुन विचारी ॥ २१ ॥

सज्जन पुरुष विचार करेंगे बिनती सुनकर सारी।
अहंकारी पुरुष दुखी होंयगे निन्दा सुनकर भारी॥ २२॥
धनी हो गुणी हो चतुर हो बलकारी हो अहंकारी।
इन पुरूषों का असाध्य रोग है न हों प्रसन्न मुरारी॥ २३॥
जिनका रोग जवर है चिकित्सा नहिं करना राय हमारी।
बड़े बड़े बुद्धमान से हारे हमरी बिनती कौन विचारी॥ २४॥
दुर्योधन को यही रोग था बड़े बड़ों की हिम्मत हारी।
तेसे देख लेव इसी रोग ने सब कुटुंब की मिट्टी बिगारी॥ २५॥
तुमको नाहीं इस शरीर को ग्रस्यो, सबल अहंकारी।
इस रोग के बचने के हित श्री हरि को नाम उचारी॥ २६॥
सरकार चुनत है मेम्बरों को तुमको चुनै मुरारी।
उपकार करन को सम्पति सोंपी विश्वास किया है भारी॥ २७॥
उपकारी खुद सांवलिय जिन नृसिंह तन है धारी।
प्रहलाद भक्त की रक्षा हित खम्भ फार हिरनाकुश मारी॥ २८॥
कंसहु भारी उपद्रव कीना प्रजाको दुख दिया भारी।
फौरन मारन हेतु पधारे दीनन आप उबारी॥ २९॥
काली नाग धसा यमुना में दुख देता था भारी।
गेंद बहाने धसे यमुना में फौरन नाग नाथ डारी॥ ३०॥

१ सबसे बड़ा अहंकारी डाकू का वर्णन।

१—'राधेश्याम अहंकारी डाकू का हाल सुनिये मनुष्य की क्या दशा कर देता है यह डाकू वह है जो किसी जमाने में दैत्य राक्षस वंश के यहां मन्त्री रूपमें रहता था और इसके बल से इन वंशों में बड़े भारी नशाकी बेहोशी रहती थी बेहोशी तो सबही नशोंमें होती है क्योंकि एक छोटा सा नशा शराबका ही देखो कितनी बड़ी बेहोशी लाता है कि कुछ नहीं सूझता। यानी मोरी पनारों का स्वाद चखना यानी धर्म रहित कार्य प्रिय लगते हैं और बोल चाल में भी सबरी सहूलियत किनारा

कर जाती है फिर इसके नशा का तो वर्णन करना वेहद है क्योंकि यह वही नशा है जो उस जमाने में दुर्योधन पर सवार था जिससे जगत पिता को मनुष्य समझ कर अंड वंड बात करता था पांडव महत्व धारियों के साथ में अत्याचार करके राज्य भोगना चाहता था। यह इसी नशा की कृपा का कारण था क्योंकि यह जिस जीवधारी पर अमलदारी वखेरता है उसको अन्धा वना देता है यह उसका पहिला खास गुण हैं। और इसी के नशा की वदौलत राक्षस वंश दैत्य वंश नष्ट हो गया। और दुर्योधन भी इसी नशा की वदौलत नष्ट हुआ। क्योंकि इसका नशा अत्याचार ही करने की प्रेरणा करता है और अच्छा कार्य तो किसी भी नशा में नहीं होता इसीसे यह नशा धारी जीव वंशी वाले ने नष्ट कर दिये। क्योंकि इसका नशा वड़ा भारी निन्दनीय कार्य कराता है फिर जगत पिता उस निन्दक कार्य करने वाले जीव को इस संसार समुद्र से जल्दी नष्ट कर देता है यानी प्रजा को आराम देने वाले जीव की जगत पिता रक्षा करता है और संकट में डालने वाले जीव को जल्दी नष्ट कर देता है। अव मनुष्य मात्र इस पर विचार कर सकता है कि जव जगत पिता ने अपने आप को उपकार रूप वना रखा है और जीव मात्र को उपकार ही का पाठ दे रक्खा है तो मनुष्य उपकार श्रेणी के कर्त्तव्यों से विमुख रहे। तो उस मनुष्य की कितनी वड़ी गलती है और जगत पिता उसको क्यों न नष्ट कर देगा क्योंकि मनुष्य को सुख देने में तो धनी पुरुष अनेकों तरह की तर्क करके इस सवाल के नष्ट करने में चतुराई रखता है लेकिन यह तर्क मनुष्य की इतनी शक्ति नहीं रखती है कि श्री जगत पिता को संतोष करा सके जव जगत पिता अप्रसन्न रहा तो तुम्हारी तर्क से क्या लाभ हुआ क्योंकि जव जगत पिता की अप्रसन्नता मनुष्य ने प्राप्त की और संसार से सुख की आशा करना उस मनुष्य की भूल है क्यों कि ऐसा श्रेष्ठ कार्य अमृत सदृश लाभ देनेवाला सो आपत्तिजनक

मालूम होता है कि जिस कार्यसे जगतपिता भी खुश होता हे और जगत भी खुश होता हे और दोनों लोकों में कीर्ति रूप अमृत का लाभ प्राप्त होता है। अरे मन क्यों इस सौभाग्य को अभाग्य बना रहा है देखो प्रत्यक्ष में ही आपको बोध कराते हैं, कि कलकत्ता में एक सेठ दुलीचंद हुये हैं जिनका दोस्ताना राजा महाराजाओं से रहा चाहे जितना द्रव्य उठा लाते रहे और उनका पाट का मार्का बिलायत तक प्रसिद्ध रहा और बड़े धनी रहे और सबरी बातें लौकिक में शोभा रूप मुलम्मा सदृश चमकदार रहीं लेकिन त्रुटि रही तो सिर्फ सत्संग की ही रही कुमार्ग में ही दौड़ते रहे जिसका परिणाम इसी उम्र में क्या हुआ सो सब जानते हैं। इस मार्ग को छुड़ाने वाला सत्संग है सो बना नहीं।

और एक सेठ सूरजमल हुये इसी कलकत्ता में जिनके कर्तव्यों का भी हाल संसार में विदित है शोभामय उपकार रूप अमृत प्याला दोनों लोकों में आदर पाने वाला कार्य किया जिनके खजाने में अब भी करोड़ों की सम्पदा एकत्रित है कितना भारी अन्तर है उनका कर्तव्य अपयशी हुआ और इनका कर्तव्य यश रूपी हुआ। अरे मन जितने कार्य संसार में मुलम्मा रूप चमकदार तू देख रहा है अथवा मनुष्य से करा रहा है यह सब झूंठे हैं यह कोई भी कार्य सत्य नहीं है जिसको मेरा मेरा मनुष्य चिल्ला रहा है यह तेरा कोई भी नहीं है सिर्फ तेरा है तो एक उपकार है जो दोनों लोकों में तेरी मदद करने वाला है इसी कार्य से तू विमुख हो रहा है। भला तू कितनी बड़ी भूल कर रहा है और तुझको ध्यान भी होना चाहिये कि भूकम्प क्या दिखा रहा है—कि तू मेरा मेरा करता है तेरा कहां है। जो पुरुष संकट मय पुरुषों को मदद देने में सहायक नहीं बनते थे और उनसे घृणा करते थे सो वही दशा आज दिन हमारे उन भाइयों की दिखा दी है अब क्या उनकी दौलत ने उनके कुटुम्ब ने उनके किले स्वरूप महलायतों ने कुछ भी साथ दिया सब

त्याग कर अलहदा हो गये इन सब से मोह करना झूंठा दिखा दिया है। एक उपकार कार्य हर हालत में सहायक होता है जिसको मनुष्य ने अपनी अज्ञानतावश भार समझ रक्खा है उनको तो सत्य समझ लिया है और जो सत्य है उसको असत्य समझ कर त्याग रक्खा है वाह रे ? मन्दमतिओं अपने भाग्य को डुबाने वाले तुमको धन्य है।

धनी रोज निर्धन होते हैं नहीं बनते उपकारी।
उपकारी निर्धन नहीं होते करें मदद गिरधारी॥

अब दैत्य वंश सब नष्ट कर दिया मुर्ली मनोहर भक्तों के प्यारे ने जब इस अहंकार डाकू ने देखा कि हमारे रहने के स्थान तो सब नष्ट कर दिये अब तुम अपने रहने को स्थान तजवीज करो सो अब यह इस बात को देखने लगा कि जहां जगत पती का आदर भाव है और उनकी भक्ती है उनके यहां तो जाने में दाल गलेगी नहीं और कोई स्थान भी नहीं देगा सो जिस घर में जगत पिता से विमुख रहने वाले मनुष्य हों उस घर में तुम्हारा जाना ठीक है और उसी के यहां तुम्हारा निर्वाह होगा सोई उसी घर में डेरा जमा देता है अब इसकी चतुराई की तरफ ध्यान करो कि यह पहिले उस मनको काबू में करता है कि जो इस शरीर रूपी किले का राजा है और जब राजा को अपने माफिक कर लिया तो अब कसर ही क्या रह गई और मन भी इसके आने से खुश हुआ। क्योंकि मन तो ऐसा ही दोस्त चाहता था क्योंकि बुद्धि विचार इस मन की आजादी में विघ्न डालते थे, सो अब इन बुद्धि विचारों के दोनों शत्रु हो गये कारण यह दोनों इन दोनों की आजादी में विघ्न डालने वाले हैं अब इन दोनों ने मिलकर बुद्धि विचार का ही त्याग करा दिया और मनुष्य को गहरे नशा में पटक दिया अब मनुष्य अंधा हो गया अपना पराया उचित अनुचित कुछ भी नहीं सूझने लगा।

अब तो वही उन्मत्तता दैत्यों की सी इस मनुष्य को छा गई अब यह मनुष्य घोर अज्ञानता में पड़ गया अब इसको यह सूझ नहीं रही

कि यह कार्य हमारे हित कारक हैं या अहित कारक हैं क्योंकि इसकी पहिचान कराने वाले बुद्धि विचार तो नष्ट कर दिये जो इस शरीर में जौहरी रूप हैं उनका इन दोनों ने पहिले ही त्याग करा दिया। क्योंकि मनुष्य को नेत्र रूप रक्षा करने वाले आईना रूप दिये हैं जगदीश्वर ने इन बुद्धि विचारों को हुक्म दिया है कि यह मन कोई अनुचित कार्य मनुष्य के दुख कारक करना चाहे तो तुम फौरन रोक देना क्योंकि इस जीव ने भगवान से प्रार्थना की है कि प्रभु यह इन्द्रियां तो मजा चखेंगी और मेरे सिर पर बोझा सवार होगा यानी दूसरे जन्म में भी इनके कर्तव्य का भुगतान मेरे को देना होगा क्योंकि यह तो शरीर के साथ भस्म हो जांयगीं और प्रभु दूसरी अर्ज एक और है कि यह जो मन इस शरीर का राजा बनाया है सो यह बड़ा चंचल है तो वह इस शरीर रूपी रथ को चाहे जहां घुमावेगा उचित अनुचित कार्य में तो इसको रोकेगा कौन- तब प्रभू ने इस मन के साथ यही दो रेजीडेण्ट किये बुद्धि औरविचार- जैसे राजा लोगोंके ऊपर अंग्रेज रेजीडेण्ट रहता है कि उसकी राय बगैरह लिये कोई कार्य न करें अगर कोई राजा अपने को आजाद मानकर बिना रेजीडेण्ट की राय लिये कोई कार्य कर डालेगा तो आफत जनक हो जायगा इसी तरह यह मन अपने को आजाद मान कर कोई कार्य बुद्धि विचार की राह न लेकर कर डालेगा तो आफत जनक हो जायगा। सो इस जीवको दूसरे जन्ममें इनके कृत्यका फल भोगना पड़ेगा सो यह बुद्धि विचार इस मनको रोकनेके वास्ते नियत किये थे। यह मन इनसे नाराज़ रहता था चूंकि इसकी आजादीमें फर्क डालते थे इस लिये इस मनने और अहंकार रूपी डाकूने मिलकर इन बुद्धि विचारका त्याग करा दिया। जो इस मनुष्य के बड़े हित करनेवाले खोटे मार्गों से बचाने वाले थे, क्योंकि इनकी मौजूदगीमें यह अहंकार रूपी डाकू पुरुषोंको पात पात कर लूट नहीं सकता है; इनके होते हुये इस तरहका लुट जाना मनुष्यका असम्भव

है, लेकिन इतने होते हुये भी यह दोनों उस अज्ञानता भरे पुरुष को अपने महत्वके लुटवाने वालेको अपने सिंह रूप भाग्यको गीदड़ रूप भाग्य बनानेवाले मनुष्यको चेताय देते हैं कि इस अहंकार रूप डाकूके फन्देमें मत फंसो इसको त्यागो यह तेरेको डुबा देगा और सर्व सम्पति और महत्वको हर लेगा। अर्थात् इस लोक और परलोक दोनोसे हाथ धो बैठेगा यह डाकू ऐसा नहीं है कि जैसे मनुष्य रूपी डाकू होते हैं कि कुछ ले जाय। यह डाकू पात पात करके लुटवाय देगा जेसे दुर्योधन रावण आदिकी लूट कराई है इसी तरह तेरी लूट हो जायगी तेरेको सावधान किये देते हैं, लेकिन पुरुष ही क्या करे जब नगरीका राजा ही लुटेरोंसे मिल गया तो इस शरीर रूपी नगरी का क्या बस चले लेकिन इन दोनोंने अपना कर्तव्य पालन किया, क्योंकि मनुष्यके यह बढ़े परम स्नेही बड़े सहायक यही दो हथियार हैं। वे इस पुरुष को यह भी धिक्कार देते हैं कि रे मनुष्य तेने कुछ नहीं किया यदि जगत पितासे तेरी मुहब्बत होती तो आज दिन यह अवसर क्यों दिखाई देता। कि सर्व नष्ट करनेवाले डाकूने अपना अधिकार कर लिया अब हमारा भी बस नहीं चलता जो कि हम रक्षा कर सकें क्योंकि इस डाकूने राजाको बसमें कर लिया है सो तेरेको नशामें अंधा बना दिया हैं सो तू भी अब किसकी सुनता है अब यह डाकू जैसा इस मनको चलाता है उसीके अनुसार यह कार्य करता है कि जैसे भरत पुर महाराजकी दशा हो गई थी कि जैसे दामोदर लाल कहता था उसी तरह चलते थे यानी उपकार रहित कार्योमें इतना धन नष्ट किया कि उस जगत पिताकी दृष्टिमें यही आई कि यह क्या कर रहा है राजा होकर भी इससे उपकार नहीं बनता है खेदके साथ कहना पड़ता है कि यदि आज दिन इतना द्रव्य उपकारमें लगाया होता, तो जगत पिता कितना प्रसन्न होता और जनता कितनी प्रसन्न होती और दोनों लोकोंमें प्रतापशालीव सब राजाओंमें शिरोमणि कहलाने लगते,

सो अमृत रूपी कार्य नहीं किया, ज़हर रूपी कार्य ही किये, सोई ज़हरका जो परिणाम था सोई उसने किया। राजा बाबू सेठ साहूकार इसी अज्ञानतामें मारे गये है कि जो मुख्य कार्य मनुष्य के महत्वधारी प्रभुता के उन्नत करनेवाला अर्थात् शोभा बढ़ानेवाला है सो तो बनता नहीं और अहंकार वश उपकार रहित कार्योंमें द्रव्य नष्ट करता है तथा बड़ी उदारता दिखलाता है भला इन पुरुषोंको उच्च श्रेणीका किस तरहकहा जाना सम्भव है,भला इस मार्गपर चलनेवाले पुरुष इसको पढ़ कर क्यों न शर्मिन्दा होंगे, अगर कुछ भी समझदारीको ध्यानमें लावेंगे और विचार बुद्धिसे विचार करेंगे तो क्या फौरन अपनी कुचाल को नहीं बदलेंगे, क्या यह जानते हुए भी ज़हरका प्याला ही सेवन करते रहेंगे, अमृत पीना असम्भव समझेंगे। क्योंकि जिस मनुष्यके बुद्धि विचार नष्ट हो गये वह पुरुष जीवित नहीं है अर्थात् जिस मनुष्यने महत्व का कार्य नहीं किया, महत्वता पाते हुये भी निन्दाका ही कार्य किया और इस संसार रूपी समुद्रसे मोती रूप हासिल न करते हुये छोटा रूप कार्य करके निन्दा रूपी विष हासिल किया तो क्यों कर उनके बुद्धि विचार जीवित समझे जायंगे। अथवा वह अपने को उच्च श्रेणीमें गणना करें और कृत्य उनके निन्दित हैं, तो उनको संसार निम्न श्रेणीमें क्यों न कहेगा, क्योंकि यह ईश्वरीय नियम है; कि जो पुरुष उत्तम कुलमें जन्मा है वह पुरुष बुद्धि विचारसे काम लेगा तो कार्य उत्तम ही बनेंगे। तथा अयोग्य कार्योंमें द्रव्यको और समय-को नष्ट कर रहा है तो अवश्य ही बुद्धि विचारोंसे काम नहीं ले रहा है।

अब यह अहंकारी डाकू अपनी पूरी अमलदारी बैठा चुका और अपनी अमलदारीकी करतूत दिखाने लगा। अब इसने पिकेटिङ्ग शुरू कर दी कि जगत पिताके कानून कायदा सब तोड़ दिये क्योंकि विमुख-ता तो पहिलेसे ही थी श्री लक्ष्मी किसी कारण बस प्राप्त हो जानेसे जगत पिताकी कृपाकी आवश्यकता नहीं रही अर्थात् जितने कार्य जगत

पिताके सम्बन्ध कारक हैं जिनसे जगत पिता प्रसन्न होते हैं उनका त्याग कर दिया क्योंकि श्री लक्ष्मीजीसे मनुष्य बड़े भारी लाभ होने वाले कार्य कर सकता है। जिन सब कार्योंसे मनुष्यकी अरुचि कर दी जैसे बुखारकी मौजूदगीमें मनुष्यकी अरुचि हो जाती है चाहे अमृत ही क्यों न हो। अर्थात् जो बातें सत्मार्गके बताने वाली हैं सबसे उस पुरुषकी अरुची कर दी, अब तो खास भाई रिश्तेदार बिरादर भाई का भी आदरके बजाय निरादरी वचनों से प्रयोग करने लगा और जगत पितासे पूरा विमुख बना दिया यहांतक कि ईश्वर सम्बन्धी कार्यमें पैसा खर्च करनेमें बड़ी आफत अश्रद्धा हो गई और असार कार्योंमें बड़ी बहादुरी और उदारता से खर्चा करना सम्भव समझने लगा और निन्दनीय कार्यमें इस मनको फंसाय दिया। अर्थात् संसारमें यह मनुष्य निन्दाका पात्र बना दिया। तिसपर भी पुरुषको ग्लानि नहीं आने देता है यह डाकू अपनी अमलदारीमें मनुष्यकी प्रकृति ऐसी बना देता है कि सत्यताको पास नहीं आने देता है। अहंकारी मनुष्यके सामने दरबारी लोग हांजी हांजी कहाकरते हैं, क्योंकि अहंकारी मनुष्य नशामें बेहोश रहता है उस के बुद्धिविचार नष्ट हो जानेके कारण सत्यता रूप बात उसको प्रिय नहीं लगती और असत्य बात प्रिय लगती है। इसलिये अच्छे पुरुष दरबारमें होते हुये भी उसके सामने बोलना अहित समझते हैं, कारण कि अच्छे पुरुषोंकी ज़बानसे असत्य बात तो निकलेगी नहीं जो उसको प्रिय लगे सत्यता रूप बात बोलनेमें यह विचारते हैं कि यह बेहोसीमें है न जाने कैसी अनुचित बात कह उठे और अपना शत्रु बन जाय तो कोई आश्चर्य नहीं इसलिये बोलना उचित नहीं समझ कर चुप रहना ही उचित समझते हैं क्योंकि दुर्योधन राजाके दरबारमें इतना बड़ा अत्याचार हुआ और ऐसे बड़े भारी महारथी भीष्म सदृश उपस्थित रहे लेकिन इसी कारण नहीं बोले कि यह आपेमें नहीं हैं न जाने कैसा

अनुचित वचन बोल उठे तो बुरी बात हो जायगी। क्योंकि श्रीकृष्ण भगवानजी समझानेको आये उनको तो कुछ भय था ही नहीं, किन्तु उनसे भी असम्भव वचन बोल ही उठा था, और अपमान जनक शब्द कहकर अनिष्ट व्यवहार किया हो लेनिक उनका तो कुछ नहीं बिगड़ा अपने लिये और भी भारी कांटे पैदाकर लिये। क्योंकि अहंकारी मनुष्य असत्य बोलनेवाले पुरुष से प्रसन्न रहता है और अहंकारी पुरुषके दरबारमें खुशामदी कुटिल निर्दई झूठा हां हुजूर बोलना ऐसी प्रकृति वाले मनुष्यको ही गुजर अच्छी होती है। सत्य बोलनेवाले पुरुषका ऐसे दरबारमें अनादर होता है, लेकिन उस जगत पिताने सत्य बोलने वालों का ही पक्ष लिया है और अहंकारी असत्य बोलने वालोंकी जड़ उखाड़ दी है।

सच्ची कही विभीषण उसको रावण दिया निकारी,
प्रहलाद भक्त भी सच्ची कीनी हिरनाकुश विपता डारी ॥१॥
चन्द्रभाट भी सच्ची कहता माना नहीं अहंकारी
माहिलकी झूठी निपट कपटकी लागी बातें प्यारी ॥२॥
सच्चो बोलन वालोंकी कैसी मदद करी गिरधारी
जड़ उखाड़ दी अहंकारीकी जिनको सच्ची लगे न प्यारी ॥३॥
झूठेकी कीमत कमती होनेसे श्रद्धा हो जाय भारी
सच्चेकी कीमत भारी होनेसे श्रद्धा जाय बिसारी ॥४॥
अच्छे मानुप सच्चेको खरीदें झूठेको देय बिसारी,
सच्चेकी सङ्गत कीमत करनी जाने नहीं अनारी ॥५॥
सच्चे मालको सच्चा जौहरी कीमत देता भारी,
झूठा माल लगावै बट्टा करदे मिट्टी ख्वारी ॥ ६ ॥
शस्त्र सहित होकर घरमें चोर घुस रहा भारी,
शस्त्र कौन बुद्धि विचार भारी चोर अहंकारी ॥७॥

दैत्योंके मन कठोरता वली वड़े अहंकारी,
देवताओंके मन कोमलता दयालुता हैं भारी ॥८॥
सज्जन पुरुष चेत जाय विनती सुनकर सारी,
देवता बनो या दैत्य वनो मरजी रही तुम्हारी ॥६॥

अव इधर तो श्री लक्ष्मीजीकी नजर वदली क्योंकि इनके पतीके कानून कायदा सव इस घरसे उठ गये हैं और आदर भावके वजाय निरादर रूपी ढक्का मिल रहे हैं सत्पुरुषोंको सो पूर्ण विमुखता अपने पतीसे देखकर क्रोधित हो गई।

जैसे सतीजीने अपने पतीका निरादर देख कर सव वैभव नष्ट कर दिया—अपने पिताका, और अपना भी शरीर त्याग दिया। इसी तरह श्री लक्ष्मीजीको भी पतिका निरादर देखकर इस घरमें क्रोध आ गया सोई किनारा करने लगीं अव तो गुल खिलने लगा इधर जगत पिताने देखा कि सज्जन साधू महात्माओंको आदरके वजाय निरादरके ढक्का मिलते हैं, इस घरमें, सोई दृष्टि वदली कि यह पुरुष वड़ा कृतघ्नी है, कि इसको इतना वैभव शाली वनाया और इस पुरुषने अहंकारको स्थान दे रक्खा है, और हमारे कानून कायदा विल्कुल तोड़ दिये हैं। सोई जगत पिता भी रुष्ट हो गये वस अव इस पुरुषके सहाय करने वाला इस संसारमें कौन जन्मा है।

सती पतीके शत्रु पिता पर कैसी विपदा डारी।
इन वातोंको विचारो वचो विपतासे विनती यही हमारी॥

अगर सहायता करने वाला दुनियांमें है तो एक उपकार ही है जो जगत पिताको भी प्रसन्न करने वाला है सो किया ही नहीं अव यह पुरुष दोनों लोकोंमें मारा गया और दोनों लोकोंमें कष्ट भोगनेका अधिकारी वन गया क्योंकि अहंकारी पुरुषसे कोई धर्म कार्य वन भी जाय तो भी उसका फल उसको प्राप्त नहीं होता है क्योंकि सज्जन वृत्तिसे धरम क्या हुआ फलदायक होता है कि प्रभू आपका ही आप-

की अरपण देता हूं मेरा इसमें कुछ नहीं है ऐसे रूपसे धरम किये हुए का फल लाखों गुना होता है जैसा कि नरसीने क्या है लेकिन अब मनुष्य कितनी गलतीपर सवार है कि उसीका दिया हुआ और उसी की अरपण करनेमें संकोच करता है कि जिसके बदलेमें लाखों गुना देनेको त्यार है सो तो करता नहीं और ऐसे मार्गमें लुटाता है जहांसे कौडीका भी सहारा नहीं मिले। अब ऐसे मूरख मनको कौन समझावे अब ऐसे मोकेपर यह मार्ग कुछ मदद कर सकते हैं जो तेने क्या है अफसोस अब इस पुरुषको सहारा कहांसे मिले जब जगत पिता रुष्ट हो गया।तो सब अवलम्ब नष्ट हो गये जैसे किसी मनुष्यका रुपया जमानत तौरपर सरकारमें जमा है जिसकी व्याज आती है और नोकरी भी डेढ़ सौ रुपया महीनाकी मिलती है सोई मौजमें छनती है किसी कारण बस वह पुरुष सरकार ही की चोरीमें पकड़ा गया अर्थात् सरकारका ही अपराधी हो गया तो अब उसकी विपत्तिका क्या ठीक है कि जेल भी जाना पड़ा और जो रकम जमा थी सो भी जप्त हो गई व्याज भी गई और नोकरी भी गई अब तो महान संकटका सामना करना पड़ा।

१—अनायास विपता आती है कर्मन के अनुस्वारी।
नहीं आती विपता जिन घर धरम रूप उपकारी॥

सब जानते हैं यह तो करमनु अनुसार विपता लंका पर आई और सबरी लंका जरी परन्तु विभीषण के घर पर अग्नि देवता ने कृपा ही की क्योंकि भगवान का दास था क्यों न विपता से बचाता अब तो बाबू साहब की मोजमें ऐसा विक्षेप पड़ा कि किसी भी काम के न रहे इसी तरह जो पुरुष जगत पिता श्याम सुन्दर कृपालु से विमुख होकर उनको अप्रसन्न कर देगा उस पुरुषका अनेकों जन्म का सुख नष्ट होकर और घोर संकट की योनी का भोग भोगना पड़ेगा अब इस डाकू ने सेठजी को पात पात करके लुटवाय दिया सुख के

वजाय दुखमें डाल दिया अब कोई सूरत सुख प्राप्त होने की न रही क्योंकि इस बात को सब संसार जानता है कि इसी डाकू अहंकार की बदौलत श्रीजगतपिता मुर्लीमनोहर से दुर्योधन विमुख हुआ सो सब कुटम्ब नष्ट हो गया ओर उसी राजा दुर्योधन की लाश ठोकरोमें पड़ी आज रही है कि जिसके मांस को गिद्ध और कौवा भी भक्षण नहीं करते हैं धन्य हैरे पक्षियो तुम भी इतना विचार करते हो कि यह शरीर मुर्लीमनोहर के विमुख था इससे घृणा करो क्यों न हो श्रीजगतपिता से विमुख शरीर की ऐसे ही दुर्दशा होती है यह दुर्दशा तो भगवान के दासों से विमुख रहने वालों की है और प्रभू उस दास के विमुखी मनुष्य को अपने ही से विमुख समझ कर दंड देते हैं सो यह दास प्रार्थना करता है कि कोई भी पुरुष इस डाकू को स्थान नही देना जब सेठजी पात पात करके दोनों लोकोंमेंसे लुट गये डाकू साहब भी कूंचकर गये क्योंकि डाकू नंगाके घर रहकर अब क्या करेगा सोइ सेठजी का नशा उतर गया और अब आंख खुलीं कि अब कोई भी इस दुनियांमें अपना नहीं दीखता है तब वही बुद्धि विचार आये और तब उनसे ही काम लिया और अब सेठजी को विचार हुआ कि तुमने बड़ा बुरा किया जो हाय ऐसी अमलदारी में अमृत प्याला नहीं पिया जो हमेशा अमृत तुल्य सुखों का लाभ देने वाला था जहर का प्याला पिया उससे मृत्यु हुई और कहने लगा कि हमारी बुद्धि नष्ट हो गयी थी हमको तो अपना बिगाना भी नहीं दीखता था हमने तो किसी भाई अथवा सज्जन पुरुष का वचन से भी सत्कार नहीं किया था अब हम किसके पास मदद मागने जांय और कौन मुंह से क्या कहे हाय हमने बड़ा बुरा किया अब मन तेरे से पूछते हैं कि तैंने इस शरीर और जीव के साथ अन्याय किया सो तू भी क्या आराम पावेगा जो तैंने विचार बुद्धि को त्याग और उस डाकू अहंकार को मित्र बनाया अरे मूर्ख मन तैंने किया सो अच्छा नहीं किया कि

जगतपिता ने मेरे को ऐसा महत्वशाली बनाया) न जाने किस कारण वस सो तेंने मेरे महत्त्व को नष्ट करा दिया डाकू को मित्र बनाय कर अब न जाने यह जीव कहां कहां किस किस योनी में कैसे २ संकट भोगे गा, क्योंकि यमराज भी कहेगा कि अरे जीव तेरे ऊपर जगतपिता ने ऐसी कृपा करी थी कि- चाहे जैसी आनन्द मय गति को प्राप्त कर सक्ता था सोतेंने कुछ भी प्राप्त न करते हुये यह कमाई करी कि अहंकार की गोद बैठ गया और जगतपिता से विमुख हो गया सो इस कृतघ्नी जीव को बड़ी संकट भरी योनि में पटको ऐसी नफरत इस जीव से यमराज भी करेगा सो मन मूर्ख जब यह जीव संकट भरी योनी में दुख भोगते हुये माथा धुनेगा तब पछतावेगा कि हाय तुमने कुछ नहीं किया कि जो इस योनीमें पटके गये।

वसि कुसंग चाहत कुशल तुलसी यह अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावण वसे परोस॥
नीच संगते सुजन की मान हानि हो जाय।
लोह कुटिल के साथ से सहै अग्नि घन घाय॥

एक अहंकारी धनी का वर्णन।

२ गोपाल—धनी अपने वैभव की गुमक में जगत पिता से विमुख हो गया सोई अहंकार ने सवारी बांध दी क्यों कि यह तो एसे ही मौके की ताक में रहता है कि जैसे तिरदोस में वद परहेजी होते साथ शीत दौड़ पड़ता है सो यह अहंकार मनुष्य के लिये शीत रूप है। अब तो अहंकारी अमलदारी बैठ गई। लेकिन द्रव्य बहुत होने के कारण आपने अहंकारी रूप से धरम कार्यमें भी सम्पत्ती लगाई थी। लेकिन इस मर्ज का रोगी बच थोरा ही सकता है वह साहूकाल वीत गया और ऐसा बीता कि आटा दाल का ठिकाना नहीं रहा। अब आंख खुली अपना पराया पहचानने लगा और बहुत दुखी होकर अब जगत पिता की

शरण आना ही तो पड़ा। अब तो साहूकार अपने को बड़ा धिक्कार ने लगा। अब जगत पिता को भी यह दीख गया कि यह अहंकार रोग से मुक्त हो गया जैसे वैद्यराज देख लेते हैं कि अब इसकी नबज में बुखार का अंश नहीं रहा जब पथ देते हैं। अब साहूक ार बड़ा ही परेशान हुआ और मन से कहने लगा कि अरे मन तू इस नगरीका राजा होकर और इसके साथ दगा करता है तेंने अहंकार डाकू दोस्त बनाय कर हमको लुटवाय दिया और जो मालिक थे जिन्होंने कृपा दृष्टि से संपत्ती दी थी उनसे भी विमुख बनाय दिया तेंनें बड़ा ही धोखा दिया। इस तरह अपने मन से तरक वितरक करने लगा बड़ी ही खोटी बुद्धी इस अहंकार ने करदी थी इसने तो अंधा बना दिया कुछ नहीं सूझता था। अब हे जगत पिता आप दयालु हैं इस दास की चूक और गुनाह को माफ करो प्रभो अब इस संकट से मुक्त करो नाथ यह दास बड़े संकट में है। अब ऐसी आरजू करने लगा सोइ भगवान् प्रसन्न हो गये भला किसी साहूकार से कोई दुखी जन कितनी भी आरजू करे लेकिन उसके पत्थर सरीके हिये को कोई आरजू मुलायम कर सकती है क्योंकि भगवान् तो दया के समुद्र ठहरे उपकार करने की ही वृत्ती धारण कर रखी है दासों के बड़े रक्षक हैं। और जो मनुष्य भी दया-लुता से उपकार करता है उसको भी सब हालत में मदद पहुंचाते हैं और उसी मनुष्य से खुशी होते हैं। अब जगत पिता की कृपा का कारण क्या हुआ कि सेठ की स्त्री ने खबर दी सेठ को कि मैं एक बात सुन आई हूं कि सिंहबहादुर शहर में एक साहूकार धरम मोल लेता है तुमने बहुत धरम किये हैं सो कोई धरम ही बेचो यह मुसीबत तो सही नहीं जाती है हमारा तो इस वखत कोई भी मददगार नहीं रहा सोई साहूकार बोला कि भगवान को याद करो वही कृपा करेंगे तो कृपालु फिर वैसा ही बनाय देंगे दूसरा कोई ताकत नहीं रखता है।

(संकट में सहाय करें ऐसे रघुराई)

कोई भी संकट कहीं भी आवै ले तत्काल उबारी।
दुख में कोई काम न आवै सम्पति मित्र हजारी॥

सोई साहूकाद का अपनी मुसीबत पर हिरदा उमड़ आया और रोने लगा और जगत पिता को ही बार बार धन्यवाद करने लगा कि प्रभू आप बड़े दयालु हो इस अहंकारी निलज्ज निकृष्ट शरीर की चूक पर क्षमा करते हुए कृपा दृष्ट लाओगे आप कृपा के सागर हैं। सोई इसकी करुणा भगवान ने सुनी (सांचे मनके मीता प्रभू जी सांचे मन के मीता) अब सेठानी जी ने फिर छेड़ी, सोई साहूकार कहने लगा कि तीन दिन का रास्ता है कैसे पहुंचेगे सेठानी ने एक सेर आटा निमक डाल कर पड़ोसी के यहां से लाय दिया साहूकार लेकर चल दिया सोचने लगा कि आज तो भूके रह जाओ कल रोज किसी दरयाव के किनारे बनायेंगे परसों पहुंच जायेंगे सोई दूसरे रोज एक दरयाव के किनारे चार अंगा बनाकर तैयार करे भगवान ने उसकी जांच करने को एक कुतिया वियाई हुई पैदा करदी भूकी कोख खाली देखकर साहूकार को दया आई। एक अंगा उसको भी डाल दिया जब देखा कि इसका कुछ भला नहीं हुआ तो एक और डाल दिया लेकिन उसको तिरप्ती न देख कर चारो अंगा खिलाय दिये, और आप खाली पानी पीकर चल दिया। अब जगत पिता ने देखा कि इसके दिल मैं अब दया की अमलदारी बैठ गई सोई आप खुश हो गये। अब साहूकार उस साहूकार के यहां पहुंचा उसके यहां कांटा टंग रहा था कांटे वारे ने कहा कि सेठ जो जो धरम आपको बेचना हो सोई बोलो अब सेठ जी ने जो जो धरम कार्य करे थे सब बोल दिये लेकिन कांटा एक पैसा भर भी नहीं नवा अबतो सेठजी देख अपने धरम की हालत को कि एक पैसा भी नहीं चढ़ा मूरछा आय गई भूका भी तीन दिनका और अपने धरम कार्य की हालत देखी, कि जिसके भरोसे पर

आये थे सो यह भी धोका दे गया सोई एक दम गस आय गया। जब होस आया कांटा वाला कहने लगा कि सेठ जी यह तो धरम आपके जवाब दे गये जिनका आपको बड़ा भरोसा था यह तो कुपात्र बेटा हो गये वखत परे पर कुछ काम आये नहीं कोई छोटा मोटा धरम इस शरीर से वना होय उसको बोलो सोई सेठजी बोले कि भाई चार अंगा वनाये थे सो एक कुतिया को खवाय दिये थे मैं तीन दिन का भूका रह गया खड़ा भी नहीं भया जाता है अगर इसका कुछ पुन्न हुआ होय तो यही सही सोई कांटा एक दम झुक गया और वो साहूकार एक दम उठा चला आया, देख उस पुन्न की अगड़ता साहूकार को अपने साथ महलों में ले गया और बड़ी खातिर करने लगा सब तरह से सुख आराम देकर साहूकार कहने लगा कि आपका यह पुन्न अगड़ हुआ है हमारी भी ताकत इसके खरीदने की नहीं हैं आपको जितना द्रव्य चाहिये हुकम करो सो लदवाय दिया जाय सो जगत पिता की कृपा हो जाने पर फिर मनुष्य के क्या कमी है। साहूकार माला माल फिर कर दिया। अब तो साहूकार को यह निगाह हो गई कि तुम्हारी यह दुर्दशा इस अहंकारी ने कराई कि जो जगत पिता के दुश्मन को स्थान दिया अब उसको पास नही आने देना और खुला आर्डर दे दिया कि जो आवे और जो सहायता मांगे बड़े दयामय रूप से खातिर से उसकी पूरती करो। यह सम्पती जगत पिता की है हम तो उनके दासो में हैं जितना लुटावेंगे वो बराबर भेजेगा देखो इतना बड़ा साहूकार कुवेरनुमा जिसने कितनी मुलायमता से खातिर की धन्य है। ऐसा मालूम होता है कि यह भण्डार जगत पिता ने ही खुलवाय रखा है, कि पुरुष को निगाह हो जाय कि मैंने ऐसा धरम उपकार किया था कि एक पैसा भर भी काम न दिया और दया रूप के चार अंगा ने मालामाल कर दिया दया रूप से उपकार का करना ही संसार में सार है और सब कार्य असार है। अब तो साहूकार बड़ा प्रसन्न

रहने लगा और खूब माल लुटाने लगा और जगत पिता के स्मरण के सिवाय किसी राग में मन को नहीं जाने दे अब तो जगत पिता को खुद फिकर हो गई कि इसके यहां खजाना टूट नहीं जाय और उस साहूकार से बड़े खुशी भये जगत पिता क्योंकि साहूकार सब से छोटा दीन ईश्वर का दास बनकर रहने लगा और पहली अहंकार रूपी बुद्धी को धिक्कार देता हुआ मगन रहने लगा और जगत पिता का यश गाने लगा और अच्छी तरह समझ लिया कि दुनिया में यही दो काम मुख्य हैं कि उपकार करना और मुर्लीमनोहर का यश गान करना और उस साहूकार का यश और सज्जनता पर बलिहार जाने लगा कि देखो यह साहूकार श्री जगत पिता का कुवेर भण्डारी होते हुये इतनी बड़ी सज्जनता और नम्रता और शीलता भरा हुआ धन्य है इसी कारन यह धरम दरबार जगत पिता ने खोला है। कि मनुष्य को निगाह हो जाय कि मनुष्य अपनी मनुष्यता को बिसारता हुआ सब कार्य कर रहा है बुद्धी विचार को त्यागता हुआ अज्ञानता को काम में लाता हुआ सोई यहां आने से उसकी निगाह जरूर बदल जायगी। और अपने करतब खुद ही झूटे और असार मुलम्मा रूप समझ लेंगा, क्योंकि बुद्धी विचारो से जो मनुष्य काम करेगा जरूर शोभा रूप होयगा यानी सब कार्य के रूप हैं अगर कोई भी कार्य मनुष्य करे उसके रूप मूजिब करेगा तो शोभा रहेगी। साहूकार यह पछताया कि हमने यह धरम कार्य क्या धरम समझ कर द्रव्य बुना लगाया। और निसफल रहा क्योंकि उसका रूप नहीं बंधा धरम करने के रूप यही हैं कि साधु की बृत्ती हो नम्रता रूप हो दयालुता का अङ्ग हो भगवान् की अर्पण हो भग्ती मारग की चेष्टा हो इस रूप का धरम फलदायक होना सम्भव है। अबतो इस साहूकार को ऐसा ज्ञान हो गया कि ऐसे आनन्द से प्रसन्न चित्त रहने लगा और कोई भी मदद चाहने वाला आवे उसकी भी तबियत पर असर डाल दे

और खुश करदे। अबतो जगतपती इसकी आपही खबर रखने लगा। यह तो जगत पिता के स्मरण में मग्न रहने लगा अबतो आनन्द ही आनन्द दीखने लगा यहतो धनी का खजांची रूप बन गया मालिक को मालिक मानने लगा सच्ची मनुष्यता पर दृढ़ हो गया मनुष्य भर को यही बरतावा करना चाहिये। अब के धनी पुरुष कैसा आनन्द रूप त्यागते हुये कष्ट में पड़ रहे हैं। धनी पुरुष अगर बुद्धी विचार से काम लेंगे और संत महात्मा सज्जन पुरुषों का सतसंग करेंगे तो आनन्द से अपना जीवन वितावेंगे दुखी पुरुषों के साथ उपकार करेंगे तो परम दयालु मुरलीमनोहर को खुश कर लेंगे। क्योंकि कानून तो एक ही है कि जो मनुष्य असुर संज्ञा की वृत्ती वाले अहंकार रूपी डाकू को स्थान देगा तो उससे जगत पिता जरूर नाखुश होयगा और महत्व नष्ट कर दुखमय डाल देगा। इसी तरह जो मनुष्य चोर बदमास डाकू को अपने यहां स्थान देगा तो सरकार भी उसको कष्ट में डाल देगी।

शिवी राजा दौलत लुटाई कह लाये उपकारी।
द्रव्य खजाना थोरा होगया सामलिया से पुकारी ॥ १ ॥
फौरन सुनी बंशी वारे ने राजन मरजी कहो तुम्हारी।
कोई याचक खाली न जावे मरजी यही हमारी ॥ २ ॥
ऐसा ही होवेगा राजन रहे खजाना भारी।
उपकारी से सदा खुशी हैं सांवलिया गिरधारी ॥ ३ ॥
सुना फकत उपकार न कीना नाखुश भये मुरारी।
अहंकारी का संग उन कीना छीनी वसुधा सारी ॥ ४ ॥
धनी उपकारी मनुष्य की करता बहुत आदर भारी।
उपकार न कीना छिन गई संपत चतुराई कोन तुमारी ॥ ५ ॥
सबही समय में मददगार हैं ऐसा दोस्त मुरारी।
कैसा संकट कहीं भी गुजरे फौरन ले समारी ॥ ६ ॥

ऐसी मौज की सराहना नहीं न गिनती और शुमारी।
आफतकाल में मदद दुनिया कोई न मिले तुम्हारी ॥ ७ ॥
क्षमाशीलऔर उपकारी का मददगार बनवारी।
ऐसा काम करो जस रूपी जिस्में सांभा रहे तुम्हारी ॥ ८ ॥
देने के नाम तो कुछ नहीं देंगे फोवा भर भी भारी।
तुम्हारी गलती मालिक दूसर अभाग्य वस लावारी ॥ ९ ॥
उपकार रहित थोरे दिन मानो मोज हमारी।
पीछे कष्ट वड़ा वीतेगा बुद्धी लेव विचारी ॥ १० ॥

वड़ी गलती पर चलने वाले मनुष्य का वर्णन।

३ राधेश्याम—भाई साहब मनुष्य को भी जगत पिता ने आज़ादी नहीं बख़शी है। इस शरीर रूपी किलेका राजा मन है सो इसकी चंचल ताई के कारण इसके साथ दो रेजीडेण्ट दिये हैं कि इनके वगैर राह लिये कोई कार्य न करना और इन बुद्धी विचारों को हुकम दिया है कि अगर यह अनुचित मार्ग में जाने को त्यार होय तो फौरन रोक देना और अगर तुम्हारी न मान कर अपने को आजाद मानकर तुम्हारी विना राय लिये कोई कार्य कर डालेगा तो आफत जनक हो जायगा पुरुष पीछे वहुत पछतावेगा। मनुष्य जो कुमारग में फसता है तो इनकी राय नहीं लेता हुआ ही फसता है। क्योंकि यह कुमारग के जाने की राह कभी दे नहीं सकते हैं ईश्वर ने इनको रक्षा हित साथ दिया हैं इसलिये यह डूबने वाले कार्य में सम्मती नहीं दे सकते हैं। लेकिन तिस पर भी इन्हीं के माथे सवाल गिरता है कोई कार्य आफत जनक हो जाता है मनुष्य से तो यही कहा जाता हैं कि तुम्हारे बुद्धी विचार कहां खोय गये तुमने विचार से काम नही लिया ऐसी नामोसी के हकदार यही तो वनाये जाते हैं क्योंकि इस मनुष्य के रक्षक हैं। यह दोनों इसलिये इन्हीं के माथे आती है मनुष्य यह कहता है कि स्त्री

को आजाद नहीं रहना चाहिये स्त्री आजाद होने से बिगड़ जाती है। सो पुरुष भी आजाद रहने से बिगड़ जाता है। सवाल यह है कि पुरुष को इस संसार समुद्र से मोती रूप भलाई प्यारी होय तो इन बुद्धी विचारों की राय लेकर सब कार्य करने चाहिये। मन की प्रेरणा को मान लेना इनकी बगैर राय लिये आफत में फस जाना होगा। संसार रूपी समुद्र से मोती रूप भलाई की उम्मेद करना असम्भव हो जायगा। अगर मनुष्य अपने बुद्धी विचारों से हर कार्य में काम लेता रहेगा तो आफत जनक कार्य से बचा रहेगा। क्योंकि जिस धनी के रक्षक सावधान हैं तो चोर और डाकू ताकत नहीं रखते हैं कि घर में आय जाय। इसी तरह पुरुष की बुद्धी विचार सावधान हैं तो अहंकारी डाकू ताकत नहीं रखता है कि घुस आवे और पुरुष को पात पात करके लुटवाय दे, इनको कमजोर कर देने ही से पात पात करके मनुष्य लुट जाता है। लेकिन अफसोस है तो यही है कि मनुष्य इतने होते हुये भी अपनी गलती नहीं मानता है कि मैंने जगत पिता के हुकम की पाबन्दी नहीं की जिससे यह दशा हुई। जो जगत पिता जगत का मालिक है जिसकी कानून कायदा से मनुष्य विमुख हो रहा है। जगत पिता को कानून कायदा के खिलाफ चलने में कुछ भी दहसत नहीं कर रहा है। अफसोस जगत पिता के साथ भी मनुष्य चालाकी खरच करता है। जगत पिता ने पुरुष को इतना अधिकार दिया कि अपना खास सरूप बनाया यानी अपना नाम दिया मालिक और लक्ष्मी दी अब कसर क्या रखी विचार करने की बात है। जैसे कोई धनी कहीं दुकान खोलेगा और मुनीम को अधिकार देगा तो इतना ही देगा कि कुछ और देगा नाम देगा और द्रव्य देगा अब वह मुनीम काम तुम्हारे मूजिब करेगा तब तो तुम उसको जितना दरकार होगा रुपया बराबर देवोगे अगर मुनीम आपके मूजिब नहीं करेगा तो तुम

उससे ना खुश हो जावोगे कि खुशी रहोगे। अब सवाल यह है कि जगत का मालिक वंशी वाला है और सम्पती का भी वही मालिक है किसी ने कहा है कि पूंजी साहूकार की जस कोई करले तो इन खयालों से वंशी वाला ही मालिक समझना होगा और उस मालिक के मूजिब आप नहीं करोगे तो आपसे नाखुश होगा कि खुश होगा, और अगर नाखुश होगा तो आपका भला बुरा कर सकता है कि नहीं अगर कर सकता है तो उसके खिलाफ क्यों करते हो कि उसके हुकम की पावन्दी न करते हुये अपने मनका काम डूबने वाला करते हो और अपने को दुख में गेरते हो क्या वो नाराज होकर अपना अधिकार दिया हुआ वापिस नहीं ले सकता है और तुम देख भी रहे हो कि वरावर छीन रहा है तिस पर भी तुम निगाह करके नहीं समालते हो अपने को और क्या उसके हुकम मूजिब चलने वाले मनुष्यों ने महत्व थोरा पाया है यानी उसकी खुशी का काम करने वाले दुनियां में जस रूपी झंडा क्या नहीं गाढ़ गये है और राजा वनाय देना और रंक वनाय देना ऐसी ताकत क्या कोई दूसरा भी रखता है इसका उदाहरण भी देंगे।

लेकिन जो पुरुष जगत पिता की कृपा से किसी भी तरह का महत्व हासिल करते हुए अगर उसके कानून कायदा पर चलने की परवाह न करते हुये आराम पाने की उम्मेद करे तो उसकी भूल है अगर किसी प्रकार का सुख ही मान रखा है तो उसका सुख मान लेना झूठा है तुलसी दास जी ने कहा है।

क्या मुख ले हंस बोलिये तुलसी दीजे रोय।
जन्म अमोलक आपना चले अकारथ खोय॥ १॥

अब सवाल यह है कि जिस मनुष्य को जगत पिता ने इतना महत्व दिया है कि जगत पिता को खुश करना उसका फर्ज है। और आसानी से खुश कर सकता है। और खुशी के खिलाफ कार्य करे तो

कितना वड़ा गुनाह का हकदार हो रहा है क्योंकि जानते हुये कोई पुरुष गवरमेंट की कानून के खिलाफ काम करने पर कितना गुनागार मान कर दंड का भागी वनाया जाता है इसी तरह मनुष्य मात्र को उसकी कानून कायदा के माफिक चलना जरूरी है। लेकिन धनी पुरुष तथा राजा महाराजा जो वनाये हैं उनको चेत करना चाहिये कि आपने पहले भी कोई अच्छा धरम रूपी उपकार कार्य किया है। जिसकी वदौलत आपको यह महत्व हासिल हुआ है। क्योंकि ऐसा महत्व धारी शरीर विना उपकार कार्य अमृत तुल्य करे वगैर हासिल नहीं होता है और अव आप अमृत तुल्य कार्य हासिल न करोगे तो आइन्दा को यह महत्व धारी योनी से महरुम हो जावोगे। न जाने किस कष्ट भरी-योनी में जन्म दिया जाय। इसको विचार कर धनी मनुष्यों को उपकार कार्य में द्रव्य लुटाना जरूरी है। और कार्य में दौलत कमती खर्चा करना चाहिये। जिसमें वंशी वाला नाखुश न हो और अगाड़ी दूसरे जन्म में आफत जनक योनी न मिले। क्योंकि यह धनी पुरुषों के ख्याल करने की वात है। कि लक्ष्मी वान होकर आपही कांच रुपी असत्यता भरा कार्य करोगे तो निरधन मनुष्य हीरा रुप असली महत्व धारी कार्य कहां से कर सकता है यह वात सिद्धान्त के खिलाफ है कि आपको प्रभू ने मौका दिया है। लक्ष्मी से लाभ उठाने का और समय भी दिया है जगत पिता के स्मरण करने का अव आप समय में भी अमृतरुपी कार्य न करते हुये वट्टे खाते में खोय दें। और श्री लक्ष्मी जी को भी असार कार्य में खर्चा करके सार कार्य में खर्चा करने से विमुख रहे तो तुम्हारी कितनी वड़ी गलती हैगी। और कितने वड़े अफसोस करने की वात हैगी। और धनी होकर आप हाथ खाली चले जावोगे तो तुमको धनी वनने का क्या लाभ हुआ। अगर जैसा ख्याल आज कल के धनी महत्व धारी पुरुषों का है।

उपकार रहित थोरे दिन मानो मौज हमारी।
पीछे कष्ट बड़ा बीतेगा बुद्धी लेव विचारी॥

ऐसा ही ख्याल सबका हो जाय तो कोई अच्छे मार्ग को हासिल करने की चेष्टा क्यों करेगा और उस जगतपती के खुश करने के सत मार्ग कार्य की कठिनाई क्यों उठावेगा नहीं मनुष्य का फर्ज है कि उस जगत पिता के कानून कायदा अनुसार कार्य करना ही सुख रुपी भण्डार हासिल कर लेना है।

क्योंकि जैसे धनी पुरुष सरकार के सम्बधी कार्य करने में बड़ी उदारता खर्च करता है सरकारसे पद हासिल करने में अथवा सरकार के सम्बन्धो अहलकारों से वसीला हासिल करने में बड़े बड़े तरीके के साथ इसी तरह जगत पिता के सम्बधी सत पुरुषों से भी मुहब्बत करना आप का फरज है यह सबसे पहले लाजिमी बात है कि जैसे सरकारी मुलाजिमों से गुनाह की माफी होते रहने के ख्याल से उनका आदर सत्कार करते हो इसी तरह उस जगतपती से गुनाह की माफी दिलाने वाले सज्जन सत पुरुष भक्त जनों का आदर सत्कार सत संग करना मनुष्य का जरुरी फर्ज है। कि जिन सत पुरुषों को उसके प्रसन्न करने के सुरुप का हाल मालूम है। लेकिन बाजबाज धनी पुरुष ने तो यह समझ लिया है कि हमने अपनी बड़ी चालाकी और झूंठ फरेब से द्रव्य पैदा किया है लेकिन अगर आपके गुनाह की बदौलत आप की सम्पत छिन गई तो क्या करोगे कोई रोक सकता है।

आपने समझ लीना है बड़ी बुद्धी तेज हमारी।
इसी से यह धन पैदा कीना ताकत लड़ाई भारी॥ १॥
हमारी दौलत मकानात सब मोटर गाड़ी भारी।
गहना जेवर सभी हमारे नित नई पैदा भारी॥ २॥
अच्छा खाना अच्छा पहरना नित नई मौज हमारी।
लोकिक कामों में खर्चें दौलत जैसा होय विचारी॥ ३॥

व्यौपार हमारा बड़ी चतुराई का देखें निगाह पसारी।
रच्छा करने को सिपाही प्यादे ताले तिजूरी भारी ॥ ४ ॥
नहीं बना उपकार जिनों से नंगा कर दिये निकारी।
अच्छा खाना पहरने वालों की मिट्टी दई बिगारी ॥ ५ ॥
इसी तरह से धनी तुम्हारा नाखुश बहुत मुरारी।
उपकार रहित खर्चा में दौलत तुमने बहुत बिगारी ॥ ६ ॥
तुमको भी समझ जाना चाहिये मरजी रही तुम्हारी।
इसी गुनाह में नष्ट कर दिये नहीं बना उपकारी ॥ ७ ॥
कल्ह रोज राजा बजते थे आज गद्दी गये उतारी।
बिघर्थ कार्य में दौलत खर्ची नहीं बना उपकारी ॥ ८ ॥
गुनाह फकत उपकार न कीना नाखुश भये मुरारी।
अहंकारी का संग उन कीना छीनी वसुधा सारी ॥ ९ ॥
इतने धनी बने हुये थे चतुर बड़े व्यौहारी।
मान तान जयर उन्हों की गिनती और शुमारी ॥ १० ॥
कल्ह रोज हुंडी बिकती थी बड़े बड़े परचा भारी।
आज रोज कोई नहीं पूछे कहां गई अक्कल तुम्हारी ॥ ११ ॥
गहना जेवरात सब लीना जायदाद छीनी सारी।
मोटर गाड़ी घोड़ा लीना ताले तिजूरी भारी ॥ १२ ॥
दरमानी तनख्वाह को रोमें मिले न एक पैसारी।
उपकार रहित द्रव्य जो खर्चा डोल रही गिरफतारी ॥ १३ ॥
उपकार करने वाले मनुष्य को धन की छुट्टी भारी।
उपकार रहित मौज कैसी है मानें सोई अनारी ॥ १४ ॥
नहीं मौज इसको कहते हैं जो कर रहे इच्छाचारी।
मौज नहीं कष्ट भोगोगे इसमें नाखुश बहुत मुरारी ॥ १५ ॥
खूनी हाथी आजाद होने पर दुखदाई होजाय भारी।
इसी तरह है मन की हालत रोक न सके अनारी ॥ १६ ॥

दुखदाई ऐसा हो जावे फिर नहिं कोई सके सम्हारी।
ईश्वरी अंकुश विचारी पुरुषों को माने नहीं अहंकारी ॥ १७ ॥
ईश्वरी अंकुश गुणी पुरुषों को चतुर धनी को भारी।
अच्छा हाथी मानें अंकुश अच्छों में गिनती होय तुम्हारी ॥ १८ ॥
मानुष योनी सब से बढ़कर इसका दरजा ऊंचा भारी।
इस योनी को देवता तरसै सुमरन बनता कृष्णमुरारी ॥ १९ ॥
अपनी उमर में छिनाय बैठे अधिकार सम्पदा सारी।
यही दशा तुम्हारी होगी जो नहीं बनोगे उपकारी ॥ २० ॥
इसी गलती ने वो भी मारे जैसी हालत तुम्हारी।
समालो तुम जल्दी अपने को चतुराई रहे तुम्हारी ॥ २१ ॥
इसी गलती में खोय गये संपत जो गिने जाते थे भारी।
दूसर तुझ को भी जाना होगा छोड़ सम्पदा सारी ॥ २२ ॥
रोवेगा पछतावेगा अगर चौपाये योनी में डारी।
मोह छोड़ कर ज्ञानी बनजा क्यों बनता है अनारी ॥ २३ ॥
बेटा नाती को तू सींचत है कुमारग दें बिगारी।
तेने लक्ष्मी से लाभ न लूटा अभाग्य वस,लाचारी ॥ २४ ॥
ईंट गारे में दौलत महल में खिरकी छेकी भारी।
इसी महल में फिर आने की ऐसी तूने विचारी ॥ २५ ॥
कोई काम न आवे हमरे सब अपना मतलब सारी।
फिर तू भूला क्यों मन मूरख जस लेजा उपकारी ॥ २६ ॥
उपकार के वास्ते दौलत सौंपी दयालु कृष्णमुरारी।
अहंकार के काबू तुम फस बैठे,नहीं किया उपकारी ॥ २७ ॥
उपकार कार्य उनसे बनता है जिनकी तपस्या भारी।
संपत छिनाई नंगा हो बैठे तुम कुछ भी नहीं विचारी ॥ २८ ॥
अपने बच्चों के ब्याह शादी में लुटवाओ पचास हजारी।
गरीब भाई को जवाब देते हो गुञ्जाइश नाहिं हमारी ॥ २९ ॥

पचास रुपया की आमद थी अब आमद पांच हजारी ।
उपकार कार्य में जवाब देत हैं गुञ्जाइश नाहिं हमारी ॥ ३० ॥
जिनका रोग जबरहे बड़े-बड़े महारथी हिम्मत हारी ।
भारी दवा भी काम न देगी हमारी विन्ती कौन विचारी ॥ ३१ ॥
तुमको नाही इस शरीर को गिरला जबर अहंकारी ।
जबर रोग की जबर दवाहे इसके दुसमन से देर हमारी ॥ ३२ ॥
तुमको नाही इस सरीर को दवा करी तय्यारी ।
मर्ज बुरा है जाना चाहिये नहीं होगी मिट्टी खुवारी ॥ ३३ ॥
पहले मानुस गुण ऐसे थे खरबूजा सुन्दर मीठा भारी ।
अब बहुत मनुष्यों में गुण नाही प्रकृती फूंट विकारी ॥ ३४ ॥

बिना सतसंग मनुष्य पशू संग्या में रहता है उसको यह निगाह नहीं हो सकती है कि मालिक बंशी बारा है हम इस संपती से जस पैदा करने के हकदार हैं और यही उस परम पिता का आडर है और जिस पुरुष ने जस रूपी अमृत हासिल न करते हुये अपजस रूपी जहर हला हल हासिल क्या है इस संपती की बदौलत उनकी भी दशा तुम देख रहे हो इसी में समझ लेना चाहिये ।
कि यह मन बेईमान सौभाग्य को निरभाग्य बना रहा है सो इस दासकी यही विनय है कि अपने खयालों पर विचार करते हुये सज्जन मनुष्य अपने को अवश्य समाल लेंगे क्योंकि धनी पुरुषों से यह विनय है कि आप विचार कर देखो कि जिस पुरुष ने जगत पती की खुशी के कार्य किये हैं तो उस पुरुष को जगत पिता ने कैसे महत्व दिये हैं कि कभी डिग नहीं सकते हैं। क्योंकि जगत पिता पलमें बिगाड़ समाल करने की ताकत रखता है इसलिये महत्व धारियों को एक दो बार दिन रातमें उस जगतपिता को धन्यवाद देकर आरजू के साथ माफी मागते हुये विनय करना तो जरूर चाहिये। इतने में ही कुशलता रहेगी और ज्यादा न बने तो

उदाहरण,—किसी दो आदमी में आपस में वाद बिवाद हो पड़ा एक तो कहे कि खुदा की बाह बड़ी बिलंद है राई का परवत करदे परवत का राई करदे दूसरा पुरुष कहने लगा कि हम तुम्हारी नहीं मानते हैं कि अब हमको खुदाने गरीब बनाया है तो क्या अब बादशाह बना सकता है। और जिसको बादशाह बनाया है तो अब हमारे सरीका गरीब बना सकता है। जब दोनों में यह झगड़ा हुआ तो कहने लगे कि चलो बादशाह के पास चलो सोई दोनों बादशाह के यहां गये और दोनों पुरूषों ने अपना २ बयान सुनाया कि हजूर मैं तो यह कहता हूं कि खुदा की बाह बड़ी बुलंद है राई से परवत करदे परवत से राई करदे दूसरा बोला कि हजूर मैं यह कहता हूं कि खुदा ने मेरे को गरीब बनाया है सो अब हजूर सरीका बादशाह बना सकता हैं और हजूरको बादशाह बनाया है तो क्या अब खुदा मेरा सा गरीब हजूर को बना सकता है अब बादशाह के दिल में यही बात आई कि यही ठीक है कि अब खुदा हमको क्या इस सरीका गरीब थोरा ही बना सकता है। सोई इतना इनसाफ विचारते ही पेट में दर्द हो गया और हुकुम दिया कि हम पाखाने से आकर हुकुम सुनामेंगे। सोई आप पाखाना गये खिदमतगार लोटा लेकर धर आया सोई पाखाने में एक ऐसा जानवर आया कि बादशाह ने उसपर जब कर हाथ फेरा उसपर शरीर को लाद दिया सोई जानवर बादशाह को लेकर उड़ गया और एक जंगल में जाय उतारा अब तो बादशाह की आख खुली कि कोई खुदा हैं और किसी शहर में पहुंचे सो भूके प्यासे एक हलवाई की दुकान पर तखत पड़ा था सोई उसपर जाय कर बैठ गये अबतो हलवाई की बिक्री बड़े जोर की होने लगी सोई हलवाई ने सोची कि आज बड़ी बिक्री जोर हो रही है सो शाम को होश आया जब तखत पर मिया साहब को देख कर

विचारने लगा कि यह मियासाहब कोई करामाती आदमी है हलवाई मिया साहब से कहने लगा कि मियाजी आप भूके बैठे हो सोई मियांजी बोले कि भाई जरूर भूके हैं सोई हलवाईने खाने को दिया और दुकान बंद करी जब मियाजी को हलवाई ने एक चटाई दी और कहा कि इसी तखत पर आराम करना अब रातमें कहां जाचोगे और दुकान की हुसियारी रखना अब बादशाह रात को सोचने लगा कि खुदा तेरी तो माया अपार है अब मेरे ऊपर रहम कर मेरी गलती को माफ कर अब इसी तरह दिना आठ होगये और हलवाईको खूब फायदा हो रहा बड़ी बिक्री जोर की हो रही बाजार में बड़ी मातवरी बढ़ गई हलवाई बड़ा ही खुश हुआ मियाजी से लेकिन सोने को वही एक चटाई दी जाय एक रोज उस शहर के बादशाह के आदमी बाजार से मिठाई लेने को निकले उस बादशाह के यहां लड़की की शादी थी सोई किसी हलवाईने दोसो मन देनी करी किसीने डेढ़सो मन किसीने ढाई सौ मन जब इस हलवाई के पास आये तो इसने दो हजार मन मिठाई लिखाई अब बादशाहको जायकर कहा कि सरकार सब बजारमें तीन हजार मन मिठाई हुई हैं बादशाह ने कहा कि बस ठीक है। अब मिया साहब हलवाई से पूछने लगे कि यह क्या मामला है कि जो यह मिठाई खरीदने आये हैं सोई हलवाई कहने लगा कि मिया साहब हमारा बादशाह पर उपकारी है इसके यहां लड़की की शादी है सो घरमें कारखाना नहीं चढाता है कि जिसमें हमलोगों का फायदा हो हमलोगों से मिठाई लेता है सो मिया जी बोले कि हमारी भी एक बात मानोगे हलवाई ने कहा कि जरूर उस तारीख तक तुमसे जितनी मिठाई बन सके ताकत भर बनाय कर मकानों में लगा देव हलवाई मान गया और मिठाई तय्यारकी जब विवाह की तारीख आई जितनी मिठाई जिस हलवाई की लैनी करी थी सोई तुलाय ले गये जब तीसरे रोज बादशाहके यहां मिठाई निवट गई और आदमी दौड़ाये

बाजार की मिठाई लावो सोई आदमी आये इस हलवाई से कहा कि मिठाई है। हलवाई बोला, है, कितनी हैं जितनी तुमको चाहिये सोई हलवाई की मिठाई सब तुल गयी और बादशाह की मांग पूरी हो गई अब बरात विदा हो गई। जब हिसाव देनेको हलवाई बुलाये गये और बादशाह ने हुकुम खजांची को दिया कि उस हलवाई का हिसाव नहीं देना जिसकी मिठाई दूसरे रोज आई है। और सब को चुकाय देना सोई उस हलवाई को खजांची ने मने कर दिया हलवाई बादशाह पर पहुंचा कि सरकार मेरा क्या कसूर हुआ जो मेरा हिसाव नहीं मिलता है। सरकार कहने लगे कि तुमने इतनी मिठाई किसके हुकुम से बनाई हलवाई कहने लगा कि सरकार एक मियांजी हैं उनके कहने से बनाई है सरकार वोले कि मियांजी को लावो कौन मियांजो हैं। हलवाई भाग कर आया और मियाजी से कहने लगा कि आपको बादशाह ने बुलाया है और सब हाल कह सुनाया मिया जी ने कहा कि चलो हम चलते हैं सोई पहुंचे बादशाह ने बराबर बैठने को जगह दी और पूछा कि मिठाई बनाने के वास्ते इस हलवाई को आपने हुकुम दिया था, मियांजी कहने लगे जी सरकार, मियाजी बोले कि इस हलवाई से हमने पूछा था कि यह क्या मामला हैं इसने कहा कि हमारी सरकार के यहां लड़की की शादी है सो हमारी सरकार का ख्याल हमलोगोंको फायदा पहुंचाने पर रहता है इसीलिये घरमें कारखाना नहीं चढ़ाते है। हमलोगों से मिठाई लेते हैं, इसपर मैंने सोचाकि बादशाह लोगों के यहां बरात तो वेतादाद आती है और मिठाई सरकार ने तादाद की खरीदी है सो तुम मिठाई बनाय डालो नहीं तो सरकार की वात में वट्टा आय गया तो फिर तुम्हारी क्या तारीफ रही सोई सरकार खुश होकर वोले कि इस हलवाई का हिसाव दे देंव, और पाच सौ रुपया इनाम और देव, और आप हमारे पास रहेंगे सोई मियाजीके पेटमें दर्द होगया और मियासाहबने

पायखाने जानेकी इच्छा प्रगटकी सोई खिद्मत गारको हुकुम हुवा और लोटा पायखानेमें धर आया अव मियाजी पायखाने में जो जायकर बैठे सोई वही जानवर आय गया और वादशाहने हाथ फेरा सोई लेकर उड़ गया और उसी पायखाने में जाय उतारा जहांसे ले गया था अव तो वादशाह निकले तो खिद्मतगार खड़ा है कहने लगे तू गया नहीं हमको वहुत वखत होगया खिद्मतगार कहने लगा सरकार अभी तो गये हैं। इधर मुकद्दमा वारे खड़े हैं उनको कहा तुम गये नहीं हमको वहुत अरसा हुआ सोई कहने लगे कि सरकार अभी तो गये हैं। सोई वादशाह ने सोचा कि खुदा हम वड़ी गलती पर थे जो तेरी शान की करामात को भूल रहे थे अव तैंने निगाह कराय दी अव हमारी आंख खुल गई जो वात फैसला में विचारी थी वो वात गलत विचारी थी यह जो कहता है सो सही है कि खुदा की कुदरतमें वड़ा प्रभाव है अगर जो मनुष्य अपनी अज्ञानता वस अपनी मूर्खता में अंधा होकर उसकी शान को भूल रहा है वह वड़ी गलती पर हैं देखो हमारी नेक देर में क्या दशा कर दी और वादशाह का मियाजी वनाय दिया चटाई विछाने को दुकान की चोकसी करने वाला किस दरजाका वनाय दिया सो मनुष्य को चाहिये कि उसकी वंदना हर हालत में करता रहे और इस वसुधा को अपनी मूढ़ता वस अपनी नहीं समझे अव तो वादशाह ने दूसरा ही रूप धारण कर लिया खूव खेरात करनी शुरू कर दी और अपने को वहुत छोटा मानने लगा सच है जव तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आता है जव तक वो अपने ही को वड़ा मानता रहता हैं सो मनुष्य के अनारी मन तू अव भी होशमें नहीं आया है और मनुष्य को परमार्थ की रास्ता पर नहीं लाता है देख रहा है कि भूकम्प क्या निगाह कराय रहा है कि यहां तेरा कौन है तेरा कुटुम्व कहां है तेरा किले सरुप मकान कहां है तेरा वेटा संपती कहां है तू जाचकों से नफरत मानकर वुरा भला कह कर असमर्थता दिखा

कर पीछा छुड़ानेमें समर्थ वन रहा था सो आज दिन खुद सहाय मागने योग्य वन रहा है। ऐसे खयालवाले मनुष्य वड़ी गलती पर सवार हैं कि सुख होते हुये दुःखमें गिरनेवाला गढा वनाय रहे हैं सो हमारे भाई लोगोंने कष्टमें पड़ कर सव संसारको निगाह भी कराय दी है कि ईश्वरसे विमुख रहनेवाले मनुष्य चेतो और उसका स्मरण नित प्रति क्या करो और उसके नामपर जरूर उपकार करनेमें समर्थ वनो ऐसे करनेवाले मनुष्यके यहां ऐसी विपत्ती नहीं आवेगी यह संसार भरको निगाह है कि लंकामें अग्नी लगी तो विभीषण का ही घर वच गया कारण भगवानका दास था।

४ गोपाल—भाई साहव वहुत मनुष्योंकी प्रकृति ऐसी होती है कि अपना अच्छा खाना अच्छा पहरना मस्त रहना और अपना ही मोटर गाड़ीमें घूमना और परमार्थ की तरफ विलकुल गोर नहीं करना अपने लड़का लड़कियों का खास काम समझ कर कितना ही द्रव्य खर्चा करना लेकिन कोई भाई किसी कार्यमें सेठजी से कुछ मददकी उम्मेद करे तो भाईको मदद देने की छदामकी भी शक्ति नहीं दिखाना वल्कि सेठजी के चूहे भी सलाह नहीं देते हैं कि उपकार करना भी मनुष्यका पहला कर्तव्य है वल्कि आदर सरूपका जवाव भी नहीं देना निरादर रूपी ढक्का ही मिलेगा यानी ऐसे प्रकृत वाले मनुष्य से कोई किसी वखत में कुछ मदद मिलनेकी उम्मेद करेतो उस मनुष्य की भी निरभाग्यता हैं क्योंकि सेठजीतो आपही अपने सौभाग्यको निरभाग्य वनानेकी कोशिश कर रहे हैं अव कोई मनुष्य इसके यह मानी निकाले कि सेठजी स्वार्थी हैं सो गलत हैं क्योंकि इसतरह स्वार्थसिद्ध नहीं होता है वल्कि अज्ञानता के कुठारा से अपने स्वार्थ को काट रहे हैं क्योंकि स्वार्थसिद्ध तो दूसरों के साथ उपकार करने से ही होता है अगर कोई पुरुष यह सवाल पैदा करे कि उपकार रहित पुरुष होगा सो जगत पिता से भी विमुख होगा सो सही हैं तो उसको लक्ष्मी हासिल क्यों

होती है इसका जवाब यह है कि किसी कारण वस यानी उस पुरुषका कोई पहिला कारण ऐसा है कि जिसके कारणवस लक्ष्मीजी को आना हो जरूरी है लेकिन चली भी जल्दी जायगी ऐसे मनुष्योंको सतसंग नहीं मिला ऐसा कहा है—

सुतदारा और लक्ष्मी पापी हू के होय,
संतमिलन और हर भजन तुलसी दुर्लभ होय।

चेतामनी जोमनुष्य असार हित परसवार है।

भाई आये चलो सेठजी अवतो वरात हमारी ।
के से चलवे फुरसत नाही काम बड़ा विस्तारी ॥ १ ॥
किसी तरह से राजी हो गये होने लगी तय्यारी ।
चार दिना की मुसाफिरी की फिकर भई है जारी ॥ २ ॥
घरके प्यारे जन स्त्री सब बालक रहे निहारी ।
कैसे रहेंगे घरके बालक दूसर स्त्री प्यारी ॥ ३ ॥
सेठजी बोले रुपया धर दो दोसौ बड़े करारी ।
जो चाहें सो खरीद लेंगे रहेगी जी इखत्यारी ॥ ४ ॥
चार दिना की मुसाफरी के यह ढंग देखो भारी ।
बड़ी मुसाफरी सिर पर ठाढी कुछ भी नहीं विचारी ॥ ५ ॥
जिसका कुछ भी इन्तजाम नहि अकल कहा तुम्हारी ।
बेटा नाती जायदाद सब यही के हैं सुखकारी ॥ ६ ॥
ले जानेकी रस्ता सोचो नहीं पछतावोगे भारी ।
अपनी त्यारी जल्दी करलेव छोड़ मुहब्बत सारी ॥ ७ ॥
इसी तरह में बीत गई है सारी उमर तुम्हारी ।
अब कुछ करते बने न तुमसे भजो श्रीराधा कृष्ण मुरारी ॥ ८ ॥
इन घर वालों की देखी तुमने कैसी निगाह बिगारी ।
ले जाव ले जाव जल्दी लेजाव अर्थी हो जाय भारी ॥ ९ ॥

तू ने क्या समझ रखा है और कोई बात विचारी।
सब जानत है भूल नहीं है अभाग्य वश लाचारी ॥ १० ॥
ऐसी मोज की सराहना नहीं जिन ऐसी वृत्ती धारी।
आफत कालमें मदद देंनियां कोई न मिले तुम्हारी ॥ ११ ॥
छमा शील से उपकारी का मदद गार बैन बारी।
ऐसा काम करो जस रूपी जिसमें शोभा रहे तुम्हारी ॥ १२ ॥
देंने के नाम तो कुछ नहीं देंगे फोआ भर भी भारी।
तुम्हारी गलती मालिक दूसर अभाग्य वस लाचारी ॥ १३ ॥
सरकार चुनत है मैम्बरों को तुमको चुने मुरारी।
उपकार करन को संपत सौंपी विश्वास क्या है भारी ॥ १४ ॥

५ राधेश्याम—भाई साहब एक बड़े शोक मय गलती मनुष्यों से बन रहो है जिसपर निघा करिये कि जिस मनुष्य को किसी पहले जन्मके कारण वस लक्ष्मी हासिल हो गयी और उससे भी अमृत रूपी लाभ हासिल कोई भी नहीं हुआ तो लक्ष्मी हासिल होना और न होना एकसा रहा क्योंकि लक्ष्मीजी की जरूरत पुरुष इसी लिये करता है। कि अच्छे २ उपकार सम्बन्धी कार्य करेंगे अब लक्ष्मी हासिल होजाने पर वह अपने अभाग्य वश कुछ करे नहीं और मोहमें डूबकर बेटा नाती के खातिर कुमार्गमें बहाय देनेको छोड़कर आप खाली हाथों रमाने हो जायतो संसार भी अपनी नजरमें उस मनुष्यको बेवकूफ कहेगा कि देखो संसार में दुरभाग्य पुरुष यही कहलाते हैं कि लक्ष्मी भी पाई ओर अच्छे मार्ग का लाभ नहीं हासिल किया उलटे खोटे मार्ग में बहानेको छोड़ गया और उधर धरमराय की पेशीमें पहुंचेगा तो धर्म राय भी धिक्कारी देगा कि अरे मूर्ख तेरे को जगतपिता ने मनुष्य समझ कर लक्ष्मी दी थी कि मनुष्यता के साथ उपकार रूपी कार्य में लक्ष्मी को लुठाय कर कुछ लाभ हासिल करेगा सो तैने उपकार रूपी कार्य पशू के बराबर भी नहीं किया इतनी बेईमानी पर सवार हो गया कि

श्रीमुरली मनोहर के नाम पर नोछावर तौर पर भी कुछ नहीं लुटाया तेरे बराबर बेईमान मूर्ख अज्ञानी संसार में कौन होगा और झूंट फरेब की गठरी बांध लाया है। सो अब तेरे को संकट भरी योनी में पटका जायगा अब सवाल यह है कि अमृत समुद्र से निकला और दैत्यों के काबू में रहा लेकिन उसका भोग तो देवताओं ने ही भोगा उनके काबू में रहने से क्या लाभ हुआ इसी तरह ऐसा पुरुष अपने काबू में समझ कर लक्ष्मी को अपने को धनी मान ले तो उसका नतीजा क्या जब कोई उत्तम लाभ ही नहीं हासिल किया क्योंकि बेंक के खजांची लोगों के काबू में करोड़ों की संपदा रहती है, लेकिन वो इस दौलतको अपने किसी अच्छे या बुरे कार्य में थोरा हो लाय सकते हैं। इसी तरह तुम भी खजांची रुप रहे दुरभाग्य मनुष्य को लक्ष्मी हासिल हो जाय तो क्या? भोग तो अच्छे अमृत तुल्य वही मनुष्य भोगेगा जो सज्जनता रुप धारण किये होवेगा जो संसार से कीर्त्ति की गठरी बांध कर ले जानेकी इच्छा रखता होगा जिसके आचरण शुद्ध होयेंगे सतसंग संत महात्मा जनों का कर्त्ता होयगा दयालुता धारण किये होगा इसी तरह एक साहूकार का मामला हालही में गुजरा है कि उस मनुष्य ने अनेकों रुपसे अपनी उम्र में दो चार लाख की संपती पैदा की थी आखीर वख्त में एक सज्जन ने सलाह दी कि कुछ साथ ले जाने का विचार है सो साफ जुवाब दे दिया कि हमसे यह लाभ नहीं उठाया जायगा और रीते हाथ चल बसे पिछारी बेटा लोगोंने दो बरसमें ही सब संपत्ति खोय दी एक वेश्या का जरूर कुछ उपकार हुआ बाकी इसका नतीजा सब सज्जन निकाल लें कि जो आपने अनेक रुपसे दौलतको पैदा किया है और ऐसे मार्ग में खर्चा करने को छोड़ कर खाली हाथ धरम रायके सामने चले जायगे तो जिसका सुख दुख कौन भोगेगा सवाल यह है कि यह उत्तम कार्य तो उत्तम शरीर से और उत्तम मार्ग से पैदा की हुई लक्ष्मी से ही बनेगा लक्ष्मी पानेसे ही क्या होता है।

विना भाग्य मिलता नहीं भली वस्तु कौ योग।
दाख पके जब वागमें होय काग मुख रोग ॥ १ ॥
वृथा जियो सौ बरस लों कियो न पर उपकार।
धरती में धन धर मरे केवल कुयश पसार॥ २ ॥
तनसे सेवा कीजिये मनसे भलो विचार ।
धनसे या संसार में करिये पर उपकार ॥ ३ ॥
सिंह धनी उसको ही कहते कीरत लूटे भारी।
गीदड़ धनी बनाये प्रभुने कारण वस लाचारी ॥ ४ ॥
जिस मनुष्य की निन्दा लक्ष्मी होनेपर भी भारी ।
उस मनुष्य को चतुर बताने वाला निपट अनारी ॥ ५ ॥

अफसोस बड़ी धिक्कारी का मोका है कि जो भाई मोहवश द्रव्य को छोड़ कर जाय रहे हैं तो क्या उनके विचार यही है कि हम निगरानी रखेंगे और धन छोड़ जायगे तो कभी भी आवेंगे तो आराम भोगेंगे नहीं आपकी गलती नहीं है ऐसे धन से सौभाग्यता नहीं हासिल हो सकती है आपका द्रव्य इस अमृत रुपी कार्य का लाभ हासल नहीं कर सकता है यह द्रव्य आपका सुपात्र वेटा नहीं है जो कि मोर धज राजा के वेटा ने अपने पिता की कीरत संसार में विदित करदी और जगत पिताको प्रसन्न कर लिया लेकिन अतिथि के उपकार से राजाको विमुख नहीं होने दिया

६ गोपाल—भाई साहव एक बड़ी शोक मय गलती का बर्णन करना पड़ता है यह गलती ऊपर वाले लेख से भी बढ़ कर है अफसोस के साथ लिखना पड़ता है कि मनुष्य के बुद्धी विचारों को लोभ वश अज्ञानने ढक दिया है जो मनुष्य बुद्धिमान और चतुरोमें गिने जाते हैं।

सवाल यह है कि जितने धरम खाते के कार्य माने जाते है संसार में उसके हक का रूपया हमारे प्रेमी भाई लोभ वस त्याग नहीं करते है जहां तक वनती है वहां तक नही त्यागने का रूप विचारते हैं सो

इन खयालों के मनुष्यों की वृत्ती को देख सुनकर इस दासको बड़ा शोक होता है कि ईश्वर उनके खयाल और वृत्ती को ठीक करे कि जिसमें वे पुरुष इस द्रव्य से मोह न करें यानी ऐसे द्रव्य के त्यागी ही बने रहें क्योंकि हमारी देखी हुई बाते हैं कि छोटी २ रकम रामलीला गऊशाला की धनी लोगों से नहीं पूरी दी गई लोभ वस उन मनुष्यो को इन रकमों ने तवाह कर दिया इसलिये हम अपने प्यारे भाईयोंको चेतावनीकी तौर पर चेताते हैं कि इस पैसा का त्यागनाहीं संभव है मनुष्य मात्र को यह पैसा दुखदाई हो जायगा अगर त्याग नहीं किया तो और बहुत मनुष्यों ने ऐसा भी किया है कि धरम खाते के रुपया से धरमशाला वगैरह बनवाय दिया है और उसकी जायदाद से जो आमद हुई उसको अपना समझ कर परहेज नहीं किया है बल्कि उसीके सहारेसे जीवन विताने का विचार कर लिया है तिसपर भी यह हुआ है कि वो भी चली गई उमर भर का भी साथ नहीं दिया है और यह भी देख रहे हैं कि धनी साहुकार के अधिकार में कोई द्रव्य छोड़ गया धरमशाला बनाय देनेकी खातिर और वो मनुष्य चल बसा है अब सेठजी ने अपने नाम से धरमशाला जारी कर दी हैं उन विचारोंका नाम भी नहो जिनका द्रव्य लगा अब बनी हुई साहित्री में यह बेईमानी की है, इसका नतीजा यह निकला है कि सिवाय धर्मशालाके और सब महत्व किनारा कर गया इसी तरह प्रेमी भाईयोंके ख्याल हो रहे हैं कि यह धरमखातेकी रकम तो अपनी ही है, सो इस ख्यालको वदल दें। अगर अपनी संतान परिवारको सुख देना चाहो तो इस पैसासे कोई भी पुरुष मुहब्बत नहीं करना, क्योंकि यह कारियल विषधर सांप है फौरन आपकी सम्पत्तीको भी डस जायगा। इस कार्यमें तसल्ली करना असम्भव है। फौरन त्याग दो यानी उपकार रूपमें लुटाय दो। हमको तो आपके प्रसन्न रहनेकी जरूरत हैं कि वो कार्य नहीं होना चाहिये कि प्रसन्नतामें अप्रसन्नता आजाय। हमतो शुभचिन्तक रूपमें चेताते हैं।

मुलम्मा है न ठहरेगा, हविश है जरके खोने की।

जब धरमादाकी रकम जुड़ते जुड़ते भारी होगई, और अब धनीसे कैसे बिसारी जाय, अजी छुरी ही सही लेकिन है तो सोनेकी ओर। जो अहंकारी मनुष्य हुआ तो, वो तो, उपकार धर्मको करना जानता ही नहीं। इस बातको सब जानते ही हैं कि अहंकारीका तो जगत पिता दुश्मन है औरऊपरसे धरमादाकी रकम हलाहल सरीकी लिये बैठा है। फिर क्या वह मनुष्य बच सकता है जब पीछे पछताया करो फिर गई बात क्या हाथ आती है। इससे यह दास विनयपूर्वक प्रार्थना करता है कि यह धर्मका पैसा विष भरा सर्प है। इससे बचे रहो।

(३)—सबसे बड़े मूर्ख अज्ञानी अनेक जन्म कष्ट में पड़ने वालोंका वर्णन।

७ राधे०—भाई साहब स्टेशन पर एक बाबूसाहब कहीं जानेके लिये टिकट फर्स्ट क्लासकी खरीद रहे थे, और उनकी प्रेमका भी साथमें थी। सो एक ब्राह्मण भेषमें पुरुष आया दो रुपयाका सवाल किया। उस धनी पुरुषसे वो पुरुष मामूली नहीं था उसके अन्दर कुछ रहस्य छिपा हुआ सा मालूम पड़ता था। लेकिन बाबूसाहब साफ नट गये, बल्कि रंडी साहिबाने भी कही, उस ब्राह्मणको दो रुपया दे देने को लेकिन बाबू साहबने ऐसे नाजायज कार्यमें रुपया फेंक देना मुनासिब नहीं समझा क्योंकि ऐसे कार्यको ऊंचे दर्जाके बाबू लोग नाजायजही समझते हैं। बस इतना जवाब पाते ही वो ब्राह्मण अन्तर ध्यान हो गया। अब बाबू साहबका पाप जाग गया, क्योंकि मनुष्य उपकार रूपी कार्य पर हड़ताल फेरता है उस पुरुषके महत्वका अन्त हो जाता है। इतनेमें टिकट कलक्टर ने ३१।≠) बाबू साहबसे मांगे दो टिकट के सो; फौरन पाकिटसे निकाल कर दाखिल कर दिये और गाड़ीमें बैठ कर चले गये। अब सवाल यह है कि अगर बाबू साहब का ख्याल

किफायत पर था तो तीसरे दर्जे का टिकट क्यों नहीं ले लिया। दो टिकटोंमें बहुत किफायत हो जाती।

८ गोपाल—भाई साहब आप भूलते हो, इसमें किफायत का सवाल नहीं है। जिस मनुष्यको कष्ट में पड़नेका वख्त आने वाला होता हैं उस पुरुषको बुद्धी विपरीत हो जाती हैं उपकाररुपी धर्मकार्य अमृत सरीकेसे रुची हट जाती है। जैसे सब जानते हैं कि अमृत उत्तम चीज है लेकिन बुखार वाले से कहो तो वो नहीं मंजूर करेगा। उसको रुची नहीं कहेगी कि लाओ। इसी तरह जिसके दिन खोटे आने वाले हैं, उसको यह कार्य प्यारा नहीं लगता है ऐसे कार्य से अरुची हो जाती है। दूसरी बात यह है कि तुमने कहा कि थर्ड क्लास की टिकट क्यों नहीं ले ली सो इसका जवाब यह है कि धनी पुरुषोंसे थर्ड क्लासकी बैठककी तकलीफ गवारा नहीं हो सकती है। और यह भी कारण है कि थर्ड क्लासकी टिकट लेने से रण्डी साहिबा की निगाह से और हमजोलियों की निगाहसे गिर जानेका भी ख्याल करना पड़ता है। क्या निर्धन पुरुष धनी पुरुषकी बुद्धी की बराबरी कर सकता है।

९ राधेश्याम—भाई साहब धनी पुरुषोंमें किसी किसी की वृत्तीतो बिल्कुल गलत रास्ता पर दौड़ रही है। भला बकराकी मां कब तक ख़ैर मनायेगी। जब इनकी वृत्ती खुदही इन के भाग्य को निर्भाग्य बनाना चाहती है, तो अब दूसरा कोई क्या बचा सकता है। बड़े अफसोस की बात है कि उपकार कार्यमें दो रुपया की गुंजाइस नहीं हुई जो विपत्तिमें सहाय करने वाला कार्य है। अरे मन मूर्ख जब तेरे को [illegible] है कि थर्ड क्लास में तकलीफ, और फर्स्ट क्लास में आराम तब इस कार्यमें से ज्ञान और मनुष्यता तैने क्यों खोय दी (है किजो कार्य दुखाय देनेवाला है तिसमें २१।≈) फौरन देना, और जो कार्य सहाय करने वाला है उसमें दो रुपया भी नहीं देना। अफशोस

अपनेही विचारोंसे अपने भाग्यको निर्भाग्य बना रहा है। भला इस शोकीनी वृत्ती ने बड़े बड़े राजा नवाब बड़े बड़े धनी पुरुषोंको धूल में मिला दिया है। जिस पर तू सवार हो रहा है और जिस वक्त उन पुरुषोंको विपत्तिने घेरा है तो कोई साथी नहीं हुआ है। जिस विपत्त रूपी कार्य से तू लिपट रहा है, और कुयश कमा रहा है, जिन पुरुषोंने उपकार रूपी धर्म कार्य अमृत तुल्य त्याग रखा है, भला उपकार कार्य से विमुख रहनेवाला मनुष्य कहीं धनी रहा है और ऐसे पुरुष धनी भी होय तो निर्धन समान है। क्योंकि ऐसा उत्तम कार्य न करने वाले पुरुष को निर्भाग्य समझना चाहिये।

अब उन बाबू साहब की विवस्था सुनो—उन्होने तमाश बीनी में ही अपना सब द्रव्य गमाय दिया। और यह कहावत वाली दशा हो गई कि 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का' सो बाबू साहब घर भी जाने लायक न रहे, और न किसी के पास बैठने ही लायक रहे। बिल्कुल तबाहीने ग्रस लिये, सो ऐसा तो होना ही था क्योंकि हला-हल विषको पान करेगा और अमृत से नफरत करेगा तो फिर मौतका क्या दोष है। अब तो बाबूसाहबका सब कुटुम्ब भी संकटमें पड़ गया। यानी संसार को यह दिखा दिया कि हमारे बड़ोंने यह धन धर्मरहित पैदा किया था, जिसका यह नतीजा हुआ कि सब परिवार को कष्ट में पड़ना पड़ा। सो ऐसा संकट देने वाला द्रव्य महा मूर्ख अज्ञानियों को भी पैदा नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा द्रव्य कुपात्र बेटा है। कुपात्र बेटा कुयश कमाने वाला दुर्योधन के ऐसा एक सौ पुत्र भी ईश्वर नहीं दे। इसी तरह कष्ट देने वाला धर्म रहित द्रव्य करोड़ों का भी ईश्वर नहीं दे। क्योंकि द्रव्य और बेटाको सुख मिलने की उम्मीद से ही सींचते हैं। और अगर दुःख पहुंचाने वाला कुपात्र हुआ तो ऐसे को सींचना क्या जरूरी है। यानी द्रव्य धर्मरहित कमाई कर घर जावो अपने बेटा नाती के वास्ते, मोहवश तो ऐसे

द्रव्यकी वदौलत वेटा नाती भी सुख नहीं पा सकते हैं, और जैसा धन है वैसी वृत्तीका कार्य करते हुये और अपयश लूटते हुये अपने वड़ोंके नाम को भी विगाड़ देंगे उस धन से यह नतीजा होयगा। अव सवाल यह है कि उन वावू साहव का कुटुम्व तो सव कष्ट में पड़ही गया लेकिन स्त्री देवी उमर भर के लिये संकट में पड़ गयी। क्योंकि वावू साहवका घर भी आना आपत्ती रुप होगया। अव वावू साहव यह चाहने लगे कि अव हम इसी के यहां अपना काला मुंह छिपाये पड़े रहें सो अव रंडी साहिवा भी नफरत करने लगी वल्कि यहां तक कहने लगी कि मैं आपका मुंह भी देखना नहीं चाहती हूं। इसमें यह भी कारण है कि इनके यहां रहने से उसकी दुकानदारी में फरक पड़ता है सो वही हुआ कि—एक सेठ साहव आ पहुंचे, और देख उनका हाल ठिठक गये, और यह शब्द रंडी के जवान से कहे हुये भी सुन लिये और वड़े अफसोस के साथ वोले कि क्यों साहव जव इनके पास माल था तव तो आप वड़ी मुहब्वत करती थीं हर जगह साथ ही साथ घूमा करती थीं, और अव माल निपट जाने से आप ऐसी नफरत करती हो कि मुंह भी देखना नहीं चाहती हो। ऐसा आपके साथ क्या गुनाह वन गया है। सो रंडी साहिवा इन सेठ साहिव सेवोली औरकहने लगीकि सेठ साहिव हमारी आपकी एक ही स्थिती है सोई सेठ जो उछल पड़े और कहनेलगे कि यह क्यों सोई रंडी वोली कि यह यों कि सेठ जी हम लोग लक्ष्मी जीके भक्त हैं सो लक्ष्मी जी के भक्त आप लोग भी हैं क्यों कि आप लोग सवेरे महादेव वावा से प्रार्थना करते हो कि भेज ऐसा गाहक कि आंख का अन्धा हो गांठ का पूरा हो और हमभी अपने गाने में भरी सभा में कहती हैं कि दिल एक ही से लागा हजारों खड़े हम भी जाहिर कर देती हैं कि हमारी तो मुहव्वत रुपया से है अव और सुनिये कि हम लोग धर्म करम को कुछ नहीं समझती हैं और रुपया हासिल

करती हैं सो आप लोग भी धर्म कर्म को कुछ चीज नही समझते हुये रुपया पैदा करते हो सेठ जो बोले कि कैसे रंडी बोली कि ऐसे कि हम लोग आपकी दुकान पर पहुंची रुपया दो हजार का कपड़ा गोटा सलमा वगैरह वगैरह हमको लेना है पिसवाज के वास्ते सोई जैसे हम खुश हो जातीं हैं कि सेठ जी आये अब जिस सूरत से बनेगी धर्म देकर द्रव्यका लाभ जरूर हासिल करेंगी इसीतरह आपभी हमारे पहुचने पर खुश हो जाते हो चाहे हमारा द्रव्य धर्म रहित कमाईका है लेकिन आप परवाह नहीं करोगे और दूसरे हमने आपसे यह भी कह दिया है कि सेठजी हम कुछ नहीं जानते है आप अपने धरमसे ठीक नफा लगाय लेना फिर क्या है आप तो जैसा गाहक सवेरे चाहते हैं जैसा ही मिल गया अब आप कसर नहीं छोड़ोगे जहांतक बनेगीपूरा मुनाफा करोगे अब धर्म कर्म की कुछ परवाह नहीं करोगे कहो सेठ जी सही है कि नहीं अब और सुनियेकि आप तो दुकान पर बैठ कर खुश होंगे कि महादेव बाबा ने खूब गाहक भेजा आंख का अंधा और गांठका पूरा और हम घर पर आय कर खुश होंयगे कि अगर सेठ जी ऐसी ही कमाई धर्म हार धन इकट्ठा करते रहे तो किसी बेटा नाती के द्वारा यह कमाई फिर हम लोगोंके यहां जरूर आवेगी अब सेठ जी यहबात सही है कि गलत सो कहो अब और लीजिये कि सेठ जी आप लोग अपनी दुकानपर हम लोगों को वे धर्मी बनाया करते हो हम घर पर बैठ कर आप लोगोंको वेधरमी बनाया करते हैं क्यों कि सेठजो धर्म रुपी कमाई आपकी हमारे यहां नहीं आसक्ती है धर्म की कमाई का द्रव्य जिस मनुष्य का होता है उससे सेठ जी खुदा भी राजी रहता है और एसे द्रव्य से सहायता पाई हुई सन्तान भी धर्म की रक्षा करने वाली होती है कुपात्रता कुमारगमें जाने वाली कष्ट में डालने वाली उपकारसे विमुख रहने वाली सन्तान कभी नहीं होयगी और पीढी दर पीढी महत्वताका भोग

मोजूद रहेगा और संसार में यश रूपी कार्य बनतेही रहेंगे सेठ जी एक कवी ने कहा है

उत्तम विद्या लीजिये यदपि नीचपै होय ।
परो अपावन ठौर में कंचन तजे न कोइ ॥

सो सेठ जी कोई भी पुरुष कैसा भी निकृष्ट द्रव्य वाला क्यों नहो हमतो उससे प्राप्त करने को तय्यार रहतीं है हमारे परहेज का काम नहीं है इसीतरह सेठ जी आपके यहां भी कोई निकृष्ट वृती का पैदा किया हुआ द्रव्य लेकर आवेगा तो आप भी उससे बचोगे नहीं जरूर हासिल करने की कोशिश करोगे ।

कहिये सेठ जी एक स्थिती रही कि नहीं क्यों कि द्रव्य हासिल कर नेमें धर्म कोनीत की इनसाफ की हम जरूरत नहीं रखतीं हैं सो सेठजी आप भी इनके खिलाफ हो क्यों कि यह द्रव्य आपका सबूत देरहा है कि जो यह बाबूजी संसार में काला मुह करे बैठे हैं उसी कमाई वे धर्मी की बदौलत सब कुटुम्ब परिवार भी कष्ट भोग रहा है कि जैसा वे धर्मी से कमाया था दूसरों के दिल को दुखाते हुये जैसा ही दुखमें डालकर रवाना हो गया । भला सेठ जी ऐसा द्रव्य अच्छे मार्ग में जासकता है सो सेठ जी ऐसाही धर्म रहित कमाई का नतीजा आखीर हमारा भी खोटा निकलेगा, और सेठजी हमारी आपकी वृति का हक बराबरी का किसी कवीने भी दिया है

और जाति हैं पीरकी तीन जाति बेपीर
बिना गरज लरजें नहीं वैश्या वैश्य अहीर ॥

अब आपका सवाल है कि इन बाबू साहिब से नफरत क्यों करतीं हो सो सेठ साहिब हम पहले ही कह चुकीं हैं कि हम लोग पैसा की यार हैं सो सेठ जी आप भी पैसा के यार हो क्योंकि आपको जिससे लाभ होने की उम्मेद होती है उसकी बड़ी खातिर करते हो जिससे उम्मेद पैसा प्राप्त होने की नहीं होती है बात उसको नहीं

पूछोगे और एक आप का सवाल यह है कि अब आप मुंह क्यों नहीं देखना चाहतीं हो सो इसका जवाब यह है कि अव्वल तो इन्होंने मेरा धर्म लेकर पैसा दिया हैं धर्म संसारमें मनुष्यके पास एक अमोल चीज है जैसे सर्प के पास मणी, मणी बिना सर्प किसी योग्य नहीं रहता है। इसी तरह मनुष्य योनी का धर्म नष्ट हो गया तो वो भी संसारमें किसी योग्य नहीं रहता है लेकिन यह हमारी मनुष्य योनी की बड़ी जबर गलती है और अन्याय है कि हम पैसा के लोभमें धर्म ऐसी कीमती वस्तू की परवाह न करते हुए खोय दें।

क्योंकि सेठजी तुम्हारे लोगोंमें ऐसे भी पुरुष हैं कि जिन्होंने लोभ वस इस धर्म को नहीं जाने दिया है इसकी रक्षा की है और ऐसे भी हैं कि जैसा मैंने बयान किया है जिन्होने पैसा ही ईश्वर समझ कर धर्म कर्म की परवाह नहीं करी हैं सो अब इन बाबू साहब की मुहब्बत करने की गुंजाइस कहां रही कि ऐसा अमोल वस्तू हमारा लेकर अपना पैसा दिया है और दूसरी बात यहहै कि इन बाबू साहब ने अपनी स्त्री के साथ बड़ा भारी गुनाह कष्ट में डालने वाला किया है कि जिस स्त्री ने बाबू साहिबसे सात वचन शुरू में लीने हैं और तिन वचनों का उलंघन करते हुये कष्ट में उमर भर के लिये डाल दिया है अफसोस मनुष्य की बे इनसाफी बे धर्मी बे रहमी पर और धन्य है उन कुलांगना स्त्रीरूप देवीयोंकी गंभीरता भरे साहस को कि उन वचनों का जिकर भी कभी नहीं लाना और अपने वचन दिये हुये का पालन करना धन्य है अब आप देखिये कि बाबू साहिब कितने बड़े गुनाह के हकदार होगये हैं। इससे बढ़ कर गुनाह संसारमें दूसरा नहीं होगा इस गुनाह से मनुष्य अनेकों जन्म उरण नहीं होवेगा दूसरा गुनाह अपने सब घर बार को कष्ट में डाल दिया और संसार भरमें अपना काला मुह दिखाने लायक नहीं रक्खा और

खुदा से भी विमुख रहा अब इतने बड़े गुनाह करने वाले मनुष्य का मुंह देखने से नफरत क्यों न हो ।
अब सेठ जी आपके जचो कि नहीं सोई सेठ जी बोले कि आपका कहना सब ठीक है क्यों कि हमारे बहुत भाई ऐसी वृती के हैं कि जैसा आपने बयान किया है लेकिन हमको बड़ा भारी उपदेश हुआ आपकी बातोंसे अब हमको इजाजत देदो हमको तो बहुत ही बड़ा लाभ हासिल हुआ उमर भर के लिये सुधर गये । ऐसा उपदेश हुआ सोई रंडी साहिबा बोली कि सेठ जी आपके बड़ों का द्रव्य अच्छी धरम रूपी कमाई का था, जो आपको खुदा की महरबानी से ऐसा उपदेश मिल गया । और आपको बचाय लिया । सोई सेठ जी वहां से चल दिये और अपने बड़ों की कमाई धरम रूपी को धन्यवाद करने लगे कि अगर बेधरमी की कमाई होती तो आज जरूर फस जाते और उम्र भर के लिये कष्टमें पड़ जाते । जिन्दगी का मजा ही सब खोय बैठते । और जगत पिता की भी बड़ी कृपा इस दास पर हुई कि जो डूबने से उबार लिया यानी दुर्दशा की रास्ता से बचाय दिया । जन्मान जन्म के कष्ट से उबार लिया प्रभो आप की जय हो । और मैं कसम खाय कर प्रतिज्ञा करता हूं कि धरम रहित कमाई से हर वक्त बचूंगा । क्योंकि नतीजा अच्छे का अच्छा और खोटे का खोटा अभी हमारे बड़ों की कमाई में बेधरमी कमाई शामिल होती तो हम कभी भी नहीं बच सकते थे अच्छी धरम रूप कमाई ही के कारण से आज दिन बड़े संकट भरे संग्राम से बच आये और हमारी प्राण प्यारी स्त्री भी नेक नियत वाली का भी कोई ऐसा नियम वृत जबर रहा कि जिसने उसको और हमको दोनों को डूबने से बचाय लिया अब तो सेठ जी बड़े प्रेम में मग्न अपनी स्त्री से बड़े प्यार मुहब्बत के साथ रहने लगे धन्य है धरम की कमाई की खूबी को कि कभी खोटे मार्ग में जाय नहीं सकी है और जस रूपी अमृत संसार में

ऐसी धरम रूपी कमाई वाला ही हासिल कर सकता है। धरम रहित धन से जस रूपी अमृत का आनन्द मनुष्य को इस संसार में हासिल हो नहीं सकता है। ऐसे द्रव्य को धिक्कार है कि जिससे अमृत रूपी उपकार हासिल न हो।

(४) सज्जन मनुष्य के क्या लक्षण हैं जिसका वर्णन।

१ सज्जन पुरुष वह है, संसार में जो कि अपने को न मानता हुआ जगत पिता श्री कृष्णचन्द्र का दास बन कर रहता हो।

२ सज्जन संत महात्माओं की आज्ञानुसार अपनी वृत्ती को काम में लाता हो और उन्ही की सेवा टहल करके उनके सत्संग करने की इच्छा रखता हो।

३ काम क्रोध मद लोभ के काबू में न फंसा हो।

४ भलाई करना इस संसार में अपना मुख्य कर्तव्य समझता हो दुखी के दुख को न सहन करके उसके दुख दूर करने की चेष्टा रखता हो।

५ श्री जगत पिता के नियमों का पालन करता हो।

६ श्री लक्ष्मीजी पायकर उनसे सत्यता भरे कार्य अमृत मय हासिल करने की चेष्टा रखता हो और बड़ी प्रसन्नता से करता हो अपने धरम की रक्षा करने में वीर हो।

७ उपकार रहित कार्यों में दौलत बिगाड़ना असम्भव समझता हो जो कि अहंकारी अज्ञानी बिगाड़ते हैं।

८ जिनको अहंकार सपने में भी न हो।

संसार में ऐसे लक्षणधारी महान पुरुष सज्जन कहने योग्य हैं और इन लक्षणों को हासिल कर लेना द्रव्यवानको सुलभ है क्योंकि श्री लक्ष्मीजी श्री कामधेनु समान हैं जो चाहो सोई हासिल कर सकते हो। लेकिन मनुष्य अपने अभाग्यवश असज्जनता के लक्षण हासिल

कर रहा है। और संसार से निरभाग्य वन कर जा रहा है। भला वहां ऐसे मनुष्यों को कोन उत्तम योनी मिलेगी जिसने कि संसार में यश का लाभ नहीं हासिल किया।

६ गोपाल—भाई साहब अब हम अपनी बहनों से यानी कन्या रूप देवियों से शुभचिंतक रुप से बड़े शोक के साथ क्षमा मांगते हुये विनय रूप से प्रार्थना करते हैं कि देवियों, आपको जो वात दिखाते हैं कि जो वात आपकी निगाह में शायद ही आयी होगी क्योंकि इतना गहरा महत्वधारी उपदेश किसी मनुष्य से शायद ही हासिल हुआ होगा। क्योंकि तुमको जगत पिता ने अमूल्य गुणधारी रत्न पैदा करने वाली गुणोंकी खान वड़ी शक्ती धारी वनाई हो और सब जीवोंमें उच्च श्रेणी का प्यारा पात्र वनाई हो तुम वड़े अमूल्य शोभा मय यश रुपी कार्य करने की शक्ति रखती हो तुम इस संसार समुद्र से अमृत रूपी कार्य हासिल कर सकती हो। और अपने पतिको सास सुसुर माता पिता को वड़े शोभा मय यश धारी वनाय सकती हो चन्द्रमा सरीकी शीतलता धारण करके सूर्यनारायण के समान तेज हासिल करके सब संसार को सुख पहुचाय सकतीं हो। देवियो आपके सौभाग्य का हाल संसार में विदित हो रहा है कि पतिवृत धर्म की महिमा अतोल अमूल्य महत्वधारी है इसकी वरावरका कोई भी महत्वधारी वृत इस संसार में महिमा योग्य नहीं है। श्री जगत पिताने प्रसन्न होकर तुम्हारे देवी सरूप को वड़े शोभा देने वाले गुण वख्शे हैं जिन गुणों की महिमा वर्णन यह कलम नहीं कर सकती हैं क्या देवियो तुम्हारी विशेषता उच्च श्रेणी की, इस संसार में आवदित नहीं है। जो जगत वीच परम पूज्य श्री सूर्यनारायण सरी के तेज धारी श्री जगत-पिता के परम प्रेमी जिन्होंने शास्त्र रूपी वेड़ा संसार सागर से पार लगाय देने वाला रचा है।

जिन्होंने अपनी कलम से देवियों को अधिकार दिया है कि

देवियो पहले तुम पुरुष से सात वचनों को मंजूर कराकर देवताओं को साक्षी करके पीछे अर्धांङ्गिनी, रूप में आना कि जिससे मनुष्य अपने वचनों के पालन करने में असमर्थ न बन जाय। अब तुम गौर करो कि यह शास्त्र की आज्ञा आपको कितनी उच्च श्रेणी की दिखा रहा है श्री जगत पिता ने. आपके साथ कृपा करनेमें कसर नहीं रक्खी है अब आप जगत पिता के गुण रूपी भूषण दिये हुये की रक्षा करने में समर्थ हो तो जगत पिता तुमसे बड़ा खुश: होकर मदद देने को तय्यार है।

अब सवाल यह है कि देवियो इस संसार रूपी समुद्रमें ग्राह रूप डाकू अनेकों आपके धरम रूपी मणि नियमवृत रूपी शोभा यश रूपी कीरती कंचन रूपी सौभाग्य इनके हड़प करने वाले, अनेकों रूप में घूमते हैं। यानी यह संसारकी वृत्ती तुमको मुलम्मा रूप चमक दमक के आभूषण दिखाय कर अथवा पहनाय कर तुम्हारे असली भूषण के ठगने के रूप रच रहा हैं। सो अगर तुमने इन संसारी भूषणों से प्रेम जोड़ लिया तो तुम्हारे असली भूषण छिन जांयगे। और संसार अपनी झूंठी वृत्ती का हार पहनाय देगा। सो देवियो आपको चेताये देते हैं कि अगर जिस देवी को इस संसार समुद्र में से अमृत रूपी यश शोभा धारी हासिल करना हो, वह देवी इस संसारके असार भूषण बड़ी कष्टता के देने वाले असली भूषणों के नष्ट करने वाले जगत में से शोभा को छिनाय देने वाले, शरीर और धर्म को नष्ट कर देने वाले काम क्रोध लोभ मोह अहंकारके पैदा करने वाले ऐसे भूषण सुवर्ण के इतने कष्ट पहुंचाने वालों से प्रेम नहीं करना. इनका त्याग ही रखना अगर संसार बीच तुमको यश: धारी शोभा हासिल करनी होय तो क्योंकि इस सुवर्ण में कलयुग का वासा है। राजा परीक्षत बड़ा शिरो-मणि राजा था. जिसका मुकुट सुवर्ण का था। और उसी जमाने में कलयुग राजा आये थे राजा से कहा कि राजन हमको स्थान दो

राजा ने अपने मुकुट में रहने को स्थान दे दिया। जब राजा ने मुकुट धारण किया सोई राजा की बुद्धी विगाड़ दी। इसलिये हम तुमको निगाह कराय रहे हैं कि इन भूपणों से प्रेम को नहीं लगाना और जगत पिता के पहनाये हुये भूषण शोभा धारी यश रूपी अमृत के हासिल कराने वालों से प्रेम जोड़ कर जगत को अपनी वीरता दिखलावो जो संसार स्त्री रूप देवियों की निंदा कर रहा है। संसार में मनुष्य योनी बड़ी भगवान की कृपा होती है जब हासिल होती है और यह नकली भूपण बुद्धी को चञ्चल बनाय देते हैं। और इनकी शोभा थोरे ही समय की है। और जो जगत पिता ने भूषण देवियो आपको दिये हैं उन भूपण धारी देवियोंको संसार हाथ जोड़ता है और दर्शनोंका अभिलाषी रहेगा और धन्यवाद देते हुये साक्षात देवी मानने को त्यार होगा। और जो सुवर्ण के भूपण धारी देवियां हैं उन देवियों को संसार जिस निगाह से देखता है जिसका भी हाल सबको विदित है। और इन भूपणों के साथ कितना कष्ट लगा हुआ है कि जिसका वर्णन कर चुके हैं। अब जिन भूपणों को उत्तम सुखदायी समझो उन भूपणों से प्रेम लगावो अगर ईश्वरी भूपण प्यारे समझो तो उनको धारण करो उनकी हिफाजत श्रीश्याम सुन्दर करेगा और तुमको शक्ती देगा और मदद करेगा और मनुष्य के बनाये हुये भूपण उत्तम समझो तो उनको धारण करो उसकी हिफाजत मनुष्य करेगा अब विचार करने की वात यह हैं कि भूपण शोभा के वास्ते संसार धारण करता है सो देखलेव कि किन भूपणों की शोभा और कीमत ज्यादा है संसार में और जगत पिता की निगाह में उन्हीं को धारण करो।

१०—राधेश्याम देवियो इस इतिहास पर गौर करना कि एक देवी अपने पति से बड़ा प्रेम रखने वाली किसी कारण वश विधवा हो गई अब उसको पति के बिछोहा हो जाने से बड़ा कष्ट हुआ। वह देवी बुद्धमान विचार शील थी सो उसने श्रीश्याम सुन्दर से प्रेम लगाया

वड़ी पूजा सेवा करने लगी और उन्हीं की खातिर में दिन रात मगन रहने लगी। उन्हीं का गान उन्हीं का स्मरण उन्हीं की चर्चा उन्हीं के भोग प्रसाद की हर वक्त तेयारी सब कार्य वड़े प्रेम और भक्ती से करती रही अपने मन और ध्यान को कभी भी दूसरे विषय में नहीं जाने दे। ऐसा प्रेम लगाया कि जैसा मीरावाई ने वंशी वाले के चरणारविन्द में लगाया था। अव तो उसकी भक्ती की वड़ी शोहरत हो गई और हर कोई उसके पास जाय नहीं क्योंकि वह किसी से वात नहीं करे उसका मन एक वंशो वाले गिरधर प्यारे में रम गया। और मगन रहने लगो उनके गुणगान करने के सिवाय दूसरी कोई भी वात नहीं सुहावे अव तो गिरधर प्यारा खुश हो गया। और दर्शन दिये वह तो पूजा सेवा हो कर रही थी सोई आपने कहा कि मैं तुझसे खुश हूं तू मांग वह चरणों में गिर पड़ी और गद गद वाणी हो गई दर्शनों के लाभ में इससे कुछ वोला भी नहीं गया फक्त इसने यह मांगा कि महाराज मैं दूसरी योनो में भी यही स्त्री योनी चाहती हूं कि जिसमें पतिव्रत धरम के सौभाग्य को पूरा हासिल कर सकूं। क्योंकि इसव्रत को आपने वड़ा भारी माननीय वनाया है शोभा का भण्डार जगत में उजियाला सूर्यचन्द्र सरीका तेजधारी दोनों कुलों को वड़ा महत्व धारी वनाय देने वाला संसार को सुख पहुंचाने वाला सो यही चाहती हूं। सोई भगवान तथास्तु वचन कह कर अन्तर ध्यान हो गये अवतो यह एकदम डोक मारकर रोने लगी सोई सव घरके आदमी दौड़ पड़े और पूछने लगे कि यह क्या वात हुई जव उसको पुचकारा तसल्ली दी जव उसने सव हाल ब्यान किया और फिर रोने लगी और अवतो उसके प्रेम की हद्द ही न रही कोन का खाना और पीना सिवाय गिरधर प्यारे से ही अपने आप वातें करती रहे और इधर यह शोहरत फैल गई कि गोपालकी वेटी को साक्षात भगवान दर्शन दे गये अवतो महाराज महिमा की सीमान

रही सो देवियो जैसी गिरधर प्यारे की प्रेम की निगाह तुम्हारे ऊपर है जैसी किसी के ऊपर नहीं है। इसका कारण है कि सृष्टिके भारको उठाने वाली हो और तुम्हारे प्रेम बड़े शोभामय है तुम्हारे दिल बड़े मोमसदृष्ट मुलायम है। तुम सौभाग्यको प्राप्त करना चाहो तो बड़ी आसानी से कर सकती हो क्योंकि तुम्हारे नियम व्रतमें गिरधरगोपाल मदद करता है कारन विश्वास पात्र जीव हो तुम हर एक की ठगाई में आय जाती हो तुम्हारी प्रकृति बड़ी भोली है तुम जो बात सौभाग्य की और निरभाग्य की हासिल करनी चाहोगी सोई कर सकती हो अब सब देवियोंसे यह शरीर विनय करता है कि विषरूपी वृत्ती दुर्गन्धी रूपको त्याग दो और अमृतमय सुगन्धीके देनेवाली प्रकृति को धारण करो और संसार से सौभाग्यता प्राप्त करो निरभाग्यता को विसारदेव अगर जो देवी इस महत्वके हासिल करने पर विचार करलेवेंगी उसको ही इस महत्वका लाभ हासिल हो सकता है और जन्म जन्मान के सुख हासिल कर सकती हैं कुछ भी किसी तरह की कठिनाई नहीं होवेगी। एक इतहास बड़ा सौभाग्यशाली और दिखाते हैं निगाह करने की बात है और इसपर देवियों को ध्यान करना जरूर होगा यह इतहास बाईसकोपमें दिखाया गया था कलकत्तामें गणेशभवनमें कि एक वैश्या की कुमारी देवीने श्रीशिवजीकी आराधना करी है सोई नारद यह हाल देख गये थे इन्द्रके यहां नारद पहुंचे हैं सो इन्द्रके यहां वारंगनाओं का नाच हो रहा था सोई इन्द्र वारंगनाओं की तारीफ करने लगा और कहने लगा कि इनसे बढ़ कर अप्सरा नारद तुमने न देखी होगी सोई नारद को कहना ही पड़ा कि इन्द्र मृत्यलोकमें एक महानन्दा नामकी कुवारी पुत्री वैश्याकी, ऐसी खूबसूरत है कि उसके सामने यह कुछ भी नहीं हैं सोई इन्द्रको बड़ा अचम्भा हुआ। और कहने लगा कि मृत्यलोकमें हमको नारद ले चलो सोई इन्द्र और नारद भेष बदल कर आये।

इन्द्र सेठजी बनकर बड़ा जवाहराती जेवर पहिनकर आया है सोई वैश्याके यहां पहुंचे हैं और वैश्या से यही सवाल किया है कि महानन्दासे मुलाकात करेंगे बुलाओ उसको सोई वेश्या सुनकर बड़ी खुश भई है और महानन्दा के पास पहुंची है और महानन्दा से कहा है बड़ी खुशी के साथ, कि महानन्दा चल और जल्दी चल एक सेठ आया है तेरी याद कर रहा है और बड़ा जेवर लाया है सारी उम्रमें भी इतना माल हासिल नहीं कर सकते हैं सो जल्दी चल महानन्दा बोली कि मेरेको इन लुटेरे भूषणों की कोई दरकार नहीं है यह भूषण धर्म की शोभा के लुटेरे हैं मेरे पास वो भूषण हैं कि किसी के हरन करने से हरन नहीं हो सकते संसारमें बड़े शोभाके देनेवाले सो मेरे को न तेरे सेठसे मतलब है न तेरे भूषणोंसे मतलब है सोई वैश्या बड़ी क्रोध भई और कहने लगी कि भला मैं तेरेसे पूछती हूं महानन्दा कि तू इससे बढ़ कर और क्या चाहती है सोई महानन्दा बोली कि मेरे को कोई बातको जरूरत नहीं है तू अपना काम कर सोई वैश्या पीछे चली गई नारदने देखा कि महानन्दा आई नहीं इन्द्रको दर्शनतो कराय दें कि हमने जैसी बताईहै जैसीहीहै इन्द्र देखकर कहेगा तो सही सोई नारद महानन्दा के पास पहुंचे और कहने लगे कि महानन्दा तू बड़ी भक्त है शिवकी अगर तेरे दर्शनोंको कोई आवे तो दर्शन नहीं देगी सोई महानन्दा गई और इन्द्रकी बद नियत हुई सोई इन्द्रके शरीरमें आग लग गई अब नारदने यह हाल देखा जब महानन्दा से कहा कि महानन्दा इसको बचावो यह इन्द्र राजा है इसका कसूर माफ करो सोई महानन्दाने शिवजीसे प्रार्थना करी है आगी विदा हो गई लेकिन इन्द्र का चहरा झुलस गया सूरत बद सूरत हो गई जब नारद इन्द्रको शिवजी के यहां लेकर गये हैं और शिवजी से सब हाल कहा है इन्द्रको जास्तीका कि आपकी भक्त को इसने बद निगाहसे देखा था सोई आपकी कृपाने उसकी रक्षा करी और

इसके शरीरसे आगी चिपट गई सो इसका ऐसा हाल कर दिया शिवजी बोले कि इन्द्र तेरी आदत नहीं बदली है सोई इन्द्रने माफी मागी है। फिर उसको वैसाही कर दिया है और नारदने कहा है कि महाराज महानन्दा आपकी बड़ी भारी भक्त है और उसने यह प्रण किया है कि जो शिवजीका कंकण लेकर आवेगा. उसके साथ ब्याही जाऊंगी सोई शिवजी बुरी सूरत बनाय कर कंकड़ लेकर गये है और महानन्दा को आवाज दी है सोई वैश्या देख कर फटकारने लगी है कि क्या करेगा सोई बोले कि मैं कंकड़ शिवजी का लाया हूं उसके साथ ब्याह करूंगा सोई महानन्दा आई है और कंकड़ देख कर उससे पति भावका नाता मानने लगी है तिसपर भी शिवजीने बहुत तंग करके जाच करी है लेकिन देवियोंके वृत क्या ऐसे हैं कि जिनको ,कोई भी विपत्ती डिगा सके महानन्दा सब तकलीफोंको सहन करती हुई प्रेमही बराबर मानती रही सोई शिवजी प्रसन्न हो गये और विमान पर चढ़ा कर ले गये। देवियों सच्चावृत तुम्हारा होय तो क्या कोई ताकत रखता है जो डिगाय सके इन्द्रतक की हुलिया बिगाड़ दी भला मामूली मनुष्य तुम्हारे धर्म को खण्डन कर सकते हैं अगर तुम सच्चे वृत को धारण कर लेओगी तो हाय २ कैसे बड़े आनन्द को तुमने त्याग रखा है हाय हाय अफसोस तुमने अपना सौभाग्य कोड़ियोंके मोल का नहीं रखा है भला ऐसा तेज धारी सौभाग्य सरूप ईश्वरने दिया है जिसको तुमने मिट्टीमें मिलाय रक्खा है देवियो संभलो तुम्हारी ,मुट्ठीमें सौभा-ग्य बनाय लेना है तुम अनेकों वृतधारण करती हो लेकिन तुम्हारे बड़े भारी सौभाग्यके देनेवाला एक ही पतिव्रत धर्म ऐसा है कि जिसकी बराबरी संसार में कोई भी वृत तपस्या नहीं कर सकता है

११ गोपाल भाई साहब ता० ३०—४—३४ को विश्वमित्र अखबार में निकला था कलकत्तामें कोई बाबू साहब मामूली इस्थितीके वैश्या, के यहां जाया करते थे अमृत प्याला पीनेको उनकी श्रीमतीने उनको

हरचन्द समझाया कि आप यह अनुचित कार्य्य करना छोड़ देव इसका नतीजा दोनों लोकोंमें आपके लिये खराब निकलेगा लेकिन वो अपनी हरकतसे वाज़ नहीं आया सोई उस देवीने अपनी जान खोय दी ऊपर से गिर कर क्यों कि नेक वख़्त देवी थी एसे अग्यानी मूर्ख पती अनुचित रास्ता चलने वालेके संग रहना ना मुनासिब समझ कर अब वावू साहब निसफिकर होकर वेश्या का पीकदान समालें क्यों कि स्त्री रूपदेवी वगैर गृहस्थ आश्रमके जो अमूल्य सुखरूपी भोग तो उसीके साथ लद गये अब यह भोग तो मनुष्य को कोई भी वस्तु से हासिल हो नहीं सकते हैं क्योंकि स्त्री रूपदेवी से विछोहा हो जाना मनुष्यके सर्वस्व सुखों का नष्ट हो जाना है चूंकि संसार दिखा रहा है अथवा कलयुगमें ही नहीं सवयुगोंमें महिमा देवियों की रही है बल्कि कलयुगमें अग्यानी विना विचारी पुरुष निरादर भी करते हैं क्यों कि ऐसे मनुष्योंके संग करके स्त्रियां गुण रहित हो गई हैं तिसपर भी देवियों की वो कीमत संसार प्रित्यक्षमें दिखा रहा है कि स्त्री रहित मनुष्य वड़ी अभिलाषा के साथ स्त्रीके हासिल करनेमें अनेकों तरह की ताकत खर्च कर रहा है यानी धर्म भी चले जाने की परवाह नहीं करता है जो संसार में सब से बड़ा वस्तू है लेकिन स्त्री हासिल हो जाय जो कि अमृत से प्यारी चीज़ है क्यों कि अमृत में तो एक ही गुण है और स्त्रीमें अनेकों अमूल्य गुण हैं बल्कि धर्म तो आज कलके मनुष्यों की निगाह में कोई कीमत का वस्तु नहीं है कि जो इसके विसर जानेमें आपत्ती नजर आवे क्यों कि मनुष्य बहुत छोटे छोटे असार मामलोंमें धर्म के विसारने को त्यार रहता है उन अग्यानी मूर्खों को यह नहीं मालूम कि धर्म रहित मनुष्य को संसार तुच्छ निगाह से देखता है और ईश्वर की निगाहमें निकृष्ट श्रेणीका अपमान जनक हो जाता है खैर मनुष्य सम्पती को बड़ा मानता है सो तिसको भी कुछ

न समझ कर स्त्रीके हासिल करने में लगाने को तैयार रहता है अजी प्राण भी लगाय देनें को तैयार रहता है अब उस बेवकूफ से पूछा जाय कि तू प्राण तक देने को त्यार है किसी भी मामलेमें तो जिसके पीछे प्राण देता है उसका भोग तो तेरे मतलब से बाहर हो गया सो मूर्ख लोग विचार नहीं करते हैं हम अखबारोंमें देखते हैं अनेकों पुरुष जान खोय रहे हैं अजी स्त्रीरूप देवी एसा ही प्यारा रत्न ईश्वरने बनाया है, संसार सृष्टिके पैदा करने वाली बड़ी शक्ती धारी पैदा की है सो देवियो समझ कर संसार में अपनी बड़ाई लूटने वाला रूप धारण करो सिंहनी बनो जो कि किसी मनुष्य की ताकत तुम्हारी तरफ नाजाइज निगाह से देखनेको नहीं पड़े क्योंकि हम अखबारोंमें देख रहे हैं कि जैसे भेड़िया भेड़ बकरी को उठाय ले जाता है जैसे उठाय ले जाय रहे हैं और धर्म को नष्ट कर रहे हैं अगर तुम्हारी बृती सत्यता पर होय तो किसी मनुष्य की ताकत नहीं है तुमको बद निगाह से देख भी जाय जो देवी सत्य नियम पर सवार हैं वो अपनी निगाह रूपी तलवार से बद निगाहकारी मनुष्य को भस्म कर सकती है ईश्वरने तुमको वो तलवार दी है कि जिसका मुकाबला कोई भी बीर नहीं कर सकता है इन्द्रका भी निरादर कर सकती हो मनुष्य कोन चीज है।

१२—गोपाल भाई साहब कलम कानमें जो उरसी जाती है, जिसका कारन क्या है इस भेदको कोई नहीं जानता है इसका कारण यही हैगा कि जो कुछ कागज में भला बुरा आंख लिखनेवाली है तो यही है अगर कोई आंख अग्यानता बस अनुचित धर्म रहित लिखा गया तो कलम फोरन कानमें कह देवेगी चुपके से कि ऐसा अनुचित आख मेरे से अब नहीं लिखना अगर तुमको मेरे से मुहब्बत होय तो कि जिसमें हमेशा में बनी रहूं और धड़ाके से चलती रहूं और मेरी

इन बातों पर ध्यान करते रहना और इनका पालन करते रहोगे तो तुम्हारा बार बाका होगा नहीं और अगर यह बातें मेरी मनुष्यने न मानी तो मनुष्यको निगाह कराये देती हूं कि संसारमें से अपना और मेरा उजला मुंह नहीं ले जा सकता है और अनेकों तरह के कष्ट भोगेगा और यह सौभाग्य फिर नहीं पाय सकता है अगर मेरे को जड़ समझ कर मेरी बात असम्भव लगती होय तो अच्छे संत महात्मा विद्वानों से दरयाफत करो कि कलम हमको धर्मकी रक्षा करने को कहती है जैसा वो कहे वैसा करना इतनी बात मेरी कही हुई पर गौर करो।

(१) धर्म रहित क़माई से बिल्कुल बचना,

(२) धर्म कार्य्य के द्रव्य का त्याग रखना, गृहण नहीं करना।

(३) अहंकार रहित होकर रहना अगर तेरे से किसी के साथ भलाई। नहीं बने तो खैर लेकिन बुराई भी नहीं करना॥

अगर यह तीन बात मेरी मनुष्य मानता रहेगा तो हमेशा आफत से बचा रहेगा।

१३—राधेश्याम भाई साहब इस संसार में सुगन्धी वस्तू की बड़ी कीमत है और सब आदर करते हैं और चाह रखते हैं यानी सुगन्धित फूल के वृक्ष पर भौंरा मक्खी भी लिपटते हैं और मनुष्य भी चाह करते हैं और देवताओं पर भी चढ़ाया जाता है अतर भी खींचा जाता हे और भी अनेकों कार्य्य में लाया जाता हे। और कोई पुष्प सुगन्धी रहित भी शिवजी पर चढ़ाये जाते हैं। सो ऐसे पुष्प बिना सुगन्धीके भी धन्यवादके काबिल रहे और बहुत से पुष्प रंगके बड़े तेज भी होते हुये सुगन्धी बिना, कोई भी काम में नहीं आते हैं- और उनकी गिनती शुमारी भी नहीं है जैसे सेमर वगैरा के हां अपने वृक्ष की शोभा तो बना देता हे क्योंकि उस वृक्ष को भगवानने फलों- का सौभाग्य नहीं बकशा है तो सवाल कहने का यह है, कि अपना

ही घर सौभा मय बनाय लेने वाले की संसार में कीमत नहीं है ऐसे सुभाव वाले को संसार पसंद नहीं करता है क्योंकि सेमरके फूलमें परउपकार की शक्ती सुगन्धित नहीं है तो संसार उसकी चाह नहीं करता है चाहे वो कितना ही रंगदार क्यों न हो संसार तो उपकारी की आंबरू और चाह और कीमत करता है और कितने ही फूल संसार में ऐसे हैं कि फलते हैं फूलते हैं और झर जाते हैं कोई भी उनका जिकर नहीं करता है इसी तरह मनुष्य जो उपकारी हुये हैं धनी हो राजा हो जिनका जिकर संसार में जरूर होता है और वैभव वाला ही इस संसार में गुमान करे कि जैसे सेमर का फूल सरीका तो इस संसारमें उसको आदर कोई नहीं देता है जैसे कि जिन पुरुषों को काम धेनू सरीकी मन इच्छा फल देनें वाली श्रीलक्ष्मी जो भी हासिल हो गई है और उनमें परउपकारी सुगन्धी दूसरे मनुष्योंके चाहना रूप नहीं पैदा भई तो उन मनुष्यों की स्थिती भी ऐसी ही संसार में रही कि जैसे बबूल का पुष्प कि कोई भी जिनकी चाहना नहीं करता है और कैसा भी जरूरत वाला क्यों न हो उन पुषपों की तरफ निगाह भी नहीं लाता है इसी तरह जो पुरुष पर काज करने से विमुख है अथवा असमर्थ हैं। इस योग्यता को धारण करना असम्भव समझ रक्खा है तो कैसा भी जरूरत वाला मनुष्य क्यों न हो उस धनी से कुछ भी चाह नहीं करेगा ऐसे धनी निर-भाग्य समझो यानी अपने सौभाग्य को बनाना नहीं जानते उनको विचार शक्ती नहीं है कि हमको किसी कारन वस श्रीकाम धेनू सरीकी श्रीलक्ष्मी हासिल हो गई फिर इसकी बदोलत हम अपने सौभाग्य बनाने में कसर क्यों रक्खें क्योंकि जब तुमको यह उम्मेद है कि हम व्योपार करते हैं नुकसान में लक्ष्मी नहीं जायगी अगर हम व्याह शादी वगैरा कार्य्य में ढ़ोल तासोंमें लक्ष्मी लुटाय देंगे और चार दिन को धन्य वादी लूट लेंगे लक्ष्मी नहीं जायगी अथवा ईंट

पत्थरोंमें लक्ष्मी को खर्चा कर देंगे लक्ष्मी नहीं कम होयगी अथवा खर्चा भी हमे चहिये जितना कर लेंगे लक्ष्मी नहीं घटेगी तो मूर्ख मन क्या उपकार सम्बन्धो कार्य्य में ही लक्ष्मी खर्चा करने से घट जायगी कि जो संसार में सदैव शोभा देने वाला, कार्य्य हैगा और जिस कार्य्य से श्रीजगत पिता भी खुश होते है, और श्रीलक्ष्मीजी भी खुश होती हैं, और संसार भर खुंश होता है, और सुख पाता है और दोनों लोकों में अमृतमय यश प्राप्त होता है, और दूसरे जन्म में भी फिर उच्चि श्रेणीमें जन्म पावेगा अथवा राजामहाराजा यानी श्रेष्ट घरमें जन्म होता है। इतने बड़े लाभको त्यागता हुआ असार कार्योंके करने में डटा हुआ है। बड़े अफसोस के साथ लिखना पड़ता है कि क्या तू नहीं जानता है कि ऐसे कार्य्य करने वाले बहुत हो गये मूर्ख अग्यानी और तुम्हारे सामने नंगा होकर चले गये तिनको देखते हुये भी तेरे को ग्यान नहीं होता है कि चार दिन पीछे हमारी भी यही दशा होने वाली है। क्यों कि यह दशा न होने वाले कार्य्य तुम भी तो नहीं कर रहे हो जैसा उन्होंने नहीं किया इसी से मेरे प्यारे धनी भाइयो तुम फौरन समलो जितना द्रव्य उपकार में लुट लुटावो वो जगत पिता बराबर देगा।

धनी उपकारी मनुष्य की करता बहुत आबरू भारी ॥१॥
उपकार न कीना छिन गई सम्पत चतुराई कोन तुम्हारी
उपकार रहित थोड़े दिन मानों मोज हमारी ॥२॥
पीछे कष्ट बड़ा बीतेगा बुद्धी लेव बिचारी
धनी रोज निरधन होते है नहीं बना उपकारी ॥३॥
उपकारी निरधन नहीं होते मददगार गिरधारी

॥ चेतावनो वर्तमान समय की ॥

खेल खिलाड़ी सभी खेलते झूंटे खेल खिलाड़ी।

सच्चा खेल विड़ला खेले सिंह जना महतारी ॥१॥
सोने में सुगन्ध सुनी नहिं देखी रावण भया लाचारी ॥२॥
सोनेमें सुगन्ध विडला की देखो सव घर भर उपकारी।
सवरे जंगल में एक शेर से होता है भय भारी ॥३॥
गीदड़ हजारों शोर मचा में जिनकी कौन शुमारी।
इसी तरह एक उपकारी शोभा लूटे भारी ॥४॥
उपकार रहित गीदड़ सरूप किल्लाते जन्म विसारी।
संसार समुद्र में मोती रुप उपकारी शोभा प्यारी ॥५॥
पावेगा कोई विडला जिसको कीरत होवे प्यारी।
विडला वीर उपकारी शोभा लूटन की है धारी ॥६॥
कलयुग में ऐसा सिंह जना जिस जननी की वलहारी।

वड़े महत्व पुरुष विद्वान महात्माजन कविकला धारियोंकी कविताई सबने दो ही वात को प्रधान माना हैं श्रीजगत पिता का स्मरण और उपकार रूपी धर्म कार्य्य और सतसंग मनुष्य मात्र को।

तुलसी या संसार में पांच वस्तु है सार ॥१॥
संत मिलन और हर भजन दया धर्म उपकार।
तुलसी गुरु प्रताप से ऐसी जान पड़ी ॥२॥
नहीं भरोसा स्वास का आगे मौत खड़ी।
तन कर मन कर वचन कर देत न काहू दुःख ॥३॥
तुलसी पातक झरत है देखत उनके मुख।
कवीर मन तो एक है भावे तहां लगाय ॥६॥
भावे हरि की भक्त कर भावे विपय कमाय।
अपनो साखो आप तू निज मन माहिं विचार ॥७॥
नारायण जो खोट है ताकू तुरत निकार।
नारायण जव अन्तमें यम पकरेंगे वांह ॥८॥
तिनसों भी कह दीजियो अभी सोप तो नाहि।

१४—गोपाल भाई साहब अब हम उन जीवों से क्षमा मांगते हुये प्रार्थना करते हैं उनको अपनी बहिन प्यारी समझ कर कि जो देवी विघ्न कारक कार्य्य कलेस रूप कर रही हैं। यानी सास का हक बहू की रक्षा करने का है। और कोई बुराई का भी कार्य बन जाय तो भी माफी देना बड़ोंका काम है और कोई कुलक्षण भी हो तो उसको भी ढकने का काम है लेकिन ऐसा न करते हुये और अपने शरीर और जीव आत्मा को कष्ट पहुंचने की भी परवाह न करते हुये दूसरों को कलेस रूप से कष्ट पहुंचाय रही हैं सो बहुत बुरा काम कर रहीं हैं, क्योंकि यह स्त्री रूप देवीका शरीर सब शरीरों में उत्तम और शक्ती धारी रूप जगत पिता ने बड़ा प्यारा बनाया है, और अमोल गुण इस सरूप को बखशे हैं। और इस सरूप से सब जीवों को खुशी हासिल होने के लिये ही बनाया है और इस सरूप पर अपना प्यार भी प्रगट किया है तिस पर भी यह स्त्री रूप देवी सब गुणो को त्यागती हुई और ओगुण सरूप धारण करके दैत्य असुर संज्ञा की वृत्ती रूप होकर घरमें कलेस करके घरके आदमियों को कष्ट पहुंचावे और दोनों लोकोंमें अपना काला मुँह करावे इसके बराबर पापी कोन शरीर होगा याद रहे कि घर तबाहीमें आ जायगा धन सन्तानसे हाथ धो बैठोगी और दलिद्रिता छा जायगी और न यहां तुम्हारा मान रहेगा और न वहां आदर मिलेगा वहां धर्म राय बड़ी घृणा करके महाघोर संकट भरी योनी देगा सो ऐसा फल प्राप्त करने वाली देवियों से हमारी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है। कि वो दूसरों को कष्ट देनेसे माफी दें और अपने को भी संकट पाने से बचावें, और अपने परबार का कुशलता रूप धारण करें यह दुष्टता भरे रूप को त्याग करें तुमको बड़ी शक्ती है। तुम फोरन ही अपने सुभाव को बदल सकती हो।

यह बचन महाराज श्रीरामचन्द्रने कहा है।

काचु किरच बदलेते लेहीं। कारते डार परसि मड़ि देही ॥

१५—राधेश्याम भाई साहब इस संसारमें मनुष्य योनी जब मिलती है कि मनुष्य सब योनी के भोग से छुट्टी पाय जाता है क्योंकि इससे बढ़ कर योनी और नहीं हैं और मनुष्य को यह मालूम है और देख भी रहा है कि एक घड़ी का भी भरोसा नहीं है तिस पर मनुष्य ऐसे जहर भरे कार्य्य कर रहा है और उनमें सुख समझ रहा है बड़े अफसोस की बात है। और मूरखता अग्यानता की तो शुमार ही नहीं है कि सुख समझ कर दोनों हाथों से दुःख की गठरी बांध रहा है और मेरे भाईयो यह तो एक मोटी बात है कि सुख देउगे तो बदले में सुख मिलेगा और दुःख देवगे तो बदले में दुःख मिलेगा।

यह बचन महाराज श्रीरामचन्द्रने कहा है।

दुष्ट उदय जग अनरथ हेतू। जथा प्रिसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥

अब सवाल यह है, कि जो मनुष्य डांके डालनेका बाना धारण किये हुये हैं यानी जान लेलेना अथवा उसकी स्थिती खराब कर देना अथवा माल लेजाना यह बड़ा भारी जो दुःख पहुंचाना है, तो यह कार्य्य उनको सुख पहुंचावेगा जो वो शक्स सुख पाने के ख्याल से ऐसा दुःख दूसरों को पहुंचाय रहे हैं कभी नहीं मेरे प्यारे भाइयों में आपको आपका हितैषी बनकर हाथ जोड़ कर समझाता हूं कि यह कार्य्य आपको संकटमें डालने वाला है, सो भूल कर भी इस कार्य्य को मत करो देखो यह आपका करतब दूसरों को बड़ा दुःख पहुंचाने वाला है सो त्याग देव अगर नहीं त्यागोगे तो तुम भी बड़ा भारी कष्टके जालमें पटके जावोगे और तुम लाखों का द्रव्य लाते हुये भी अखीर वख्त में कफन भी नहीं पावोगे और धर्म राय भी तुमसे बहुत सख्त घृणा करेगा और महाघोर संकट भरी योनी में पटकेगा सो मेरे

भाइयों इस कार्य को तिलाञ्जली देव।

इसी तरह हमारे लिखने पर चोर विरत्ती के मनुष्य भी ख्याल करें कि तुम दूसरों को नुकसान पहुंचाय कर अथवा कष्टमें डाल कर अपने को सुख हासिल करना चाहते हो तुम्हारी बड़ी गलती है। इसमें सुख कहां है, सिवाय दुःखके सो हमारी हाथ जोड़ कर विनय है, कि दूसरों को कष्ट पहुंचानेसे माफी देव और अपने को भी कष्ट में पड़ने से बचाओ।

महाराज श्रीरामचन्द्रने कहा है।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अघ भाई।
नर शरीर धरि जे परपीरा, करहिं ते सहहिं महा भव भीरा॥

और बहुत मनुष्य ऐसे निकृष्ट विरत्तो के और हैं कि छोटे छोटे लोभ वस दूसरों के बालकोंकी जान लेलेतें हैं भला कितने बड़े दुःख देनेको संसारमें पैदा हुये हैं। और उस बालक की मृत्यू पर घर के लोग कितने बड़े दुःख के भागी होंगे और सुनने वालोंको भी कितना बड़ा कष्ट होगा और जिसके बदले में वो पुरुष सुख पावेगा याद रहे कि तुमको भी इतना भारी कष्ट भोगना पड़ेगा वो कष्ट तुमको हर समय व्याकुल रखेगा और वहां धर्म राय भी ऐसी कष्ट मय योनी देगा कि जिसमें हर समय कष्ट ही में बने रहोगे सो मेरे मेहरबानों इस पेशा को त्याग कर कोई और पेशा धारण करो क्योंकि दूसरे को मारकर वो शक्स भी नहीं बच सकता है जो मनुष्य किसीको मारना चाहे तो पहले समझ ले कि मेरी मृत्यु आय गई जब वो दूसरे की जान लेवे।

यह श्रीरामचन्द्रका वाक्य है।

संत सहहिं दुःख परहित लागी। परहित हेतु असंत अभागी॥

समय की चेतावनी।

तुम आज्ञा प्रभुकी दई विसारी। कार्य्य कर रहे बिना बिचारी।
तुम लाभ लूट लेव भारी। नहीं होगी मिट्टी खुवारी॥

सम्पत प्रभुने दीनी भारी। तुम दुर्योधन प्रकृती धारी॥
विमुख हो गये प्रभुसे विल्कुल। तुम छोड़ी दयानत दारी॥
व्यर्थ मजामें सम्पत खोवे। उपकार करनमें तू हे रोवे॥
सोच समझ मन माहि चलन की। हो गयी तेरी ख्वारी॥
जगमें जस भारी हो जावे। दोनों लोकोंमें मजा उड़ावे॥
सोच समझ बुद्धी विचार से। क्यों बनता है अनारी॥
नेक कार्य तुम जगमें करलेव। जाती भाई की रच्छा करलेव॥
भण्डार खोल देव ब्रज मण्डल में। जाती रक्षा कारी॥
किड़ोरा ध्रीसी नाम पाय कर। कीरत धारी काम क्या नहीं॥
तुम गलती भारी भूलमें पड़ गये। बुद्धी कहा तुम्हारी॥
नुकसान वहाने खर्चा जरिये। अपनी सम्पत पाछी लेले॥
फिर क्या सोच विचार करोगे। पेस न जाय तुम्हारी॥
जो सम्पत यदि यहीं छोड़ गये। बिलकुल खाली हाथ चले गये॥
बेटा नाती अहङ्कारी बनकर। कुमारग में दें बिगारी॥

योग वशिष्ट में श्रीरामचन्द्र महाराजने श्रीविश्वामित्रजी मुनी से कहा है कि लक्ष्मी प्राप्त होने पर मनुष्यके गुड़ोंका नाश हो जाता है। सीलता सन्तोष धर्म उदारता वैराग्य विचार इत्यादिक गुणों का नाश कर देती है। जब इन गुणों का नाश हो गया तब सुख पदार्थ कहां रहा बल्क परम आपदा प्राप्त होती है। सो आपका कथन सही है। किन पुरुषों को यह कथन लागू होता है। अग्यानी पुरुषों के लिये जिन्होंने सत पुरुषों का सत संग नहीं किया शास्त्र नहीं सुना अल्प बुद्धिमान पुरुष कि जिनको किसी कारण वस लक्ष्मी प्राप्त हो गई सोई अहङ्कार दौड़ पड़ा अब बुद्धीको उसने नष्ट कर दी अब बुद्धी बगैर अच्छे गुणोंका आदर कौन करे और अच्छे बुरे की पहचान कोन करे गुण आपही किनारा कर जायेंगे क्योंकि यह बात तो एक मोटी है कि जिस धनी के दरबारमें अच्छे पुरुषों का आदर नहीं होता है। उस जगह

श्रेष्ट पुरुष नहीं जाते हैं। चाहे वो धनी किरोड़ा धीस क्यों न हो और जहां अच्छे पुरुषों का आव आदर होता है, वो पुरुष निर्धनी क्यों न हो बराबर कृपा करते हैं। और वही पुरुष महत्वधारी माननिययोग्य है। और यह भी कहा है। महाराज रामचन्द्रने कि जितने कुछ दुःख हैं। उनकी खान अहङ्कार है, मैंने जो कुछ अहङ्कार से भजन और पुन्य किया है। सो सब व्यर्थ है इसमें परमार्थ की सिद्धी कुछ नहीं है, सो भी सही है। कि जो कार्य अहङ्कार को लेकर होयगा उस कार्य से उत्तम फल की आशा करना असंभव है।

५ सच्चा धनी दयानत दार इस संसारमें कोन हुआ जिसके महत्व का वर्णन।

धनी पुरुष संसार में उस पुरुष को कहा जायगा कि जो जगत पिताका प्यारा होगा और उसी की सम्पत उसीके ख्याल मूजिब खर्चा करेगा जैसा नरसी भक्तने किया हैगा कि जिसका नाम सब संसारमें विदित हो रहा है कि जिस भक्तने अपनी वृत्तीको एक बंसी वालेके चर्णारबिन्दमें अर्पण कर दी और उसी की पूंजी समझ कर उसीके दासोंके अर्पण कर दी थी तनक भी कुछ किसी तरह का विचार तर्क जिसमें नहीं लगाया था यानी जगत पिताके खुश करनेके वास्ते उन्हीं के प्यारे जन संत महात्मा सत पुरुषों की सेवा करता था और उसी बंसी वाले का गुण गान करता था। और जगत मय संसारी जीवों अर्थ भी उस जगत पिता से प्रार्थना करता था कि प्रभो आप बड़े दयाके समुद्र हो इस संसार समुद्रसे पार होने वाली और कोई तजवीज नहीं है। इस जीव को आपही की शरण आने में इस जीव के पार लग जाने का उपाय है सो प्रभो आपकी बड़ी कृपा होते हुये भी यह पुरुष कृतघ्नी रूप धारण कर रहा है। आपने अपनी कृपा दृष्टी से पुरुषको इतना महत्व बखशा है कि श्री कामधेनू सरीकी फल देने वाली

श्रीलक्ष्मीजी आपने इस पुरुषको वखशी है। लेकिन प्रभो यहमन्द भागी जीव अपने को सौभाग्यता रूपी अमृत फल न प्राप्त करता हुआ अपने भाग्य को आदर न देता हुआ शोभा रूपी यश हासिल न करता हुआ आपके यशको गान न करता हुआ आपसे विमुख होकर अपने भाग्यको निरभाग्य बनाने को कोशिश कर रहा है। यानी आपका दिया हुआ महत्वको धूलमें मिलाने की तजवीजें अनेकों तरह की कर रहा है। गुनाह का समूह इकट्ठा कर रहा है, यानी दुर्योधन शरीर का रूप अपना धारण कर अपने सौभाग्य के नष्ट होने में कुछ भी भय नहीं खायरहा है। प्रभो इस दासकी यह विन्ती है, कि आप दयालू हो आप दयाके समुद्र हो आपका दिया हुआ महत्व जिसके नियमों का पालन करन हारा जो पारस है सो लोहेके गुनाह पर निगाह न डालता हुआ सोना ही बनाय देता है। इसी तरह प्रभो इन जीवोंके गुनाह पर निगाह न डालते हुये आप भी सोना रूप वनाय देने की कृपा करोगे क्योंकि प्रभो इस गुनाह धारी जीव का कोई भी मददगार नहीं जो यह पार लग सके सो प्रभो इस दास की यही विनती है कि आप दया द्रष्टी जैसी अपने दासों पर रखते हो ऐसी ही कृपा द्रष्ट का लाभ इन जीवों को भी वखषो प्रभो आपको जै हो इस मूजिव जगत पिता से संसारी जीवों की तरफ से भी विन्ती करते हैं। जो भक्तजन संत पुरुष हैं यानी सर्वदा सन्त पुरुष उपकारही करते हैं, अब सवाल यह है कि नरसीने हुंडी करी थी रुपया ५००) सोई जो हुण्डी लेकर गया था सज्जन उसने द्वारकामें सामलिया साय की गद्दी तलास करी लेकिन सामलिया साय की गद्दी का पता न लगने पर उदास हो गया सोई आप फौरन प्रगट हो गये और पूछने लगे कि भाई क्यों उदास हो जब उसने हुण्डी का वर्णन किया सोई कहने लगे कि भुगतान लेव और उसको कह देना कि क्या छोटी छोटी हुण्डी करता है बड़े बड़े परचा किया करे सोई भुगतान देकर आप अन्तर ध्यान हो गये

अब तो वह पुरुष भुगतान लेनेवाला नरसी को धन्यवाद करने लगा कि अच्छे सज्जन भक्त जन संत महात्मा सत पुरुषों से व्योहार किया कि अमृत सरूप फल मिला कि सामलिया साथके खुद दर्शन हो गये और अब नरसी को बेटी को भातकी भी जरूरत पड़ी तो उसने कुछ चिंता नहीं करी उसका तो सामलिया साथ जाने क्योंकि नरसो तो उसीका होचुका फिर फिक्र वही करेगा सोई गुमास्ता बनकर सामलियासाथ भात लेकर खुद आयाहीतो और बड़े जोर का भात पहराया लड़की कहने लगी जगतपितासे कि काकाजी मेरीभाएली को क्या देउगे तोआप बोले बेटी तू कहेगी सोई देंगे जो बेटीने कहा जिसको सोई तो दिया और सब नगर भरको दर्शन दिया और हुंड बरसाय-कर सब नग्र को लाभ पहुंचाया अब हम पूछते हैं। उन निरभाग्य मनुष्यों से कि नरसीने इतना धन लुटाय दिया था कि जितना वो लुटाय गया अथवा इससे बढ़ कर कोई दुनियांमें साहूकार हुआ है। कि जिसने खास जगत पती के ऊपर हुंडी काटी और ऐसे सत पुरुषों से व्योहार करने वाले पुरुषों को खास प्रभूके दर्शन साक्षात हुये ऐसे ही सतपुरुषों की बदोलत निरभाग्य भी भाग्यशाली हो जाते हैं ऐसे साहू-कार पारस सरीके सराहने योग्य हैं। उनको भाग्यवान नहीं कहा जायगाकि जिनसे किसीकाभलाही नहीहोताहैं वोमनुष्य निरभाग्य हैं अब भाग्यशाली उपकारी इनको कहा जायगा कि जिनकी थोरी सी पूंजी संतमहात्मा खाइ गये जिसकी अगड़ दोलत जगत पिता के यहां जमा हो गई और उसके कार्य्य आप खुद गुमास्ता रूपसे करने आया अब आज कलके धनी लोग तो उसका विश्वास ही नहीं करते हैं क्योंकि उसके ऊपर लुटाय दें। और उसके यहां जमा नहीं हुआ अथवा उसने खबर नहीं ली तो हम उसको कहां ढूंड़ेंगे ऐसा ख्याल करके उपकार रूपी धर्म अपने काबू का कर रहे हैं। कि जिसमें वखत पड़ने पर उससे काम भी निकल आवे भला जब ऐसा धर्म चतुराई का अनेकों

तर्क पैदा करके क्या हुआ वो धर्म सामलिया सायके खज़ाने में जमा नहीं होयगा क्योंकि सेठजी धर्म करने का रूप ही नहीं जानते हैं। अव शोभामय फलदायक होय तो कैसे होय जव धर्म करने में अनेकों, तरक वितर्क लग रहीं हैं। जिस कार्य्य का रुपही ठीक नहीं वंधा वो कार्य्य शोभामय फल नहीं दे सक्ता है। वही फलेगा जिसको त्याग मय वंशी वालेके नाम पर सांती वृत्ती से किसी तरह का भी तरक सवाल न करते हुये किया जायगा वो कार्य्य फलदायक होयगा लेकिन इस सरूप से उपकार करनियां वहुत थोड़े हैं। ऐसे लाभ के हासिल करने वाले पुरुष कोई सज्जन ही होंयगे। अगर कोई छोटा कालटी का मनुष्य लक्ष्मी पायकर अहङ्कार के फन्दामें फसा हुआ क्या ऐसा लाभ हासिल करसक्ता है। कभी नही ऐसा सौभाग्य स्वरूप कार्य्य तो कोई सज्जन ही हासिल करसक्ता है और धन्यवाद भी ऐसेही पुरुषोंको मिलेगा जो अमृतमय सौभाग्य का मजा श्रीलक्ष्मीजी की वदोलत चक्खेगा।

६ वीर पुरुष इस संसारमें क्या कर रहे हैं।

वीर पुरुष इस संसार की लगामको थाम रहे हैं। जो कि योगेश्वर हैं। जगत पिता के परम प्यारे हैं। श्रीचन्द्रमासरी की शीतलता और श्रीसूर्य्य सरीके तेज को धारण किये हुये हैं। संसार समुद्रमें जहाज रूप पार लगाय देने को भ्रमण करते हैं जगत पिता की आज्ञानुसार अगर ऐसे वीर पुरुष संसार में नहीं होंयगे जिस रोज यह संसार पापमय जगत पिताके विमुखताके कारण रसातल को चला जायगा यह योगेश्वर इस पापमय संसारके पापोंको तुच्छ समझते हैं। अपने योग्यवलके सामने जैसे एक छोटीसी चिनगारी अगनी की वड़े भारी लकड़ी के ढेर को भस्मकर देने में समर्थ वान होती है, इसी तरह यह योगेश्वर भी संसारके पापोंको भस्म कर देनेकी शक्ती रखते है यह श्री जगत पितांकी कृपाका ही कारण है लेकिन संसारी मनुष्य जगत पिता

के विमुख ही सब कार्य्य को कर रहा है। तो उन मनुष्योंकी बुद्धि कितनो नीचता पर सवार है।

❀ किसीने कहा है ❀

हित अनहित पक्षीहूं पहचाने। मानुस तो गुण खान समाने।

इससे ऐसा जाहिर होता है कि जो पुरुष जगत पिता से विमुख हैं। उनके गुण सब नष्ट हो गये है।

७ सबसे बड़ा उपकारी संसार में कोन हुआ है।

सब संसार को विदित है कि राजा मोरध्वज सौभाग्यवानने जैसा उपकार कार्य्य अमूल्य किया है। इस संसार में दूसरे पुरुष से हुआ न होवेगा कि जिसके साहस को श्रीजगत पिताने भी धन्यवाद दिया है और संसार में यश छा रहा है। कि जिस जगत पिता के प्यारे सिरोमणि ने एक सिंह को इच्छा भोजन देने के वचन दे दिये थे उन वचनों का पालन करनेमें ऐसा अमूल्य एक ही पुत्र होते हुये भी अपने वचन अचल रखनेके ख्यालसे दे देनेमें संकोच नेक भी नहीं किया और अपनी अर्धांगिनी से मांफी मांगते हुये यह वचन बोले हैं। कि आज हमारा वचन मिथ्या हो जायगा और अतिथि भी बिना सतकार हुये अपने दरवाजे से पीछा चला जायगा बड़ा टेढा सवाल उपस्थित हुआ है रानी भी घबड़ा गई और राजा को अधीर देख रानी बोली कि महाराज यह कहावत है, कि तन दे धन दे लाज दे एक धर्म के काज सो महाराज कोई फिकर की बात नहीं है, आपका प्राण प्यारा आपके प्राणोंकी रक्षा करने हारा आपके धर्म की रक्षा करेगा और अपने प्राणों को नोछावर कर देगा प्रसन्नता से तय्यार हो जायगा आप कुछ इसकी परवाह न करें महाराज पुत्र तो फिर भी पैदा हो जायगा लेकिन धर्म गया तो उस पुरुष का इस संसार में से सब जाता रहा और अतिथि का दरवाजे से भूखा चला जाना महा

पापका भागी होना है। सोई रानीने पुत्रको बुलाया और मोह वश पहले प्यार किया और कहा बेटा राजा साहब के धर्म की रक्षा होने में तुम्हारा शरीर हम देना चाहती हैं। तुम्हारे शरीर को चीर कर सिंह के वास्ते सो बेटा तुमको मंजूर है. सोई पुत्र बोला माताजी यह फूल तो आपके ही शरीर से पैदा हुआ है। आपकी सहायता अर्थ यह शरीर लग जाय तो कोन इस शरीर की बहादुरी है क्योंकि पुत्र का तो यही फरज़ है कि माता पिता पर कोई सवाल कठिन आय जाय और पुत्र के शरीर से वो सवाल पूरा होता होय तो उसका फरज़ है, कि उसको पूरा करै क्योंकि वो इसी मददके लिये सींचा जाता है। सो पिताजी का कार्य्य इस शरीर से हल होता होय सो कर सकते हैं। यह शरीर निस्संदेह हाजिर है, आप और पिताजी हर हालत में काम ले सकते हैं। अब इसमें एक टेढ़ा सवाल और खड़ा है कि साधूजी का यह कहना है, कि माता पिता दोनों अपने हाथों से चीरें और सीधा अंग शेर खायगा और आंसू किसी के निकले नहीं अगर आंसू किसी के निकल आये तो फिर हमारा सिंह खायगा नहीं भूखा ही लोट जायगा। सो इस बातको भी, तीनों शरीर मजबूत अपने हृदय को कर चुकेकि ऐसाही होवेगा अब आरा चलने लगा भगवान बंसीवाले ने कहा अरजुनसे इशारेमें कि देखो मेरे भक्त का दृढ़ विश्वास अरजुन कहने लगा महाराज धन्य है। इस राजा रानी पुत्रको अब महाराज इनको मांफी देव बंशीवारा बोला कि अरजुन अभी देख तमाशा सोई पुत्र को चीर ही रहे थे कि पुत्र के बाये अंगसे आंसू आय गया अब तो साधूजी फोरन बोले कि बस राजन अब हमारा सिंह नहीं खायगा क्योंकि हमारी यह शर्त थी कि आंसू आय जायगा तो हमारा सिंह नहीं खायगा तुम्हारे पुत्रकी आंखोंसे आंसू निकल आया अब हमारा सिंह नहीं खायगा सोई राजा बोला महाराज आपका कहना बिल्कुल सत्य है, कि आपके कौल के विरुध कार्य्य हो गया लेकिन प्रभो यह

वायां अंग रोता है कि देखो सीधे अंगने ऐसो करनी उत्तम करी सो यह उपकार कार्य्यमें काम आया और मेरी करनो ऐसी खोटी रही कि मेरे को महाराजके सिंहने भी मंजूर नहीं किया इस तरह अपने को धिक्कारी देकर रोता है। अब प्रभो इस दासको जो खता है सो आपसे अरज कर दी सोई राजाके प्रेममय साहस को देख भगवान खुश हो गये और अरजुनसे कहा देखा मेरे भक्तोंके प्रेमको कितना बड़ा सत्य रूपी उपकार का प्रेम बढ़ा हुआ है। अर्जुन लज्जित हो गया। अब आज-कल्ह के धनी पुरुष उपकार को कुछ सौभाग्य रूप नहीं मान रहे हैं। अब साधूजी को भोजन कराने को राजा ले गया सोई वंसी वालेने कहा राजन पांच आसन डालो राजा बोला महाराज आप भोजन करो कि नहीं राजन पांच आसन डालो राजा कहने लगा कि महाराज पांच आसन कोन के लिये कि दो हमारे और तीन तुम्हारे महाराज आपकी झूंठन का प्रसाद लेंगे लेकिन साधूजीने नहीं मानी रानी भी वैठार ली राजा भी वैठार लिया और बोले पुत्रको बुलाओ राजा बोला महाराज पुत्र कहां है। जगत पिता वंशी वालेने कहा तुम राजन आवाज देव पुत्र का नाम लेकर कि आओ भोजन करें सोई जो राजाने आवाज दी पुत्रने आवाज दी कि काकाजी आया सोई झट्ट आय गया अबतो महलन में बड़ी खुशी होने लगी और खूब दान बटने लगे और राजाने कहा महाराज कलयुगमें ऐसे उत्तम कार्य्यके करनेमें रोमेंगे धनी मनुष्य और महाराज किसी बिडला से बनेगा यह अमूल्य अमृतमय कार्य्य क्योंकि भाग्यहीन पुरुष पैदा होयगे और यह कार्य्य बड़ा सौभाग्य शाली आपको खुश करने वाला है सो प्रभो मंदभागी पुरुषों को हासिल होना असंभव हो जायगा अगर लक्ष्मी प्राप्त हो जाने वाला मनुष्य अपने को भाग्यशाली मानने लगे तो उनका ख्याल मिथ्या है। क्योंकि ऐसा कहा भी है।

सुत दारा और लक्ष्मी पापी हूं के होय।

संत मिलन और हर भजन तुलसी दुर्लभ दोय ॥

अब इस इतिहासमें गोर करने लायक बात यह है। कि राजा के कावूके बाहर बात थी क्योंकि संतान पर पितासे ज्यादा हक माता का है। लेकिन अपने दरवाजे से अतिथी का निरास जाना असम्भव समझ कर और अपने वचनों का पालन न होना असम्भव समझ कर वड़ी से वड़ी वस्तू प्यारी संसार में पुत्र को माना है। तिसको भी हाथसे चीर कर त्याग कर देना सम्भव समझा लेकिन यह दो वातें पुत्र से भी प्यारी समझ कर न जानें दी अरे मूर्खमन तेरे को लज्जा नहीं आती है। कि दिन रात इस जवान से झूंठ का मज़ा चख रहा है। और दरवाजे पर अतिथी आये हुये का निरादर करके नित्यप्रति टालनेमें कुछ भी संकोच यानी भय नहीं खाता है। कि यह अधर्म नियमके विरुध नहीं करना चाहिये यह कर्तव्य विपत्ती का देनेवाला है। और तेरे सरीके जीवों की दशा वंसीवाला कर्म के अनुसार दिखा रहा है तिसपर भी नहीं चेतता है। यानी लक्ष्मी पाते हुये ऐसा ख्याल अनुचित पर डटा हुआ है। निगाह कर कि जो रास्तामें गंगा किनारे जीव दुखी पैसा मांगने वाले पड़े हैं, उनकी भी यही दशा थी जैसी तेरी है। सो रास्ता में नोटिस तोर पर तेरे हो देखने को वैठारे हैं। और फिर भूकम्पने भी चेताया है, कि मेरा मेरा कर रहा हैं और द्रव्य को उपकारमें खर्चा नहीं करता हैं सो यहां तेरा कोन है रोक ले तेरा है तो लेकिन यह मूर्ख मन नहीं चेतता है कि विना वंसीवारे के खुश करे वगैर तेरा आदर यहां न वहां राधेश्यामने कहा है।

रोवेगा पछतावेगा जो चोपाये जोंन में डारी।

मोह फोड़ कर ज्ञानी वनजा क्यों वनता है अनारी ॥

१६ गोपाल भाई साहव एक छोटा सा जानवर जिसको मक्खी कहते हैं। उस जगत पिता के सवाल को कैसा हल कर रही है कि ऐसा

अमृतमय उपकार पुरूष से नहीं बनेगा कि साक्षात अमृत बनाय कर मनुष्य की जरूरत को रफा करती है। कितना भारी परिश्रम उठाती हैं कि अच्छी २ सुगन्धित बनास पत्तियोंसे और अच्छी २ फुलवाड़ियों से यानी सुगन्धी अमृतमय मदको चूसकर लाती हैं। जो पुष्प उत्तम सुगन्ध वाला होता है। उसीसे अपना प्रेम करती हैं, और रोगी पुरुषोंकी जरूरत रफा होनेके लिये मधु अमृत तुल्य बना कर तय्यार करती हैं। उस परम पिताके सवक दिये हुये को कैसा चतुरई और इलमदारी से सिद्ध करती हैं। शरीर और समय और सम्पति उपकार ही कार्य्य में खर्च करती हैं। न जाने इस जीवको कौन सी उत्तम योनी मिलेगी देखो ऐसे जानवर भी तो उत्तम कार्य्य कर रहे हैं। आयन्दा को उत्तम योनी पाने को फिक्रमें अफसोस मनुष्य योनी को बुद्धमान बनाया है। लेकिन मनुष्य तो इतने छोटे जानवरकी बुद्धी का मुकाबला भी नहीं कर रहा है। क्योंकि मनुष्य अपना शरीर व समय व सम्पति उपकार कार्य्य में लगाना ना मुनासिब समझ रहा है। अपने खाने पहरने मोटर गाड़ीमें बैठने ठेटर सिनेमा देखने ईंट पत्थरोंमें चिनाय देना इन्हीं कार्य्यों में संपत खर्च करना मुनासिब समझ रहा है।

उपकार कार्य्य को कुछ भी कार्य्य नहीं समझ रहा है। सो मनुष्य ऐसा पछतावेगा कब जब लक्ष्मीजी त्याग जायगी कि हाय तुमने संसारमें लाभ हासिल कुछ भी नहीं किया मनुष्य योनी पाय कर भी देखो किसी कविने कहा है।

सुख दुःख बहुत पिता अरु माता; और सकल संसार मिलै।
ऐसी उत्तम योनी पदार्थ, फिर नहिं बारम्बार मिलै।

जिन पुरुषों को विवेक नहीं है वो पुरुष इसके महत्त्व को कैसे जान सकता है क्योंकि उनको सतसंग भी नहीं हुआ जो संसारमें सबसे उच्च श्रेणी का वस्तु है। पारस समान लोहा सद्रष्ट वृती को सुवरण

सद्भ्रष्ट वृत्ती बनाय देता है।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अङ्ग।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग।

(८) सबसे बड़ा महत्व अधिकार शक्ती ईश्वरने देवियोंको प्रदान किया है।

१७ राधेश्याम भाई साहब जिस वखत समुद्र से लक्ष्मीजी निकली हैं। तो देवता और दैत्य सबही मोह समुद्र की लहरोंमें उछलने कूदने तड़फने लगे लेकिन जगत माता तो श्रीजगत पिता के ही योग्य थीं सो उन्हींके पास पहुंच गयी और सब तड़फते रह गये।

१८—गोपाल भाई साहब जिस वखत समुद्र से अमृत का घड़ा निकला है तो उस घड़ा को दैत्योंने अपने काबू में कर लिया और आपसमें झगड़ा करने लगे जब जगत पिताने देखा कि यह बात तो बड़ी असम्भव हो गई अगर यह दैत्य पी गये तो यह अमर हो जायगे और देवता और संसारी मनुष्यों को बड़ा कष्ट पहुचायेंगे इनके काबू से अमृत निकाला जाय तो कोई वीर ऐसा नहीं है। कि जो इनसे घड़ा निकाल लावे अब जगत पिताने मोहनी रूप स्त्री ही पैदा कर दी कि इसी को ताकत है। कि इनके काबू से अमृत का घड़ा निकाल लावेगी सोई मोहनी रूप स्त्री को देखते ही सब दैत्य मोह समुद्र में गोता खाने लगे और सब दैत्य शक्त हीन हो गये और विचार का पता ही न रहा सोई स्त्री बोली कि तुम आपसमें क्यों लड़ रहे हो इसको पी क्यों नहीं जाते सोई दैत्योंने अमृत का घड़ा उस स्त्रीको फौरन सोंप दिया और बोले कि इसका इन्साफ तुम्हीं करो और जो कुछ तुम कर देवगी सोई हम सबको मंजूर होगा क्योंकि अब स्त्री की चाहके सामने अमृत विचारे की चाह किसको रही सबने त्याग दिया अब वो स्त्री कहने लगी कि हमारा फैसला

आपको मंजूर होयगा सोई सब बोल उठे कि हम सबको मंजूर होयगा अब उस स्त्रीने देवताओं को इशारा दिया और कहा कि तुम लोग पंगती से बैठ जावो देवता और दैत्य सोई दोनों की पंगती लग गई उसने देवताओं की तरफ से पिलाना शुरू कर दिया और दैत्य तो सब बैठे रहे राहू देवताओंके बीचमें आय घुसा थोड़ा सा अमृत पी गया भगवान ने देखा बड़ी असम्भव बात हो गई दैत्य अमृत पी गया यह संसारमें हमेशा देवताओं को और मनुष्यों को दुःख दिया करेगा सोई चक्रसुदर्शन को हुक्म दिया उसने फोरन सिर अलग कर दिया लेकिन धरही जीवित रहा क्योंकि अमृत पी चुका था सोई सबको हमेशा दुःख देता है। और सब अमृत देवताओं को पिलाय कर अन्तर ध्यान हो गई अब तो दैत्य लोग बड़े अपने को धरकारी देते हुये उस मोहनी सोहनी मूरत को याद करके झीकने लगे अब सवाल यह है कि स्त्री रूप देवी के सामने अमृत भी तुच्छ पदार्थ मान कर त्याग दिया यह उदाहरण शास्त्र साफ दिखा रहा है। कि देवी रूप स्त्री जीव ईश्वरने बड़ा कोमल का बनाया है और इसको बड़े अधिकार भी दिये हैं। इनके नेत्रोंके बाणों का मुकाबला बीरोंके बाड़ नहीं कर सकते हैं।

१६—राधेश्याम भाई साहब एक उदाहरण है, कि एक दैत्य बड़ा बलवान था जिसने सब देवता कारागार में डाल दिये थे और प्रजा भी बड़ा कष्ट पाती थी अब देवताओं की और प्रजा की करुणा भगवान के पास पहुंची और सब बड़े दुखी होकर भगवान वंसीवालेसे टेर कर रहे थे अब वंसीवारेने विचारा कि और तो कोई बीर ऐसा नहीं है कि इनको कष्ट से छुड़ावे क्योंकि दैत्य बहुत बड़ा बलधारी बर्दानी है सो यही बात विचारी कि एक मोहनी सरूप देवी इनको कष्ट से छुड़ाय देगी सोई जङ्गल में पैदा कर दी वहां दैत्य का कोई मुसाहिब जाय निकला और देख मोहनी रूप

सुन्दर को कहने लगा कि तू यहां क्यों खड़ी है। हमारे राजा के यहां चल उसने कहा तेरा राजा हमको जीत कर ले जाय सोई मुसाहिब बोला कि तूं बिचारी राजा से क्या लड़ेगी जिसने सबरे देवता कैद कर रक्खे हैं। और उसने जाय कर राजासे कह दिया कि महाराज एक स्त्री बड़ी खूब सूरत जंगलमें खड़ी हैं। आपके योग्य है, मैंने कहा उससे सो उसने यह जवाब दिया कि तेरा राजा जीत कर लेजाय सोई उस दैत्य ने हुक्म दिया कि जाओरे दस हजार आदमी पकड़ लावो अब जितना आदमी गया सो सब मोह रूपी समुद्रमें डूब गया फिर और भेजे इसी तरह जो जाय सोई मोह रूपी समुद्र में गोता खाने लग जाय जब आखिरमें दैत्य राज खुद गया सो उसके मोहमें वो भी फस गया उस स्त्रीने राजासे कहा कि मैं कहूंगी सो तुमको करना मंजूर होय तो मैं चल सकती हूं। वरना नहीं चल सकती हूं सोई दैत्य को इकरार करना पड़ा कि आप कहोगी सोई होयगा स्त्रीने कहा पहले तो सब देवताओं को छोड़ देव दैत्यने फौरन हुक्म दे दिया सब देवता छोड़ दिये जांय और रैयत को भी तकलीफ नहीं देना इसका भी इकरार करो सो भी इकरार कराय लिया अब आप बोली कि आप चलो मैं तुमसे पहले पहुंच जाऊंगी इतनेमें आप अन्तर ध्यान हो गई अब तो दैत्यराज फड़-फड़ाय कर हाथ मलते रह गया अब मनुष्यों को विचार करना चाहिये कि स्त्री रूप देवी कैसे कैसे भारी कार्य्य साधन करने वाली है और खुद जगत पिताने ही इस स्त्री रूप देवीसे कार्य्य साधन किये हैं। लेकिन मनुष्य इसके कर्त्तव्यों से आगाह न हो करके इसको हीरा रूप बेशकीमत का न समझता हुआ कांच समान समझ कर निरादर करके उसकी बेकदरी कर रहा है मनुष्य बड़ी भारी गलती पर है। और उनकी बुद्धी हीन ने देवियों को भी बुद्धी हीन बना दिया है।

२०—गोपाल भाई साहब देखिये छोटी अवस्था होते हुये भी कितने बड़े साहस का काम करती है। किसी राजाने शुयम्बर अपनी पुत्री का रचा तो संसार में नामी नामो राजा सबही तो बुलाये जाते हैं यानी पत्रका सबही के यहां तो जाती है। और सबही तरह के राजा महाराजारथी महारथी बड़े-बड़े वीर बड़े-बड़े तेजश्वरी आते हैं। एक छोटी अवस्था की कन्या के लाभ हासिल करने को बड़ी-बड़ी त्यारी से बड़ी टेमकी पावन्दी करते हुये और, बड़े-बड़े सामान सहित बल्कि यहां तक के सामान से आते हैं। किं अगर कोई मोका मार धार का ही पड़ गया तो हटेंगे नहीं चाहे जान की बाजी क्यों न लग जाय जङ्ग भी करनी पड़े तो भी नहीं हटेंगे जिनके यहां रानी पटरानी मौजूद हैं। तिसपर ख्वाहिश मन्द हैं। कन्या हासिल करनेके क्यों नहीं स्त्री रूप रत्न बड़ी कीमत का बनाया है ईश्वरने इसके कमाल भरे गुणों पर मनुष्य सर्वश्व लगाने को तय्यार रहता है। क्योंकि स्त्री रूप मोहिनी मीटे वचन बोलने वाली मन हरण सुन्दर नेत्र जिन नेत्रोंमें अमृत तुल्य स्वाद आनन्द देने वाला और उन्हीं नेत्रोंमें दूसरे पुरुष के वास्ते विषरूपी बांण भी रहते हैं। धन्य है रे कामनी एक मियानमें दो तलवार रखने वाली और जादू सद्दृष्टि शक्ती रखने वाली धन्य है और भोली भी कितनी है। कि पुरुष के विश्वास पर हर समय तय्यार रहती है, अब कमाल साहस की बात देखिये कि इतने वीरों का समुद्र रूपी समाज भरा हुआ और एक बाल अवस्था की कन्या अपने बाप महतारीके हुक्म की पावन्दी वे उजरीके साथ करते हुये उसमें कूद पड़ती है कितना बड़ा साहस धन्यवाद देने काबिल है। और अब उस बालक का दिमाग काबिल तारीफ के देखिये धीरजता की भी कमालता देखिये। कि सब समुद्र रूपी समाज को तैरती हुई जो वीर बाकुड़ा सबसे उत्तम होता है। उसीके गलेमें जैमाल

गेरती है। और उसीको अपने हृदय से सर्वस्व का मालिक बनाय लेती है। धन्य है उन ऐसी देवियोंको कि जिन्होंने अमोल शक्तीका कमाल कार्य्य किया है।

अब जो राजा लोग निरास हो गये जिनकी क्या दशा हो गयी है। कि बड़े लज्जित होते हुये अपने मुंहको छिपाते हुये नेत्रोंमें शर्माते हुये दिलको तड़फाते हुये और मोह रूपी समुद्रमें गोता खाते हुये बड़ी भारी बेकली काममें लाते हुये और अनेकों तरहके विचार विचारते हुये जाते हैं। कि महलोंमें क्या जवाब देंगे कि जान माल सभी नोछावर करके कन्या हासिल करने को आये थे सो बाजी हार चले और वो मृगनैंनी हासिल न हुई। क्यों न हो स्त्री रूप रत्न ईश्वरने ऐसा ही कीमत का बनाया है। लेकिन मामूली पुरुष इस हीरा की कीमत को क्या जान सकते हैं, अब सवोल यह है। कि भारी कीमत के साथ चाह करने का कारण और भी है। क्षत्रीं की कन्या रूप देवी न जाने कैसे जौहर की क्षत्रानी रण सूर निकल आवे यदि पतीवृत धर्म के पालन करने वाली निकल आवे यदि रुपवन्त मीठी वाणी बोलने वाली दिल को प्रसन्न करने वाली निकल आवे यदि अमोल कीमत भरा लाल पैदा करने वाली निकल आवे क्योंकि यह खांन रत्नों से भरी है। इन्हीं गुणोंके कारण से जान माल लगाते थे। अब देवियों बड़े अफसोस की बात है। कि यह गुण रूपी भूषण ईश्वरके दिये हुये तुम देवियोंने सब त्याग दिये और अवगुण धारी बन बैठी हो सो देवियो समझो निगाह करो गुणों को। भला यहां सुवंरण के भूषणों की कुछ ऊपमा है?

२१ राधेश्याम भाई साहब स्त्री रूप देवी को बड़ी शान शक्ती जगत पिताने दी है। कि इस देवीके गुण ही सुनकर मनुष्य उसकी चाहमें पागल सरूप बन गया हैं। और अगर फोटू निगाहमें निकल गया तो और भारी सिड़ी बन गया है। ऐसे इतिहास बहुत

से गुजर भी चुके हैं। और ऐसे भी इतिहास वहुत सुने और देखे होंयगे और मौजूदा हालतमें भी जारी हैं। कि जिस मनुष्य को उस मृगनैनी नेत्रवाली ने अपने नेत्रोंसे प्रेम मय बांण मार दिये हैं। तो फिर क्या उस मनुष्य के लिये संसारमें इससे वढ़िया वस्तू है। कि जो उस मनुष्य को वहलाय सके और उस मृगनैनीके प्रेम भरे नेत्रोंके वाण लगे हुये से वेजार हुये मरीज की कोई तवीव चिकित्सा भी कर सकता है। यदि कोई वैद्य उस मरीजको आराम पहुंचाने में भी समर्थ वान है। यदि कोई डाक्टर इस वाण खाये हुये दिल के घाव को आराम कर सकता है। कभी नहीं असम्भव है। क्या कोई वीर संसार में इन वाणों का मुकावला कर सकता है। कि विना स्पर्श किये वाण घायल कर दें कभी नहीं क्या विजली और चुम्बक की सकती नहीं शरमावेगी ऐसे देवीं के नेत्रोंकी जादू सद्रष्ट विलक्षणता देख कर क्यों न हो धन्य है, देवियो तुम्हारे ऐसे ही शक्तीधारी गुणों से जाहिर होता है। कि तुमको जगत पिताने वड़े अमूल्य भूषण वखशे हैं लेकिन वड़े शोकके साथ लिखना पड़ता है। कि वो मसल हो गई है कि कोई छोटा बच्चा सिंहनी का भेडों में रहने लगा उनके संग रहने से अपने सव कर्त्तव्योंको भूल गया सो हमारी देवियां विचारी सतसंग वस अमृत तुल्य वड़े अमूल्य कीमतके गुणोंको त्याग कर विषरूपी औगुणोंके स्वादमें पड़ गयी हैं। सो देवियों अव तक तुम भूलमें रहीं तुमको चेताने वाला उपदेशक नहीं मिला जिस कारण तुमसे जो कुछ अनुचित कार्य्य वन गया शोभा रहित सो जिसकी जगत पितासे माफी लेकर असली नियमों का पालन करना सीखो अपने को और अपने परवार को और संसार को सुख रूप शोभामय वनाओ।

२२ गोपाल भाई साहव स्त्रीके पतीवृत धर्म का हाल तो संसार

में विदित हो है। कि गृहस्त आश्रम में रहते हुये मालिक और बालक और घरके कुटुम्ब परवार को खुश करते हुये और सब गृहस्त के कार्य्य वा कायदा करते हुये भी ऐसा वृतका पालन करतो है। कि संसार समुद्र से अनूठ र्या यश हासिल कर लेती हैं. अगर पती निकम्मा यानी बदचलन भी क्यों न हो तिसपर भी उन्हींका स्मरण करने पर श्रीजगत पिता को खुश कर लेती हैं। और बड़े भारी सौभाग्य की यह बात गुजर भी चुकी है. कि जिसको सब संसार ने सुन रक्खा है. कि पती निरभाग्य बदचलन को उसी की शर्कीने जगत पिताके साक्षात दर्शन कराये हैं। इससे भी विदित होता है। कि जगत पिता की कृपा द्रष्टी स्त्री रुप देवी पर ज्यादा है कि मनुष्य हजारों वर्ष तपस्या करने वालेको भी साक्षात दर्शन नहीं हुये हैं सो स्त्री रुप देवी के वृतका महत्व इतना बड़ा माना हैं। कि उसके उपर इतनी बड़ी कृपा है कि इतना भ्रष्ट हुआ पती जिसको आप खुद दर्शन दिये हैं। उस पतीवृत्ता सौभाग्यवान स्त्रीके पतीके लेजाने में काल भी असमर्थ होता हैं और यमराज भी हिम्मत हारता है भला कोई पुरुष भी ऐसी ताकत रखता है। गृहस्थ आश्रम में रहते हुये कि अपनी स्त्री गुनाह धारी को यह महत्व हासिल करा सके कभी नहीं मनुष्य की ताकत से बाहर बात है। मनुष्य ऐसी ताकत कहां से लावे कि जो स्त्री रुप देवियों को जगत पिताने बख्शी है लेकिन इतनी ताकत तो मनुष्य रखता है, कि ऐसी महत्व धारी स्त्री से कोई गुनाह बन जाय तिसको माफी दे देना सो भी नहीं भला स्त्री पुरुष के कर्त्तव्य मिलान किये जाय तो मनुष्य को लज्जित करते है यानी सहन शक्ती इन्साफ दया गुण अफसोस की बात है!

बड़ी भाग्य शाली है देवी जिनकी कन्या कुवारी ॥१॥
ईश्वरी भूषण धारे देवी जगत पती सुखकारी।

पतीवृत्त नियम का बड़ा महत्व है दुनियां खुश हो भारी ॥२॥
साक्षात ईश्वरके दर्शन पती होय सुखकारी।
लाखों देवियां कलकत्ता में कुछ भी नहीं विचारी ॥३॥
ईश्वरी भूषण की कदर न कीनी कीमत जिनकी भारी।
असली भूषण की रक्षा कर लेव कीरत होय तुम्हारी ॥४॥
नकली आभूषण असली को लूटें मर्जी रही तुम्हारी।
डिगे न संभु सरासनु कैसें, कामी वचन सती मन जैसे।
देवियो संसार को सुगन्धित वनाना आपके ही सौभाग्य के अधिकारमें है।

२३ राधेश्याम भाई साहब सदैवसे स्त्री पुरुष दोनोंका हक वरावरी का ही रहा है। और कायदा से भी यही चाहिये अगर स्त्री गलती पर है तो पुरुषने उपदेश दुवारा समझाय दिया और अगर पुरुष गलत रास्ता पर जाय रहा है। तो स्त्रीने उपदेस दुवारा समझाय दिया क्योंकि दोनों का हक वरावर है। सुखमें सुखका और दुःखमें दुःखका लेकिन पुरुष अपने अहङ्कार वस अथवा अग्यानता वस अपनी दोस्त रूपी स्त्री हितकारनी की वातको न मानते हुये डूब जाय पुरुष की कितनी वड़ी मूर्खता है। बल्कि मनुष्य मात्र को लाजिम है, कि हर एक कार्य्य में स्त्रीकी सम्मती लेकर कार्य्य करे क्योंकि वरावरके दुःख सहन करने की हकदार है। स्त्री रूप देवियोंने अपने अनेकों बड़े वड़े वलवान पतियोंको उपदेस रूप से समझाया लेकिन उन्होंने नहीं माना तो उन पुरुषों को धोखा ही हुआ यानी वाली की स्त्री ताराने वहुत समझाया वाली को कि पती मानो धीरज धरो देखो आपका भाई किसी वलवान के सहारे पर आपसे लड़ने आया है। लेकिन अहङ्कार वस नहीं मानी तो पछताना ही पड़ा और इसी तरह रावण की स्त्री मन्दोदरीने भी रावण को वहुत समझाया है। कि पती आप सब कुटुम्ब का

नाश करानेकी चेष्टा मत करो वो जगत पती हैं, लेकिन अहङ्कार वस रावणने भी एक, नहीं मानी सेस में वही हुआ अहङ्कारी पुरुष में यह तो खास कुलक्षण होता है कि अपनी अनुचित को उचित ही मानता है और दूसरे की उचित को अनुचित मानता है लेकिन नम्रता बात अमोल है इसका सौभाग्य तो कोई सज्जन ही प्राप्त करता है। कोई सज्जन स्त्री के उपदेश मानने वाले को कैसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

२४—गोपाल भाई साहब यह उदाहरण स्त्री रूप देवी का बड़ा रोचक मय हैगा कि जिस वक्त गुसाई तुलसीदास को कामदेव गिरफ्तार करके ले गया है। उनकी स्त्री रूप देवीके पास कुसमय कुरस्ता से होकर और स्त्रीने देखा कि पती हमारे कामदेव की गिरफ्तारी में फस गये हैं। और लज्जा का आसन भी त्याग रखा है। और मेरे को भी गिरफ्तार करने को तय्यार है, जब ऐसा हाल स्त्रीने देखा कि यह कामदेव बहुत अनुचित कार्य्य करने पर सवार हो रहा है, तब तो स्त्रीने अपने सौभाग्य की परवाह न करते हुये और अपने गृहस्त आश्रमके भी सुख पर्दार्थों को त्यागते हुये कामदेव का ऐसा तृस्कार किया कि कामदेव निरास हो गया और स्त्रीने अपने लज्जाके आसन को नहिं जाने दिया और कामदेव की गिरफ्तारी में नहीं आई और अपने पती को ऐसा उपदेश दिया कि कामदेवसे उम्र भर के लिये छुड़ाय दिया और स्त्रीके उपदेश से गुसाई तुलसीदासजी इधर झुक पड़े कि महाराज श्रीरामचन्द्र से डोर लगाय दी दर्शनों का सौभाग्य हासिल कर लिया उसी स्त्रीके उपदेश की बदोलत अमृत तुल्य यश संसार में विदित है। कि ऐसी मैली आत्मा पती को शुद्ध पवित्र भक्ती रूप बनाय दी बड़े धन्यवाद के योग्य उपदेश दिया यदि अपना सर्व संसारी सुख पती के लाभ हित त्याग दिया सच है किसीने कहा है। चाखे चाहे प्रेम रस, तो जोखम क्यों न सहै, संसार

में लाभ हासिल करने वाला जीव त्याग ही से हासिल कर सकता है।

२५—राधेश्याम भाई साहब पुरुष का नेक वख्त स्त्रीसे विछोहा हो जाना संसार से सर्वसुक्खों का नष्ट हो जाना है। मनुष्य की ऐसी दशा हो जाती है। कि कोई कार्यमें मन नहीं लगता है यानी सतपात्र स्त्री का विछोहा हो जाना पुरुष के लिये छोटी तकलीफ नहीं है। क्योंकि उस पुरुष को घर दुकान सब ही से अरुची हो जाती है। यानी हर समय उसकी मुहब्बत का जोश तंग करता है, यानी सोते वक्त उसका वृह आराम से नहीं सोने देगा। क्या गृहस्थमें स्त्री वगैर किसी भी प्रकारका आराम मिल सकता है, यदि कितनी भी दौलत हो उस दुःखको भुला नहीं सकती है अथवा जिस घरमें घरके सम्हालने वाली मालिकनी नहीं है, तो क्या वो घर पुरुषके रहने योग्य है। यदि जिस घरमें अच्छे पदार्थ बनाय कर मोहब्बत से खिलाने वाली नहीं है। तो वो घर क्या प्यारा लग सकता है। यदि जिस घरमें मङ्गल गान करने वाली मृगनेनी नहीं है। अमृतमय मीठे स्वरसे बोलने वाली तो उस घरमें पुरुष क्या प्रसन्नता हासिल कर सकता है। अथवा जिस घरमें गोपाल सरीके पुत्र देवी सरूप कन्या पैदा करने वाली नहीं है। जो कि पुरुषके दिलको खुश करने वाले हैं। तो उस घरमें पुरुष प्रसन्न रह सकता है, कभी नहीं क्या स्त्री रूप देवी वगैर यह आराम पहुंचाने की कोई दूसरा भी शक्ती रखता है, क्या ऐसे गुणधारी देवियोंको कोई निरभाग्य पुरुष पाय सकता है। अगर ऐसी गुणधारी देवी जिस पुरुषको हासिल हो गई उस पुरुषके भाग्यको छोटा क्या समझा जायगा धन्य है देवियो तुमें जगत पिताने अमूल्य रत्न पैदा किया है। और सब संसार का आनन्द तुम्हारे ही हाथमें दिया है। और जिस देवीने ऐसे अमृतमय गुण विसार दिये है। उस देवी की बड़ी भारी गलती है, और वो देवी संसारमें निरभाग्य निन्द्रा योग्य है।

२६—गोपाल भाई साहब एक बड़ी भारी बे उजरी बे हद गम्भीरता

मोहका त्याग देवियों का देखिये कि बाप महतारी नाऊ-बारी घरके कुटुम्ब के लोग कोई भी किसी जाइज नाजाइज सम्भव असम्भव घर सम्बन्ध कर दें उसमें कोई देवी उजर नहीं करती हैं। यानी लड़का किसी रङ्ग का हो आप किसी रङ्गकी हो लड़का पढ़ा हो कुपढ़ा हो लड़का बदसूरत हो आप सुन्दरहो लड़का ना बालक हो आप तरुण हो अजी लड़का मूछन वाला हो आप ना बालक हो अजी बूढ़ा हो लेकिन कुछ उजरका काम नहीं निरधन हो धनी हो- अपने मति मतांत्र का हो दूसरे मतांत्र का हो अजी पास हो दूर हो लङ्काके छोर पर क्यों न हो उजर का काम ही नहीं यह क्या बात है यह ईश्वरी कानून यानी शास्त्र की कानून महान पुरुषों का कथन उसकी पाबन्दी कर रही हैं अजी बाप महतारी के इसनेह अथवा भाई बहन के इसनेह अथवा सहेलियों के इसनेह अथवा खेल खिलोनों के इसनेह इतने इसने हों को बिसार देना कितने बड़े गम्भीरता की बात है। किसी पुरुष की ताकत है, अब पती के यहां पहुंची कि उसके यहां का रिवाज-कायदा बोली पहरना ओढ़ना मत मतांत्र सब धारण कर लेना बापके यहां का सब त्याग देना देखो अब ऐसी देवियों के ऊपर कोई मनुष्य कटाक्ष करे अथवा औगुण धारी कायम करे तो कितने-अपराध की बात है ऐसी स्त्री रूप देवी को तकलीफ जो पुरुष देवेगा भला वो पुरुष दोनों लोकों का सुख क्यों न खो बैठेगा। बल्कि न्याय के बदले मनुष्य अन्याय करता है तिसको भी सहन करने को त्यार रहती है। माता पिता भी अपना सुख समझते हुये कुये में डाल देते हैं। तिसपर भी उजर करना नहीं जानतीं हैं धन्य है देवियों तुम्हारे को कि तुम्हारी उत्तम वृत्ती से पुरुष को सरमिंदा सर्वदा रहना होगा लेकिन देवियों तुम इतनी गलती कर रही हो कि मणी रूप भूषण को तुमने त्याग कर कांच रूपी भूषण धारण कर लिया है; अमृत को त्याग विषको पी

रही हो तुमको तो बड़ा भारी सुग्यानी जीव बनाया है। जगत पिताने तिसपर तुम ऐसी गलतीमें पड़ गई हो फोरन समल जावो कुछ भी कठिनाई तुमको अमृत रूपी कार्य्य हासिल करनेमें नहीं होगी।

२७ राधेश्याम भाई साहब ऐसी प्रथा बिगड़ रही है, कि निरधन भाई लाचारी अमर अपने धर्म जाने की परवाह न करते हुये अपनी देवी सरूप कन्या जो जगत में उज्याले रूप है। जिस पर रुपया लेकर अपना भला विचारते हैं। यह कार्य्य संसारमें सुख देने वाला है। यह कार्य्य तो महा दुःखमय कष्ट पहुचाने वाला है। और दोनों लोकों से पतिथ कर देने वाला है और फिर उसको दान रूप से दान करते हैं भला जब कोमत ले चुके फिर दान करने के अधिकारी तुम कहां रहे यह बड़ा कष्ट में पड़ने वाला कार्य्य पुरुष कर रहे हैं।

अब दूसरी बात भी अनुचित यह चालू ही है अहंकार रूपसे कि जिस पुरुषके लड़काकी चाह होती है। किसी कारण बस वो भी पुरुष द्रव्य की चाहना लड़की वालेसे करता है किसीने लड़की ऊपर द्रव्य ठहरा कर लिया किसीने लड़के ऊपर द्रव्य ठहरा कर लिया यह दोनों ही प्रथा खोटी हैं।

और सुनिये संसार में धर्म रत्न सबसे बड़ी प्यारी और कीमत की वस्तु है, जिसको खोय देनेमें मनुष्य कुछ भी विचार नहीं करता है अफसोस।

२८—गोपाल भाई साहब एक प्रथा जारी हुई है अहङ्कारी पुरुषोंकी निगाह से कि धनी पुरुष अपने लड़के को सोना सद्रष्ट मानता है। और दूसरे भाई की लड़की को पीतल सद्रष्ट मानता है इतना डिफरेन्स अफसोस इन पुरुषोंके बुद्धी विचार कहां चले गये हैं। ऐसे ख्याल को काममें लाने वाले पुरूषों की बड़ी भारी गलती है क्योंकि स्त्रीलिङ्ग देवता रूपकी माताओंके चरण ही पूजे जाते हैं। सबही मनुष्य जानते हैं। यही दसा इस देवी रूप कन्या की है। कि जो

देवी शक्ती धारी जगत पिता का प्यार लिये हुये वड़ी दयामय मनुष्य के अनेको अवगुण पर रहम करने वाली हैं। जिनके भी चरण पूजे जाते हैं। कि जिनके शरीर से पैदा हुई हैं, और सव कुटुम्ब परवार सहित चरणही पूजते हैं। और हाथ भी जोड़ते हैं। और वड़ी भारी लाभ दायक इच्छाकी प्रेरणाभी हाथ जोर कर करते हैं कि देवी दोनोंकुलोंको इस संसार समुद्रमें मोती रूप शोभामय वनाय देना तुम्हारे ही हाथमें है। क्योंकि जगत पिता ने तुमको वड़े सौभाग्य पालन करन हारी शक्ती दी है जिस कारन देवी तुमसे प्रार्थना रूप से विनय करते हैं कि इस संसार समुद्रसे चाहोगी तो चद्रमा सरीकी शीतलता धारण करके श्रीसूर्य्यनारायण सरीका तेज हासिल करके श्रीजगत पिता के पहनाये हुये भूषण धारण किये हुये उनकी रक्षा कर लेवगी तो और कलयुगी भूषण सोने चांदी के अंत्यन्त भयकारी धर्म के लुटेरोंसे प्रीत नहीं पालोगी तो इस जगत में अपने दोनों कुलों को यश रूपी शोभा का पात्र जरूर वनाय देवगी कितने वड़े महिमा धारी हासिल करने वाले विनीत रुप वचन सव कहते हैं। और अधिकारिणी भी वड़े से वड़े महत्व की है। क्योंकि पुरुष से भी इकरार कराती है, कि यह सात वचन मेरेको आप दें जव मैं आपके वाये अंग स्त्री रूपमें आऊं शास्त्रकी आज्ञा अनुसार आपके मेरे वीच यह देवता साक्षी हैं। कि आप अपने वचनों का पालन करनेमें असमर्थ नहीं होना अव विचार करने योग्य वात है। कि जिस जीव के यह लक्षण हैं वो जीव क्या छोटों की गणनामें छोटी निगाहके देखने योग्य हैं। कि जिसके माता पिता इतने भारी महत्व के प्राप्ती करनेकी प्रेरणा करते हैं, तो क्या इस जीवको छोटा माना जायगा कि जो पतीसे पहले इकरार कराकर अर्धाङ्गनी वनती है तो क्या यह छोटों का सवाल है और छोटों का हक है ऐसा सवाल करनेका अव उसके वड़प्पन की गम्भीरता भरी वात और भी धन्यवाद के काविल गुजर रही है कि

पुरुष अपने वचनों का इतने पर भी पालन नहीं करता है। और वो देवी इसका जिक्र भी नहीं लाती है क्योंकि उनकी गम्भीरता है। तिसपर भी मनुष्य कहता है। कि स्त्री क्षुद्र सुभाव की होती है अगर मनुष्य अपने विचारों से जैसा नाजाइज असम्भव वर्तावा स्त्रीके साथ में करता है अगर स्त्री क्षुद्र ख्याल पर सवार हो जाय तो मनुष्य किसी काम का न रहे और अगर ईश्वरी नियम का पालन करने लगे तो पुरुष के दोनों लोक बनाय दे और संसार में शोभा बखेर दे।

२९—राधेश्याम भाई साहब एक कानपुर का किस्सा है कि एक मुनीम अपने लड़के को लखनऊ से ब्याह कर लाये थे सो रुपया की तङ्गीके कारण घरमें कहने लगे कि अब इस लड़के को हम पढ़ाय नहीं सकते हैं। क्योंकि खर्चा अब हमसे बरदास्त नहीं होगा घरमें कहने लगी कि जैसी तुम्हारी मर्जी सोई वहू सुन रही थी फौरन अपनी सासू से बोली कि सासूजी इनके पढ़नेका खर्चा मैं देऊंगी आप इनको पढ़ाओ भाईजी से कह दो इनके खर्चा की फिक्र न करें उसने वहू की कही हुई सब बात उसके सुसर से कह दी और लड़के को पढ़ने को बैठाल दिया और वहूने कसीदा काढ़ना शुरू किया सो जितना खर्चा पढ़ाई का लगा सो दिया और मालिक को हाथ खर्चा सब दिया लड़का वकील हो गया अब तो मोजमें रहने लगे उस वहूके सास ससुर दोनों खूब आशीर्वाद देते हुये गुजर गये। उनकी दुवासे धन सन्तान सब तरह का आनन्द हो गया। अब मेरे प्यारे भाइयो देखो स्त्रीके गुण का हाल और जो देवी अनुचित रास्ता पर चल रही है वो बड़ी निरभाग्य हैं। और निंद्रा योग्य हैं।

३०—गोपाल भाई साहब धनी पुरुष बड़ी भूलमें पड़ा है इसका कारण समझमें नहीं आता है। कि श्रीलक्ष्मीजी के होने पर भी जस रुपी अमृत का लाभ नहीं करता है जो वहां का बड़ा मददगार है और यहां भी सराहने योग्य बनाने वाला है। क्योंकि

श्रीलक्ष्मीजी काम धेनू कल्प वृक्ष यह उत्तम, रत्न महान उत्तम सिद्धी के देने वाले महान उत्तम पुरुषों को हासिल होते हैं। और वो पुरुष महान उत्तम ही कार्य्य का लाभ हासिल करते थे। अफसोस।

३१—राधेश्याम भाई साहब आपका ख्याल कहां हैं जो उत्तम पुरुष होते हैं। और उत्तम द्रव्य होता है। उनसे उत्तम हो कार्य्य बनते हैं। अगर लक्ष्मी किसी कारण वस प्राप्त हो गई है और भोग नहीं बदा है तो किस तरह भोग सकता है देखो दो भाई जिसमें एक भाई साधू प्रवृती का हुआ दूसरा भाई खोटे मार्गों का स्वाद चखने वाला हुआ और देखो एक ही खान से पत्थर आया एक तो ठाकुरजीके सिंहासन में लगा और एक टट्टीमें जाकर लगा अब इनके सौभाग्य में कितना डिफरेन्स हो गया सो इसी तरह बात निश्चय है। कि जो मनुष्य सौभाग्य प्राप्त योग्य है। और द्रव्य भी सत्यता से प्राप्त किया है तो अमृत समान कार्य्य अवश्य ही बनेंगे अगर जो मनुष्य दुर्भाग्य है। और द्रव्य भी असत्यता से हासिल किया हुआ है। तो ऐसे मनुष्य और द्रव्य से चोर डाकू वैश्या वगैरा वगैरा लाभ उठावेंगे देखो संसार में अनेकों धनी अपनी उम्रमें ही फले फूले और अपने कर्त्तव्यों से अपने ही सामने बगीचा को उजाड़ कर खाली हाथ रवाना हो गये और कोई कोई उत्तम बुद्धी के पुरुष यहां भी यश रुपी कार्य्य कर गये और वहां भी आदर पाने योग्य कर्त्तव्य कर गये हैं अब धनी पुरुष विचार बुद्धी से समझ लें कि कौन उत्तम कार्य्य है। उसी को हासिल करने की चेष्टा करें।

गर्भ करै क्यों मूर्ख रावण, क्षण भरमें मिट जावेगा।
मेघनाथ और कुम्भकरण, तेरे कुछ भी काम न आवेगा॥
तेरी सोनेकी लङ्का धरी रहै, फिर पीछे पछतावेगा॥
सर वह सरही नहीं, जिसमें नहीं सौदा तेरा।

दिल वह दिल ही नहीं, जिस दिलमें तेरी याद नहीं ॥
ऐ जवां नादान मन नाहक बिगाड़ो जिन्दगी।
तेरे कोई काम न आये फिर क्यों न छोड़े रिंदगी ॥
उन शरीफों का कलेजा मोम कर दे हे प्रभो।
सोचते दिन रात जो किसको सताना चाहिये ॥
धर्म की धज्जी उड़े ईमान चकना चूर हो।
ऐसे धन पर लानत लानत तुमको करना चाहिये ॥
मन राम को सुमर ले दिन बीता जा रहा है।
शुभ काज वेग ठानों परवाना आ रहा है ॥
निज काम क्रोध त्यागो निज नैन खोल ताको।
माया से दूर भागो संसार जा रहा है ॥
एक बस धन धर्म ही सच्चा सखा है अन्त का।
जोड़ इसमें प्रेम अपना नित नये सुख पायेगा ॥
बुढ़ापे की अवस्था में जो अपना व्याह रचाते हैं।
वह एक मासूम कन्या को मुसीबत में फसाते हैं ॥
मजे में आप तो जाकर चितामें लेट जाते हैं।
मगर ता जिन्दगी कन्या विचारी को रुलाते हैं ॥
धूर्त कपटी दगाबाजोंसे रहना पिया सम्मल करके।
पिया परदेशमें जाकर यह दुर्मत आही जाती है ॥

३२—गोपाल भाई साहब मनुष्य को तीन बात हर समय याद रखनी लाजिम है। वृद्ध अवस्था मृत्यू के वारण्ट की अपनेको कोन योनी मिलेगी क्योंकि संसार देख रहा है। जिसकी विवस्था फिर अपनी सम्भाल नहीं करना बड़ी गलती को बात है। क्योंकि इन बातों की याद रखने से अनुचित मार्ग से बचा रहेगा. वृद्ध अवस्था में मनुष्य असमर्थ हो जाता है। फिर कोई कान नहीं मानता है। मृत्यु हो जाने का टेम नहीं है अगर कालने अचानक आय पकड़ा तो फिर

कुछ नहीं हो सकता है। जिससे अच्छी हालतमें ही करता रहे। उस वखत के लिये न रूका रहे योनी की निगाह रखना इससे कहा है कि अपने कर्मों को तरफ मनुष्य गौर करता रहेगा कि अगर ऐसा करोगे तो नीच योनी में जरूर पटके जावोगे सो वचा रहेगा क्योंकि अच्छी योनीमें जन्म पाना खोटी योनी में जन्म पाना कर्म अनुस्वार मुन्नस्सर है। अगर हाला हाल कुछ करना चाहेगा तो वो जवाव देवेंगे कि अरे वुद्धिमान पुरुष अगर तेंने शास्त्र नहीं सुने अथवा सत पुरुषोंका सत संग भी नहीं किया अथवा लेख वालोंके लेखों पर भी विश्वास नहीं किया सो तेरी वड़ी भूल हुई लेकिन तेंने सुना तो जरूर ही होयगा कि रावण दुर्योधन आदि ऐसे वलंकारी वड़े वैभव वारे भी नहीं रहे सो तू उनसे भी ज्यादा अपनेको मान कर चुपचाप वैठा रहा।

३३—राधेश्याम भाई साहव योग वाशिष्टमें श्रीराम चन्द्रजीने कहा है कि मनुष्य जन्म वड़ा उत्तम है परन्तु जो अभागे हैं। उनको विषयोंके कारण आत्मपद को प्राप्ती नहीं होती है। जैसे चिन्ता मणि को प्राप्त कर उसकी कोमतको न जान कर निरादर करके खोय दे तो वो मनुष्य अभागे मूर्ख हैं।

मूर्ख याको समझें नहीं समझेंगे चतुर सुजान।
कहने वाला भली कहत है त्याग तुरत अभिमान॥

३४—गोपाल भाई साहव संसारमें मनुष्य अनेकों तरहके खेल-खेल रहा है। और अनेकों तरहके कर्त्तव्योंमें संपत शरीर समय को लगा रहा है लेकिन जिन्दगी की गोट रंग होने वाले कार्य्य पर निगाह किसी जीवकी शायद ही होवेगी कि हमारा उत्तम शिरोमणि योनीमें जन्म फिर होने ऐसा कर्त्तव्य करें हमारी निगाह में एक छोटा सा जीव जिसको मक्खी कहते हैं। सो इस फिक्र को लेकर गोट रंग होनेके कर्त्तव्य कर रही है कि अपना शरीर अपना संपती अपना समय उपकार ही कार्य्य में लगाय रही है। यह मक्खी स्त्रीलिंग है इसका

कर्त्तव्य पुरुष को लज्जित करता है क्योंकि एक भौंरा, साहब भी सुगन्धी के गरजू पुरुषलिंग हैं सो यह कुछ भी नहीं कर रहे इसका भी कर्त्तव्य पुरुष को लज्जित करता है। अब धर्म राय के यहां न जानें यह मक्खी क्या आदर पावेगी और यह मतलबी साहब भौंरा सरीके कैसा बड़ा निरादर पावेंगे।

वला एक दम न हो गाफिल यह दुनियां छोड़ जाना है।
वगीचा छांड़ कर तुमको यह मिट्टीमें समाना है॥
बदन नाजुक गुलों जैसा जो लेटे सेज फूलों पर।
यह होगा एक दिन मुर्दा धर अग्नीमें जलाना है॥
नवेली होयगा भाई न बेटा बाप ना माई।
बना फिरता है सौदाई अमल ना काम आना है।
फरिस्ते रोज करते हैं मुनादी चार खूंटों में॥
ऐ ऊंची हवेलियां वाले जहां को छोड़ जाना है।
प्यारे नजर कर देखलो पड़ी हैं हवेलियां खाली॥
गये सब छोड़ कर फानी दगा वाजों का बाना है।
गलत फेमी है यह तेरी नहीं आराम इस जगमें॥
मुसाफिर बे वतन हो तो कहा तेरा ठिकाना है।
तमाम रैन गफलतमें गुजारी चारपाई पर॥
गुजारे रोज खेलोंमें वृथा आयू गमाना है।
यह होगा सर बसर लेखा हसर के रोज ऐ गाफिल।
यह दोजक बीच अमलीसे तन अपना जलाना है॥

सूरज निकला बाजर खुले सुख दुःख के सौदे होने लगे।
जब दिन बीता जब रात भई कहीं रोनक है कहीं रोने लगे॥

* कवित्त *

कंटक गुलाब क्यो गरूर करै अपने मन,

हमें कंजु केतकी सुवासन के ढेरे हैं।
आदर सूं एक दिन आक पै आनन्द करें,
आदर बिन जांय कल्प तरु के न नेरे हैं।
मुरली मलिन्दनके कुल की मर्य्याद यही;
लुत्फ हीन पुष्पन पै फिरत न फेरे हैं।
तोसी तुच्छ बारी की न कुछ परवाह हमें,
भवबीच भँवरन कूं बाग बहु तेरे हैं।
बड़ो वृक्ष जानकें मलिन्द मड़रानौ आय,
दूर सें निहार बहुत चित्तमें चाह भयो।
पास आय फेरि पछितायो जिय अपने में,
सुमन समूह ना सुगन्ध कौ लहा भयौ।
मुरली कहत छाया न बैठिवे योग जाको,
पातहू निकाम और चित्त में दहा भयो।
आम औ अनारनते आठ गुनौ ऊंचो अरे,
बिना फल बांस एतौ बढ़ौ तौ कहा भयो।

* लावनी *

दयालू लाला श्रीराम उपकारी जीव भये हैं।
प्रीत लतासे उदारताके भण्डार खुले रहे हैं॥
महाराज क्रोध रहित बोले थे खुशवानी।
उनके कर्त्तव्य से विमुख रहे वे मूर्ख अग्यानी।
अब रोते हैं हजारों याद करें नर नारी।
आप साथ ले गये उपकारी शोभा सारी॥
कहें राधेश्याम कष्ट भोंगे जो गये हाथ खाली।
उपकारी जीव दोनों लोकोंमें खुशी रहे भारी॥

अगर मनुष्य अचेत हो गया तो इन उपकारियों से सबक ले सकता है। सुगन्धी पोधों से जो कि किसी तरह का उपकार करनेमें भय नहीं खाते हैं सर्प विच्छू भौंरा मक्खी मनुष्य सबकी यानी तृपती करनेको त्यार रहते हैं रास्ता चलने वालोंको भी खुश करते हैं फलोंके वृक्षोंसे कि कोई भी अपनी तृपती कर जावो हाथसे तोर कर ईंट पत्थरो से तोड़ कर डंडा से तोड़ कर पकड़ कर हिलाकर जिस तरह चाहो। अगर कुवा तालाव हैं जिनमें से कोई भी कितना भी जल भर ले जावो वह यह दहसत नहीं करते हैं कि जल निवट जायगा उनको यह भरोसा। है कि जिसने दिया है तो इसी लिये तो दिया है और निवटने पर वही और देवेगा।

मागना नहिं चाहिये यदि बेटाको भी बाप से।
गर बाप मागे बेटासे तो उसकी बड़ी भूल है॥
भाई से न मागे गर कैसी भी जरूरत हो।
मांगने से हो जाय सपूताई की धूल है॥
मांगनेमे छोटा प्रभू को भी बनना पड़ा।
लेकिन उनके मागनेमें था भारी उसूल है॥
मांगना न चहिये अपना कैसा हू मित्र हो।
प्यारा हो हितू हो गर तुम्हारे अनकूल है॥
देवताओं से भी गर मांगना चाहिये नहीं।
देवताओं की सेवा करना अपना फर्ज जरूल है।
कहैं राधेश्याम कर्त्तव्य बिन हासिल होय नहीं।
मांगना ही सार प्रभू के चर्णों की रज जरूल है॥
अब कृपा कीजिये श्रीपति कृष्ण मुरारी।
अग्यान में रह कर सोची नाहि विचारी॥
मेरे प्रभूजी दुशमन बन गया अहङ्कारी।
बुद्धी विचार से काम न लीना अक्ल गई मारी॥

इसी चूकसे दास विकल है माफ करो सारी।
काम क्रोध मोह लोभ से रहती तृष्णा भारी॥
चिरञ्जीलाल यों,कहें नाम हम राधेश्याम धारी
इन पांचों से बचो कामना त्याग देव सारी।

नोटिस।

मेरे प्यारे भाई व बहनों व कन्या सरूप देवियों आपको सूचना दी जाती है कि यह पुस्तक आपके लिये ही तय्यार की है बड़े सौभाग्य देने वाली यानी दुरगंध रूप कार्य्यके त्याग कराय देनेमें बड़ी तेज है और सुगन्धी रूप कार्य्यके उत्साहक बनानेमें बड़ी तेज है। यानी लोहा समान निकृष्ट वृत्ती को सुवरण समान उत्तम वृत्ती बनाय देनेमें पारस समान गुण रखती है यह पुस्तक जुम्मेदारी करती है कि एक बार मेरे को प्रेमके साथ विचार कर पढ़ सुन लेवेगा तो पुरूष व देवी को जन्मान जन्मके वास्ते सौभाग्य हासिल हो जायगा भला इस महत्व की तादाद है अगर इतने महत्व का लाभ देने वाली पुस्तक को जो मनुष्य अथवा देवियां अथवा धनी निर्धनी न हासिल करे तो उनके निर्भाग्य से पुस्तक लाचार है यह पुस्तक मामूली जोहर और मामूली कीमत की नहीं है लेकिन इसी लिहाज से इसकी मामूली कीमत रक्खी गई है कि जिसमें सब गरीब मनुष्य व देवी इसका लाभ हासिल कर सकेंगे इसमें वो बातें नजरमें आयेंगी कि कभी सुनी नहीं होयगी और देवियां अपने गुण सरूप को पढ़ कर खुश हो जायगी और फौरन तबियत को बदल देवेंगी मनुष्यको आठ बातों का निर्णय करके दिखाया है जो मनुष्यकी निगाह से बाहिर हैं।

लेखकः—चिरञ्जीलाल उर्फ राधेश्याम कलकत्ता।
ठि०—नं० २१ बांसतल्ला

[अषाढ़ सुदी १, सम्वत् १९९१]

❀ पद ❀

कृष्ण कृष्ण पुकार रे मन कृष्ण कृष्ण पुकार।
श्याम नाम ललाम सुमिरन हरन पीर अपार ॥
चेत अवसर जात पल छिन क्या है सोच विचार।
रे मन कृष्ण कृष्ण पुकार ॥

कृष्ण धरनी कृष्ण अंबर कृष्ण में संसार,
कुंज वनमें कृष्ण व्यापक कृष्ण प्राण अधार।
रे मन कृष्ण कृष्ण पुकार ॥

कृष्ण चंद्र मुकंद माधव रटत बारंबार,
भंवर जाल कराल जग से लगत नय्या पार।
रे मन कृष्ण कृष्ण पुकार ॥

छोड़ माया मोह मिथ्या स्वप्न सम संसार,
छड़िक सुख के हेतु प्राणी सार दीन विसार।
रे मन कृष्ण कृष्ण पुकार ॥

चरन सरन अनाथ बेकल तूही तारन हार,
पाहि २ दयालु गिरधर त्राहि २ मुरारि।
रे मन कृष्ण कृष्ण पुकार ॥

उपकार हित मोरद्धुज रोदास पुत्र चीर दीना,
उपकार हित विक्रमादत कष्ट सहा भारा है।
उपकार हित नरसी पैसा सब खवाय दीना
उपकार हित पिरभू बना रथका हांकनवारा है ॥
उपकार हित कलयुग में गान्धी सब त्याग दीना,
उपकार हित गान्धी को द्रव्य मिले भारा है ॥
कहैं राधेश्याम और कोई कर्तव्य न सहाय करेगा
उपकार ही दोनों लोकों में सहाय करनेवारा है ॥